मैसूर के आठवीं कक्षा के कन्नड़ भाषी छात्रों में हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों की पहचान का अध्ययन ।

IDENTIFICATION OF DEFECTS IN READING AND LISTENING SKILLS IN HINDI AMONG EIGHTH STANDARD KANNADA SPEAKING STUDENTS OF MYSORE.

डॉ.संजय कुमार सुमन
व्याख्याता - हिन्दी तथा प्रभारी हिन्दी प्रकोष्ठ
DR.SANJAY KUMAR SUMAN
LECTURER IN HINDI AND I/C HINDI CELL

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद)
मैसूर - ५७० ००६
REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION
(NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING)
MYSORE-570 006

2002

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद)
मैसूर - 570 006
तार : एजुकेशन फोन : 511411 & 514095
फाक्स : 0821 -515665

REGIONAL INSTITUTE OF EDUCATION
(National Council of Educational Research and Training)
MYSORE - 570 006
Grams : EDUCATION Phone : 511411 & 514095
Fax : 0821-515665

FOREWARD

This report is aimed at presenting a critical insight into the complexities of Hindi language teaching in the Kannada medium schools. This study has been carried out by Dr Sanjay Kumar Suman, Lecturer in Hindi, and it identifies some of the defects in Hindi Reading and Listening Skills among 8th Standard Kannada speaking students of schools in Mysore city, and suggests some remedies.

It is hoped that the teachers of Hindi in the region find it very useful in their own action research in Hindi Language Teaching. I congratulate Dr Suman on successful completion of the study on an important issue.

12 June 2002

(G Ravindra)
Principal
Regional Institute of Education (NCERT)
Mysore-570 006

भूमिका

अभाव, दुख, प्रदूषण और अशांति संपूर्ण विश्व की ही समस्याएँ है और ये समस्याएँ अज्ञानता के कारण और भी बढती जाती है । इसलिए, दुनिया के जिस किसी भी समाज में अज्ञानता जितनी ही अधिक है, वहाँ ये समस्याएँ उतनी ही अधिक है । भारत जैसे देश में जहाँ कि साक्षरता संतोषप्रद नही है, वहाँ इन समस्याओं के समाधान के लिए किए जा रहे प्रयासों से संतोष हासिल करना सचमुच में लोहे चने-चबाने का कार्य साबित हो सकता है । फिर भी किसी भी क्षेत्र में किए जानेवाले सुधारात्मक प्रयासों की सही दिशा के लिए किसी को भी किसी न किसी स्तर तक अवश्य सोचना चाहिए और अपनी क्षमता, कुशलता एवं योग्यतानुसार सुधारात्मक प्रयासों मे सकारात्मक योगदान देना चाहिए । यह समय की मांग भी है । विद्यालयी शिक्षा की प्रासंगिकता इसलिए भी है क्योंकि यह व्यापक स्तर पर शिक्षा व्यवस्था को बनाने और संचालित करने के कार्यो मे संबद्ध है । इसलिए विद्यालयी शिक्षा से जुडे हुए शिक्षकों, शोधकर्ताओं एवं अन्य शिक्षाकर्मियों का तो अहम दायित्व होता है कि वह शिक्षा के प्रसार - प्रचार में अपना यथा संभव योगदान दे । इसमें भी खासकर शिक्षकों का दायित्व तो और भी ज्यादा होता है, क्योंकि उनके सहयोग, सुझावों और कार्यों द्वारा ही सही और सुव्यवस्थित शिक्षा व्यवस्था तथा प्रक्रिया को कायम करना संभव होता है और परिणामस्वरूप शिक्षित, कुशल, सफल और विकसित व्यक्ति और समाज का आधार तैयार किया जाता है । इसलिए किसी भी विषय में सही शिक्षा के अभियान के प्रयाण की अनिवार्य आवश्यकता है, जिससे विभिन्न तरह के वैयक्तिक एवं सामूहिक अभावों, दुखों, प्रदूषणों और अशांति को दूर किया जाना भी संभव है ।

हम जानते हैं कि किसी भी तरह की शिक्षा क्यों न हो, उसमें भाषिक व्यवहार की अनिवार्य आवश्यकता होती है । इसलिए समाज के विकास की शुरूआत से ही भाषा के संस्कार, व्यवहार और विकास की प्रक्रिया पर ध्यान देने की परंपरा रही है । अतः विद्यालयी शिक्षाही नहीं बल्कि किसी भी प्रकार के ज्ञान के लिए शुद्ध, सही और समुचित भाषिक कार्यकुशलता की अनिवार्य आवश्यकता है । तभी तो भाषिक कार्य और व्यवहार की अकुशलता से ही दुनियाँ में सभ्य और असभ्य होने के मानदंड को निर्धारित करने की प्रथा का प्रचलन जारी है । थोड़े से त्रुटिपूर्ण भाषा प्रयोग और व्यवहार की वजह से ही कोई भी व्यक्ति, समूह, संस्था, समाज, राज्य और राष्ट्र तरह-तरह के तथ्यों, सत्यों, क्षेत्रों और वाद-विवादों के अभाव, दुख, प्रदूषण और अशांति से घिर सकता है । वर्तमान विश्व के वैज्ञानिक, भूमंडलीकृत, उदारीकृत और सूचना-तकनीकी से प्रभावित किसी भी समाज के लिए सही, शुद्ध और समुचित भाषिक व्यवहार कुशलता की और भी अधिक आवश्यकता है । आज के व्यक्तियों, समाजों, संस्थाओं,राज्यों और राष्ट्रों के बीच बढ रहे अभाव, दुख, प्रदूषण और अशांति की समस्या के समाधान में सही, शुद्ध और समुचित भाषा कुशलता की अनिवार्य आवश्यकता स्वयं सिद्ध है । अतः आज विद्यालयी शिक्षा द्वारा समुचित शिक्षा व्यवस्था को बनाने और बढाने के प्रयास के तहत ही सही और समुचित भाषिक शिक्षा की आवश्यकता हुई है । क्योंकि विद्यालयी शिक्षा से छात्रों में भाषिक कुशलता जैसे - सुनने, बोलने, पढने, लिखने और सोचने तथा मौखिक एवं दृश्य संप्रेषण करने के कौशलों का विकास तो संभव है ही साथ ही इससे उनके जीवन कौशल का विकास भी संभव है । इसी तरह जीवन में अभाव, दुख, प्रदूषण और अशांति को दूर करने के लिए इन भाषिक कौशलों का भी बहुत ही ज्यादा योगदान होता है । तभी तो हम

पाते हैं कि कमज़ोर भाषा पृष्ठभूमि रखनेवाले छात्र न केवल अपने विद्यालयी ज्ञान ग्रहण प्रक्रिया में अकुशल और कमज़ोर हो जाते हैं बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी वे कमज़ोर योग्यता प्रदर्शन करनेवाले बने रह जाते हैं । इसलिए मानव संसाधन योग्यता की उपयोगिता और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए भाषिक कौशल की त्रुटियों को पहचान कर उसे दूर करने का प्रावधान विद्यालयी शिक्षा का अनिवार्य उद्देश्य होना चाहिए तथा शिक्षक और शिक्षार्थी सहित शिक्षण संस्थानों के शैक्षणिक क्रिया-कलापों में इन त्रुटियों के अध्ययन-अध्यापन तथा उसके समाधान के विकल्पों की तलाश करनी चाहिए ।

प्रस्तुत अल्पावधि अध्ययन इसी दिशा में एक लघु प्रयास है, जिसमें मैसूर के विद्यालयों में पढ़नेवाले आठवी कक्षा के कन्नड भाषी छात्रों की हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों की पहचान करने का प्रयास है । इसमें अध्ययन अवधि सीमा के तहत मैसूर के चार विद्यालयों के लगभग एक सौ छात्रों के पठन और श्रवण परीक्षण के नमूने के सर्वेक्षण द्वारा प्राप्य त्रुटियों को ही अध्ययन का आधार बनाया गया है और उन त्रुटियों के कारणों की खोज सहित उसके समाधान के कुछ सुझावों को भी प्रस्तुत करने की कोशिश की गयी है ।

पाँच अध्यायों में विभाजित इस अध्ययन के प्रथम अध्याय में अध्ययन की रूपरेखा, समस्या का स्पष्टीकरण, अध्ययन की आवश्यकता और इसके उद्देश्यों सहित अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणों और तकनीकों पर चर्चा की गई है । द्वितीय अध्याय में हिन्दी और कन्नड भाषा के बीच भाषिक संरचनाओं में पायी जानेवाली समानता और असमानता पर संक्षेप में विचार किया गया है । तृतीय और चतुर्थ अध्याय में क्रमशः कन्नड भाषी छात्रों की हिन्दी पढने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों की पहचान पर

प्रकाश डाला गया है तथा पंचम अध्याय में कन्नड भाषी छात्रों की हिन्दी पढने और सुनने की त्रुटियों के कारणों और उसके समाधान हेतु कुछ महत्वपूर्ण सुझावों को प्रस्तुत करने की कोशिश है । अंतिम में उपसंहार द्वारा इस अध्ययन को समाप्त किया गया है ।

यह अध्ययन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की शाखा क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर के प्राचार्य, प्रो. जी.रवीन्द्रा, के निर्देश, सहायता और लगातार प्रोत्साहन के कारण ही संभव हो पाया । भोपाल के सैन्टर फॉर एक्सलेन्स इन हाईअर एजूकेशन के हिन्दी के प्रो. विजय बहादुर सिंह ने भी इस अध्ययन के लिए अध्येता को समुचित प्रोत्साहन और मार्गदर्शन दिया । इसलिए अध्ययन की अच्छाइयों के लिए सारा श्रेय उन्हीं को जाता है तथा अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांत में हिन्दी के टंकण की असुविधा से होनेवाली त्रुटियों एव अध्ययन की खमियों और कमियों की जिम्मेवारी पूरी तौर पर मेरी है । मैसूर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो.तिप्पेस्वामी, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के शिक्षा प्रभाग के रीडर डॉ. प्रेमलता शर्मा तथा डॉ. बी.डी.भट एव मैसूर के चारों विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, हिन्दी शिक्षकों और उन विद्यालयों में पढनेवाले आठवीं कक्षा के सभी छात्रों का भी मैं उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त करता हूँ । क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के बी.एस सी.एड की छात्रा सूश्री सरिता तेवतिया और सूश्री अनुशिखा ठाकुर को भी सर्वेक्षण एवं परीक्षण कार्यों में सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ । यह अध्ययन भाषिक त्रुटियों के द्वारा मानवीय व्यवहार कुशलता और मूल्यवत्ता को बढाने में सफल हो । मेरी यही कामना है ।

(डॉ.संजय कुमार सुमन)

PREFACE

Poverty, misery and turmoil are global problems. And these problems perpetuate due to ignorance. Therefore, everywhere in the world these problems are directly related to the level of ignorance that prevails in the concerned society. It is an uphill task in a country like India to satisfactorily address these problems as the literacy rate is far from being conducive. However, someone somewhere must contemplate towards solving these problems according to own capabilities, skills, and qualification. This is the need of the hour.

School Education is a very relevant area because it is extensively related, to the planning and function of the education system. Therefore all concerned with school education should contribute to the expansion and extension of education. The role of teachers becomes more crucial because it is with their cooperation, suggestions and effort, proper and organized education system may be established. Consequently, educated, successful and developed individuals and societies are groomed. As such there is a need for sustained movement towards educational efforts on various subjects. That will lead to the solution of poverty, misery and turmoils prevailing in our society. We know that any kind of education of any subject involves language abilities. Therefore, from the early years of social development language use and its values have been a strong tradition. And not only for school education but also for any knowledge endeavour, correct, proper and adequate linguistic abilities are of utmost necessity. In that way linguistic abilities have been a parameter for the civilized world. A little defect in language use brings in a number of problems for an individual, groups, societies or states related to the unrests and turmoils of facts, values, region and disputes. Therefore the language need is more felt in today's scientific, global, liberal and IT dominated society. The solution for a number of these problems related to poverty, misery and turmoils of today's world lies evidently in proper language use to a great extent. And it's through a proper school system the language learning can be efficiently managed. Therefore, development of linguistic efficiency in skills like listening, speaking, reading, writing, thinking and expression is emphasized in school education and it also enhances their life skills. To negotiate with poverty,

misery and turmoils in our life we need these linguistic skills because poor language ability background of the students not only make them weak in school but also make them weak in other fields of life. Therefore keeping in view the demands and utilities of Human Resource Development, the identification of defects in language skills and provision of remedial measures should be one of the prime objectives of our school education programmes. Further, researches into such defects and their alternative solutions should be one of the major activities of our educational institutions, teachers and learners. The present short term study is a small endeavour in that direction where identification of defects in Hindi listening and reading skills among VIII standard Kannada speaking students of schools in Mysore has been dealt with. During this study a sample of 100 students selected from 4 schools in Mysore was surveyed for their defects in Hindi Listening and Reading Skills as seen through specialized tests. Based on the results of the survey some possible causes and solutions for these identified defects have been put forward in this study.

Divided in five chapters, this report presents with the outline of the study, statement of the problem, its relevance and objectives, tools and techniques employed are in the first chapter. The second chapter gives a brief contrastive study of linguistic pattern in Hindi and Kannada. The defects in Hindi listening and Reading Skills of the students are described in the chapters 3rd and 4th respectively. The fifth chapter presents an analysis of the causes of the identified defects and provides suggestive solutions to such problems. The report ends with a concluding chapter summarizing the study.

I acknowledge greatly, NCERT, New Delhi for financial assistance to conduct this research study for completion of this work.

This study would not have been possible without the guidance, help and constant encouragement of Prof. G. Ravindra, Principal, RIE (NCERT), Mysore, and Prof. Vijay Bahadur Singh, Centre for Excellence in Higher Education, Bhopal has also helped me in conducting the study from time to time. I profoundly thank them. I also sincerely acknowledge the help of Prof Tippe Swamy, Chairman, Dept. of Studies in Hindi, University of Mysore and Dr. Premalata

Sharma & Dr. V.D.Bhat, Reader, Dept of Education, RIE, Mysore. These sincere thanks are due to the teachers and students of the schools without whom this study would not have been possible. I would also acknowledge my gratitude to the B.Sc.Ed. students Ms. Sarita Teotia and Anushikha Thakur who have helped in recording model tests for the students.

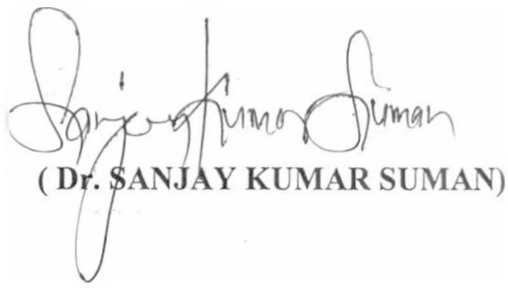

(Dr. SANJAY KUMAR SUMAN)

अनुक्रमणिका

मैसूर के आठवीं कक्षा के कन्नड़ भाषी छात्रों में हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों की पहचान का अध्ययन ।

पृष्ठ संख्या

आमुख (Foreword)

भूमिका i-vii

प्रथम अध्याय 1-12

प्रस्तुत अध्ययन की रूपरेखा 2

समस्या का स्पष्टीकरण 5

अध्ययन की आवश्यकता 7

अध्ययन के उद्देश्य 9

अध्ययन की सीमा.....10

प्रयुक्त उपकरण और तकनीक..... 11

द्वितीय अध्याय 13-28

हिन्दी और कन्नड़ भाषा में समानताएँ और असमानताएँ 14

ध्वनि व्यवस्था 14

रूप रचना..... 16

लिंग व्यवस्था..... 16

वचन व्यवस्था 17

पृष्ठ संख्या

कारक व्यवस्था 17

पुरुष..... 18

काल :अर्थ 18

वाच्य 19

शब्दरचना..... 19

वाक्य रचना..... 22

हिन्दी और कन्नड़ भाषा की स्वनिम व्यवस्था 22

तृतीय अध्याय 29-51

कन्नड़ भाषी छात्रों की हिन्दी पढ़ने में होनेवाली त्रुटियाँ 30

स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ 31

स्वर ध्वनियों को पढ़ने में होनेवाली उच्चारणगत त्रुटियाँ 32

दीर्घीकरण 32

ह्रस्वीकरण 35

स्वर-व्यत्यय और संध्यक्षर 37

स्वर अप्रयोग 39

संकीर्ण दोष..... 40

व्यंजन ध्वनियों को पढ़ने में होनेवाली उच्चारणगत त्रुटियाँ .. 40

अल्पप्राण - महाप्राण तथा सघोष-अघोष 40

पृष्ठ संख्या

मूर्धन्य - दंत्य 43

उष्मध्वनियाँ 45

उत्क्षिप्त - लुंठित 45

'ह' का प्रयोग 47

व्यंजन गुच्छ 47

संकीर्ण दोष 49

अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ..... 50

अनुनासिक - निरनुनासिक 50

अनुनासिक - नासिक्य 50

चतुर्थ अध्याय 52-86

कन्नड़ भाषी छात्रों की हिन्दी भाषा को सुनने में होनेवाली

त्रुटियाँ 53

स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों को सुनने में होनेवाली

त्रुटियाँ..... 57

स्वर ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ 57

दीर्घीकरण 57

ह्रस्वीकरण 60

स्वर - व्यत्यय 62

संध्यक्षर ध्वनियाँ और स्वर अप्रयोग 64

पृष्ठ संख्या

संकीर्ण दोष 66

व्यंजन ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ 67

अल्पप्राण - महाप्राण 68

अघोष - सघोष 70

उष्म ध्वनियाँ 72

उत्क्षिप्त - लुंठित 73

'ह' का प्रयोग 74

व्यंजन गुच्छ 75

संकीर्ण दोष 78

अनुनासिक ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ 80

अनुनासिक - निरनुनासिक 80

अनुनासिक - नासिक्य 82

वाक्य, गद्यांश, पद्यांश तथा अन्य भाषिक संरचना विशेष

को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ 83

वाक्य 84

गद्यांश 85

पद्यांश 85

अन्य भाषिक रचना 86

पृष्ठ संख्या

पंचम अध्याय 87-116

कन्नड़भाषी छात्रों में हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों के कारण और उसके समाधान के लिए सुझाव..... 88

त्रुटियों के कारण.....

मातृभाषा का प्रभाव..... 91

वातावरण और परिवेश की कमी..... 92

हिन्दी भाषा की ध्वनि संरचनाओं की जानकारी की कमी... 94

स्वाभाविक रुचि और लगाव का अभाव..... 96

ध्यान की एकाग्रता..... 101

सही और शुद्ध उच्चारण अभ्यास की कमी 102

हिन्दी भाषा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण 104

अज्ञानता, भ्रम, भूल और चूक 108

कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी 109

सही शिक्षण पद्धति का अभाव..... 110

कन्नड़ भाषी हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों में हिन्दी पढ़ने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों के समाधान के लिए सुझाव.... 111

छात्रों के लिए 111

शिक्षकों के लिए..... 113

पृष्ठ संख्या

पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए..... 115

शोधकर्ताओं के लिए..... 116

उपसंहार 117-119

परिशिष्ट

प्रश्नावली (छात्रों के लिए) 120

प्रश्नावली (शिक्षकों के लिए) 125

उच्चारण परीक्षण तालिका 129

रिकार्डेड मॉडेल कैसेट श्रवण परीक्षण तालिका संख्या - १ ... 137

रिकार्डेड मॉडेल कैसेट श्रवण परीक्षण तालिका संख्या - २ ... 141

अध्ययन के लिए चुने गए विद्यालयों की सूची 144

प्रथम अध्याय

* प्रस्तुत अध्ययन की रूपरेखा
* समस्या का स्पष्टीकरण
* अध्ययन की आवश्यकता
* अध्ययन के उद्देश्य
* अध्ययन की सीमा
* प्रयुक्त उपकरण और तकनीक

प्रथम अध्याय

प्रस्तुत अध्ययन की रूपरेखा

प्रस्तुत अध्ययन में कर्नाटक के मैसूर जिले के विभिन्न विद्यालयों में पढ़नेवाले आठवीं कक्षा के कन्नड़भाषी छात्रों में हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों के पहचान को दर्शाने की कोशिश की गई है । यह अध्ययन मैसूर के चार विद्यालयों में आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता के परीक्षण से प्राप्त आंकड़े और सर्वेक्षण पर आधारित है । इसमें अध्येता ने विद्यार्थियों सहित उन्हें पढ़ानेवाले हिन्दी अध्यापकों के साक्षात्कार का भी सहारा लिया है । साथ ही नमूने के बतौर - लगभग एक सौ विद्यार्थियों से उच्चारण परीक्षण तालिका और रिकार्डित श्रवण कुशलता परीक्षण तालिका के आधार पर उनके हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता का परीक्षण किया है । भाषा के अध्ययन और अध्यापन को सभी शिक्षाविद और अन्य विषयों के विद्वान भी शिक्षा का आधार मानते आए हैं । इसलिए, प्राचीन और मध्यकाल में भी भाषा के सही शिक्षण पर ध्यान देने और दिलवाने के क्रियाकलापों का उदाहरण इतिहास में आसानी से प्राप्य हो सकता है । व्याकरण और भाषा विज्ञान का आविष्कार भी तो इसी का परिणाम है । ज्ञान, कौशल, संतुलन और अस्मिता के विकास में भाषा अध्ययन और अध्यापन की अहम भूमिका रही है । खासकर, भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में इसका महत्व तो और भी अधिक है । भारतीय भाषा नीति के निर्माण, क्रियान्वयन, समृद्धि और विकास के लिए भाषा अध्ययन-अध्यापन पर सही,

समुचित और अधिक ध्यान देने की अनिवार्य आवश्यकता है । अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांत में रहने और पढ़ाने के अनुभव सहित वर्तमान में अहिन्दी भाषा-भाषी छात्रों के संपर्क और साथ होने के कारण प्रस्तुत अध्ययन के अध्येता को एहसास हुआ कि आमतौर पर अहिन्दी प्रदेशों में विद्यालयी पाठ्यक्रमों पर आधारित भाषा शिक्षण के तहत हिन्दी पढ़ाने और पढ़ने का कार्य पूरी तरह से सफल नहीं हो पाया है । यह तथ्य तो हिन्दी प्रदेशों पर भी लागू हो सकता है जहाँ की अध्ययनकर्ताओं और विद्यार्थियों की मातृभाषा हिन्दी होती है और अहिन्दी प्रांतों के लिए तो यह तथ्य स्पष्टत: कहीं भी देखा जा सकता है । समुचित अध्ययन, अध्यापन, आकर्षण, प्रभाव और दायित्वबोध के अभाव में लगभग अहिन्दी भाषा-भाषियों के बीच हिन्दी को सही और समुचित ढंग से पढ़ने-जानने की एक जटिल समस्या उठ खड़ी होती है । ऐसी स्थिति में चाहकर भी विद्यार्थी या अन्य कोई व्यक्ति जो हिन्दी पढ़ता है, तो उसका हिन्दी का ज्ञान अधूरा और अधकचरा रह जाता है । फलस्वरूप उन्हें हिन्दी बोलने, लिखने, पढ़ने और सुनने में समस्याएँ होती है । उनकी ये समस्याएँ उनको सही हिन्दी के ज्ञान से वंचित कराती हे तथा हिन्दी के प्रति स्वाभाविक आकर्षण और दायित्वबोध को भी कम करती है । इससे अहिन्दी भाषा-भाषी भारतीय राजभाषा और राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी हिन्दी के सही और समुचित ज्ञान के अभाव के कारण हिन्दी से होनेवाले फायदों से वंचित रह जाते हैं ।

यह सत्य है कि किसी भी देश की राष्ट्रीयता, एकता और अखंडता को कायम करने में वहाँ की प्रचलित सभी भाषाओं का तो योगदान निर्विवाद होता

ही है लेकिन उस देश की राजभाषा और राष्ट्रभाषा का महत्व तो और भी ज्यादा होता है । इसलिए भारत में हिन्दी को राष्ट्रभाषा वनाने की वात कही गई है और यह अभी राजभाषा के रूप में सुशोभित है । राष्ट्रभाषा और राजभाषा की महत्वपूर्णता को देखते हुए ही हिन्दी को प्राय:सभी राज्यों में अनिवार्य या ऐच्छिक या द्वितीय, तृतीय या अन्यभाषा के रूप में विद्यालयों में पढ़ाने का प्रावधान जारी है । हमें स्वीकारना होगा कि विद्यालयी अध्ययन और अध्यापन द्वारा राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीयता और अखंडता की भावना को सुव्यवस्थित और सुदृढ़ वनाया जा सकता है । इसलिए हम देखते हैं कि स्वतंत्रता के वाद जितनी भी राष्ट्रीय योजनाएँ वनी उनमें राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय चेतना की प्राप्ति के लिए शिक्षा के क्षेत्र को एक आवश्यक और महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में इंगित किया गया । डॉ.कोठारी ने तो कहा भी है कि "स्कूल प्रणाली का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य राष्ट्रीय चेतना को वढ़ावा देना होना चाहिए ।" (शिक्षा आयोग पृ.सं.६९८) स्कूलों के द्वारा यह कार्य कैसे होना चाहिए इसके लिए उन्होंने कहा "यह कार्य हमारी सांस्कृतिक विरासत को समझने को प्रोत्साहित कर एवं उसका पुनर्मूल्यांकन कर, - भारत की भाषाओं और साहित्यों, दर्शन, धर्मों के अध्यापन को सुनियोजित ढंग से प्रोत्साहित कर किया जा सकता है ।" राजभाषा आयोग ने भी सिफारिश की है कि राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में भाषा का वड़ा महत्व होता है । (राजभाषा आयोग - २८, १०) । अत: राजभाषा और राष्ट्रभाषा हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन पर आज विशेष ध्यान देना समय की मांग और वदलते परिवेश की आवश्यकता है । इसमें कोई दोमत नहीं कि हिन्दी संघ की राजभाषा तो है ही साथ ही संपूर्ण देश के सामान्य संपर्क की भाषा सहित राष्ट्रभाषा की

क्षमता भी इसमें निहित है । इसलिए डॉ.कोठारी ने हिन्दी को विशेष दर्जा देने की बात कही है । उन्होंने कहा है कि –" यदि हिन्दी को संघ की राजभाषा मात्र न होकर सारे देश में सामान्य संपर्क की राष्ट्रीय भाषा भी बनाना है, तो शिक्षा की अनिवार्य अवस्था पर इसके पढ़ाने की व्यवस्था करना वाँछनीय है ।" (शिक्षा आयोग, पृ.सं. २१५)

भाषा अध्ययन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही शिक्षा आयोग१९६६ ने अपने प्रतिवेदन में त्रिभाषा फार्मूले की सिफारिश की । यथा:-

(१) मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा

(२) केन्द्र की राजभाषा या सह-राजभाषा

(३) एक आधुनिक भारतीय भाषा या विदेशी भाषा जिसे संख्याँ (१) या (२) में न रखा गया हो और जो शिक्षा के माध्यम से भिन्न हो ।

इसी प्रतिवेदन की सिफारिश के अनुसार थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ अहिन्दी भाषी प्रदेशों में तीन भाषाएँ पढ़ाई जाती है । इनमें प्रथम भाषा, मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा होती है । द्वितीय भाषा के रूप में कुछ अपवादों को छोड़कर सर्वत्र हिन्दी पढ़ाई जाती है कहीं-कहीं इसे तृतीय या अन्य भाषा के रूप में भी पढ़ाया जाता है । कर्नाटक में भी जिसकी मातृभाषा कन्नड़ या अन्य कोई भी भारतीय भाषा है उसके लिए यह तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाया जा रहा है । यहाँ विद्यालयों में पाँचवी कक्षा से ही हिन्दी पढ़ाने का प्रावधान है । कर्नाटक के मैसूर जिले के विद्यालयों में भी यही व्यवस्था है ।

समस्या का स्पष्टीकरण

प्रस्तुत अध्ययन मैसूर के आठवीं कक्षा के कन्नड़ भाषी छात्रों में हिन्दी

पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों की पहचान से संबंधित है । इसलिए मैसूर में अध्येता ने सर्वेक्षण के आधार पर पाया है कि कन्नड़ भाषी छात्र जब तृतीय या अन्य भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ते और सुनते हैं तो उसके सीखने के सभी स्तरों पर कई तरह की त्रुटियाँ होती है । ये त्रुटियाँ उच्चारणगत तो होती ही है साथ ही भ्रम या व्याकरणिक और वर्तनी से संबंधित गलतीवश त्रुटियाँ भी होती है । कन्नड़ भाषी छात्रों के लिए कन्नड़ उनकी मातृभाषा है । इसलिए मातृभाषा के प्रभाव के कारण सामान्यत: ये छात्र पढ़ने में अशुद्ध प्रयोग करते हैं और सुनने में भाषा के नियमों का उल्लंघन कर बैठते हैं । जिससे इनके पढने और सुनने में त्रुटियों का होना स्वाभाविक घटना बन जाती है । हिन्दी को सही रूप में सीखने के लिए कन्नड़ भाषी छात्रों के लिए ये त्रुटियाँ प्रमुख समस्याएँ हैं । इसलिए इन त्रुटियों की पहचान करना ही इस अध्ययन की प्रमुख समस्या है । सर्वेक्षण के दरम्यान अध्येता ने पाया कि आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले छात्रों में हिन्दी, जिसकी प्रथम भाषा है वह पढ़ने और सुनने में कन्नड़ भाषा-भाषी छात्र, जो हिन्दी तृतीय भाषा के रूप में पढ़ते है, की अपेक्षा पढ़ने और सुनने में कम त्रुटियाँ करते हैं । उसी तरह कन्नड़ भाषा-भाषी छात्र पढ़ने में सुनने की अपेक्षा अधिक त्रुटियाँ करते हैं ।

इन त्रुटियों के लिए अध्येता ने मातृभाषा प्रभाव, अकुशल हिन्दी शिक्षक, छात्रों का हिन्दी भाषा अध्ययन के प्रति लगाव और दायित्वबोध की कमी, नवाचार, भाषा शिक्षण पद्धतियों का वर्गाध्यापन में अभाव और हिन्दी के प्रति हेय दृष्टिकोण को ही जिम्मेवार पाया ।

अध्ययन की आवश्यकता

त्रुटियाँ किसी भी सुधार के लिए अनिवार्य है चाहे वह किसी भी प्रकार की क्यों न हो । इसकी जानकारी से सुधार तो संभव है ही पुन: ये न हो इसके लिए भी मानदंड और प्रतिमान निर्धारित किया जाना संभव है । खासकर विद्यालयी अध्ययन और अध्यापन के लिए इसकी जानकारी का बहुत ही अधिक महत्व है । शिक्षकों को स्वयं त्रुटियों की जानकारी होने से वह विद्यार्थियों के त्रुटियों का तो सुधार कर ही सकते हैं तथा ज्ञान के आदान-प्रदान के बीच होनेवाली त्रुटियों से स्वयं बचकर विद्यार्थियों को भी बचा सकते हैं । खासकर भाषा अध्ययन-अध्यापन के क्रम में इन त्रुटियों पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है । विद्यालयी शिक्षा छात्रों के उच्च और विशेष शिक्षा का आधार होता है और भाषा शिक्षा तो समूची शिक्षा का ही आधारस्तंभ माना जाता है । भाषिक त्रुटियों से अन्य विषयों के ज्ञान में दुरूहता, अस्पष्टता और अशुद्धता के प्रवेश कर जाने का हमेशा खतरा रहता है । इसलिए भाषा अध्ययन और अध्यापन का कार्य बहुत ही सावधानी और समुचित रूप में होना चाहिए । चूक तो मानसिक चंचलता, आलस्य, थकान और मनोयांत्रिक असफलता का परिणाम होता है, जिसे थोड़े से परिश्रम और सावधानी से दूर किया जा सकता है । प्राय: शिक्षा प्राप्ति की प्रक्रिया में विद्यार्थी सुनने, बोलने, लिखने और पढ़ने के सतत अभ्यास में इन त्रुटियों का सुधार कर सकते हैं । मगर अज्ञानवश जब कोई त्रुटियाँ हो तो वह विद्यार्थी के मन में स्थायित्व ग्रहण कर लेता है । यह प्राय: द्वितीय, तृतीय या अन्य भाषा सीखने के क्रम में ज़्यादा होता है । इसलिए विद्यालयी

शिक्षा के दौरान भाषा के सही अध्ययन और अध्यापन द्वारा सभी तरह की भाषिक त्रुटियों को सुधारने की अनिवार्य आवश्यकता है । खासतौर पर हिन्दी भाषा अध्ययन और अध्यापन में इन त्रुटियों पर ध्यान देने की अनिवार्य आवश्यकता है ।

हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो जैसे उच्चरित होती है वैसे ही लिखी भी जाती है । इसमें अगर विद्यालयी शिक्षा के क्रम में ही त्रुटियों का प्रवेश हो जाए तो विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया में व्यवधान पड़ता है । जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी इसे बोलने, पढ़ने और लिखने-सुनने में बहुत बड़ी भूल कर सकते हैं । इसका परिणाम होता है कि विद्यार्थी विद्यालयी शिक्षा पर आधारित परीक्षाओं को पास करने के बाद भी हिन्दी को बोलने-सुनने, पढ़ने-लिखने और समझने में अकुशल हो जाते हैं । यही नहीं बल्कि सरकारी, अर्धसरकारी, वैयक्तिक या सामूहिक हित से हिन्दी पढ़ने और पढ़ाने में लगे हुए श्रम का सफल और समुचित उपभोग एवं उपयोग नहीं हो पाता जिससे भाषा-शिक्षण की योजना अधूरी और असफल हो जाती है । हिन्दी जो राजभाषा है और भारत के राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी भी है, उसकी शिक्षा-दीक्षा का सही और समुचित रूप में प्रसार-प्रचार न होने से राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीयता की प्राप्ति मे भी कुछ समस्याएँ होती है । अत: विद्यालयी शिक्षा में खासकर माध्यमिक शिक्षा के पहले हिन्दी भाषा के अध्ययन और अध्यापन से संबंधित त्रुटियों का पता करना आज की अनिवार्यता है । राजभाषा और राष्ट्रभाषा के अधिकारिणी के रूप में जिस तरह से सरकारी और गैर-सरकारी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हिन्दी के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता आज हमारी अहम

आवश्यकता है, उसी तरह से इस भाषा के अध्ययन-अध्यापन में होनेवाली त्रुटियों की पहचान की भी उतनी ही आवश्यकता है । इन त्रुटियों के पहचान से न केवल छात्रों के सीखने की प्रक्रिया, मात्रा और कुशलता के मापदंड को तैयार किया जा सकता है वल्कि छात्रों के लिए सुधार के समुचित मानदंड भी निर्धारित कर उसे सिखाया जा सकता है । इन त्रुटियों के ज्ञान से भाषा वैज्ञानिक, शिक्षक, शिक्षार्थी, लेखक, अध्येता और शोधार्थी आदि सभी लाभान्वित हो सकते हैं । खासकर अहिन्दी भाषी प्रांतों में भाषा अध्ययन और अध्यापन की प्रक्रिया के सही और समुचित विशा निर्देशन में भी त्रुटियों की पहचान के अध्ययन से सहायता मिल सकती है । भाषा का अध्ययन और अध्यापन किसी भी व्यक्ति के लिए वहुत ही महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि भाषिक त्रुटियों से निजी ज्ञान का नुकसान तो होता ही है साथ ही सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक मतभेद, वैमनस्य, घृणा-द्वेष और अन्याय तथा अत्याचार को भी वढ़ावा मिलता है । भाषा व्यक्ति को संस्कारित कर सभ्य वनाती है । इसलिए भारत के राजभाषा और राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की अनिवार्यता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता वहुत ही स्वाभाविक है ।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अल्पावधि अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों को लक्ष्य कर के किया गया है । ये उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

(१) कन्नड़ भाषा-भाषी आठवीं कक्षा के छात्रों द्वारा हिन्दी पढ़ने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों की पहचान करना ।

(२) इन त्रुटियों की पहचान के लिए समुचित उपकरणों और प्रविधियों के प्रयोग पर ध्यान देना ।

(३) इन त्रुटियों के सही कारणों की तलाश करना ।

(४) भाषा-शिक्षकों और अनुसंधाताओं के प्रयोग, उपयोग और हिन्दी शिक्षण के लिए समुचित सुझावों के साथ इन त्रुटियों की वर्गीकृत सूचीपत्र तैयार करना ।

अध्ययन की सीमा

प्रस्तुत अध्ययन की निम्नलिखित सीमाएँ हैं :-

(1) यह अध्ययन मैसूर के चार विद्यालयों में आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले कन्नड़ भाषा-भाषी छात्रों के हिन्दी पढ़ने और सुनने में होनेवाली उच्चारणिक और व्याकरणिक त्रुटियों से संबंधित है ।

(२) प्रथम भाषा के रूप में और तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढ़नेवाले मैसूर के लगभग १०० छात्रों के त्रुटियों को अध्ययन का आधार बनाया गया है ।

(३) सामग्री संकलन का आधार प्रश्नावली, रिकार्डेड कैसेट तथा उच्चारण परीक्षण शब्द-सूचीपत्र है । इसके अतिरिक्त कहीं-कहीं मौखिक रूप से भी छात्रों तथा उनको पढ़ानेवाले अध्यापकों से भी साक्षात्कार लिया गया है ।

(४) सर्वेक्षण की प्रक्रिया में निर्दिष्ट विद्यालयों के छात्रों की जितनी त्रुटियाँ प्राप्त हो सकी, उन्हें ही संकलित कर उनका विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है ।

प्रयुक्त उपकरण और तकनीक

आठवीं कक्षा के कन्नड़ भाषा-भाषी छात्रों के पढ़ने और सुनने में होनेवाली उच्चारणगत और व्याकरणिक त्रुटियों के संकलन में निम्नलिखित उपकरणों और तकनीकी का प्रयोग किया गया है ।

(१) प्रश्नावली -

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार की प्रश्नावलियों का प्रयोग किया गया है । एक छात्रों के लिए है, जिसके माध्यम से पढ़ने और सुनने की उच्चारणगत और व्याकरणिक त्रुटियों की पहचान सहित उसके सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों को भी जानने की कोशिश की गयी है ताकि उसके द्वारा होनेवाली त्रुटियों के लिए उसके परिवेश और वातावरण की भूमिका का भी पता लगाना संभव हो सके । दूसरा प्रश्नावली छात्रों को हिन्दी पढ़ानेवाले अध्यापकों के लिए है जिसके द्वारा छात्रों की त्रुटियों से संबंधित विशेष सूचनाएँ प्राप्त करने का प्रयास किया गया है ।

(२) रिकार्डेड कैसेट

प्रस्तुत अध्ययन में दो रिकार्डेड मॉडल कैसेट भी प्रस्तुत हुआ है, जिसमें से एक मॉडल कैसेट हिन्दी के स्वरों, व्यंजनों तथा अनुनासिक ध्वनियों से संबंधित उन्हीं अक्षरों, शब्दों और वाक्यों के समूहों से तैयार किया गया है जिसे छात्रों के उच्चारण से संबंधित कुशलता का परीक्षण किया गया है । इसके अतिरिक्त एक दूसरा रिकार्डेड कैसेट भी है, जिसमें हिन्दी के कुछ गद्य और पद्य के सरल अवतरणों तथा वर्णों, अक्षरों, शब्दों और वाक्यों के सही और समुचित तरीके से उच्चारण को रिकार्ड किया गया है, जिसे छात्रों को सुनाकर बारी-बारी

से उनसे उन अवतरणों से संबंधित सवाल पूछकर उनके श्रवण कौशल में होनेवाली त्रुटियों को जानने की कोशिश की गई है ।

(३) उच्चारण एवं श्रवण परीक्षण तालिका

(४) साक्षात्कार

मौखिक रूप से जहाँ तक हो सका है छात्रों, हिन्दी अध्यापकों तथा कन्नड़ -हिन्दी भाषा-भाषी विद्वानों से इन त्रुटियों के बारे में साक्षात्कार लिया गया है ।

द्वितीय अध्याय

65254

* हिन्दी और कन्नड़ भाषा में समानताएँ और असमानताएँ
* ध्वनि व्यवस्था
* रूप रचना
* लिंग व्यवस्था
* वचन व्यवस्था
* कारक व्यवस्था

372.4128
SU955

* पुरुष

* काल : अर्थ

* वाच्य

* शब्द रचना

* वाक्य रचना

* हिन्दी और कन्नड़ भाषा की स्वनिम व्यवस्था

द्वितीय अध्याय

हिन्दी और कन्नड भाषा में समानताएँ और असमानताएँ

हिन्दी और कन्नड भारत की दो अलग -अलग भाषा परिवार की भाषा है । हिन्दी भारोपीय परिवार की भाषा है तो कन्नड द्राविड़ परिवार की । भारतीय जनगणना - 1991 के अनुसार भारत में हिन्दी बोलनेवालों की संख्या ३३७,२७२,११४ और कन्नड बोलनेवालों की संख्या ३२,७५३,६७६ है । दोनों भाषाओं के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक सन्दर्भ अलग-अलग रहे हैं । चूँकि दोनों दो अलग-अलग परिवार की भाषा है, इसलिए दोनों में असमानताओं का होना स्वाभाविक घटना है । मगर, दोनों भारत की ही भाषा है, इसलिए भाषिक विशेषताओं के क्रम में इन दोनों के बीच परिस्थिति और परिवेश वश आपस में आदान-प्रदान होना भी बहुत ही स्वाभाविक है । इसलिए दोनों में समानताएँ और असमानताएँ अवश्य देखने को मिल सकती है । चूँकि, प्रस्तुत अध्ययन कन्नड भाषी आठवीं कक्षा के छात्रों के हिन्दी पढने और सुनने की कुशलता में पायी जानेवाली त्रुटियों के पहचान पर आधारित है । इसलिए संक्षेप में यहाँ हिन्दी और कन्नड भाषा के बीच समानताओं और असमानताओं पर चर्चा करना उपर्युक्त ही होगा । इन दोनों के बीच समानताओं और असमानताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा दर्शाने का प्रयास किया गया है । यथा :-

ध्वनि व्यवस्था

दोनों भाषा की ध्वनि व्यवस्था पर विचार करने से मालूम होता है कि दोनों में पर्याप्त समानताएँ हैं । इसका कारण है कि दोनों भाषाओं की लिपियाँ ब्राह्मी से ही विकसित हुई है । हिन्दी और कन्नड व्याकरण पर सस्कृत का प्रभाव भी है ।

इसलिए दोनों में कुछ समानताएँ सहित विभिन्नताएँ भी देखने को मिलती है । भाषा का प्रयोग भावों के संप्रेषण के लिए लिखित और मौखिक दोनों रूपों में होता है । दोनों के लिए शुद्ध उच्चारण, बोलने में बल तथा अनुतान आदि का समुचित प्रयोग ध्वनियों के ज्ञान पर ही आधारित है । हिन्दी के सभी वर्ण कन्नड में है । इसके अतिरिक्त कुछ नए वर्ण भी कन्नड में है जो हिन्दी में नहीं पाये जाते । स्वरों में जहाँ हिन्दी में केवल ह्रस्व "ऋ" है वहीं कन्नड में इसके अतिरिक्त उसकी दीर्घ ध्वनि ೠ ॠ भी है । 'ए' और ओ का ह्रस्व रूप ಎ(ए) (ओ) भी इसमें है ।

हिन्दी के सभी व्यंजन कन्नड में है । इसके अतिरिक्त ಳ (ळ) भी कन्नड में है । ऋ और ॠ का प्रयोग ಠಠ कन्नड में नहीं होता उसी तरह ಹಠ हिन्दी में भी इसका प्रयोग नहीं होता । श, ष तथा विसर्ग का प्रयोग कन्नड में नहीं होता । हिन्दी में पूर्ण अनुस्वार(.) के अतिरिक्त अर्धानुस्वार (ँ) भी है । कन्नड में यह चन्द्र बिंदु नहीं होता । हिन्दी और कन्नड वर्णों के उच्चारण निम्नलिखित अंशों में होता है । जैसे हिन्दी में पदान्त "अ" अनुच्चरित रहता है । यथा:-

किताब - किताब फल-फल आदि ।

लेकिन कन्नड में अ का पूर्ण उच्चारण होता है जैसे रामण्ण, सीतम्म । ऋ का उच्चारण हिन्दी में रि या कहीं-कहीं रू के समान होता है; लेकिन कन्नड में इसका सही उच्चारण किया जाता है । ऐ और औ को हिन्दी में अय और अव उच्चारित करते हैं, मगर कन्नड में इसका सही उच्चारण होता है ।

हिन्दी में अरबी और फारसी प्रभाव से कुछ वर्णों के नीचे नुक्ता लगाकर विशेष

उच्चारण कर लेने का क्रम है जैसे क़ -क़लम । लेकिन कन्नड में इस प्रकार नुक्ता नहीं लगाया जाता है । इसके अतिरिक्त दोनों में स्वर, उसके भेद ह्रस्व-दीर्घ, गुरु-लघु, व्यंजन-स्पर्श, अंतस्थ-उष्म, वर्गीयव्यंजन- अवर्गीय व्यंजन, योगवाह समान रूप से मिलते हैं ।

रूप रचना

भाषा परिवर्तनशील होती है । इसलिए एक दूसरे भाषाओं के संपर्क और प्रभाव के कारण इनके रूपों में भी परिवर्तन होना स्वाभाविक नियम है । संस्कृत, हिन्दी अपभ्रंश, अंग्रेज़ी-अरबी, फारसी तथा अन्य विदेशी भाषाओं से कन्नड और हिन्दी दोनों प्रभावित हुई है । इसलिए विदेशी भाषाओं के कुछ शब्द अपने स्थायी या परिवर्तन रूप में इन दोनों भाषाओं में मिल जाएँगे ।

लिंग व्यवस्था

हिन्दी में लिंग का पूर्ण निर्णय करना थोड़ा कठिन है । नपुंसक लिंग के अभाव के कारण हिन्दी के लिंग निर्णय में काफी कठिनाइयाँ होती है । लिंग निर्णय के नियमों की अधिकता के कारण भी इसमें कठिनाइयाँ होती है । हिन्दी में लिंग के वर्गीकरण का आधार लोक है । इसलिए एक ही शब्द अलग-अलग प्रदेशों में अलग-अलग लिंग के अन्तर्गत व्यवहृत होते हैं । लेकिन कन्नड में लिंग निर्णय में अस्पष्टता और कठिनाई नहीं है क्योंकि लिंग-निर्णय का आधार मनुष्य और मनुष्येतर है । हिन्दी के स्त्री लिंग, पुल्लिंग की तरह इसमें भी स्त्री लिंग-पुल्लिंग है मगर इसके अतिरिक्त इसमें नपुंसक लिंग भी है ।

वचन व्यवस्था

हिन्दी मे संज्ञा का मूलरूप ही प्रथम विभक्ति (कर्ता कारक) में आता है । इसी मूल रूप में प्रत्यय लगाकर प्रथमा का बहुवचन बनाया जाता है, जैसे घोड़ा -घोड़े । दूसरे (विभक्ति रहित) कर्ता कारकों में बहुवचन का जो रूप होता है, यह प्रथमा (विभक्ति रहित कर्ता कारक) के बहुवचन के रूप से भिन्न होता है और उस(रूप) में इस रूप का कुछ काम नहीं पड़ता, जैसे घोड़े, घोड़े ने, घोड़ों को । हिन्दी में दो वचन होते हैं (१) एकवचन और (२) बहुवचन । कन्नड़ में भी दो ही वचन होते हैं (१) एकवचन और बहुवचन । कन्नड में लिंग की सूचना में एक वचन और बहुवचन में अलग प्रत्यय होते है । बहुवचन में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग का अंतर नहीं होता । प्रत्यय विशेष द्वारा नपुसक लिंग को अलग से जाना जा सकता है ।

कारक व्यवस्था

हिन्दी में कारक और विभक्ति एक ही माना जाता है । इसमें आठ कारक हैं लेकिन कन्नड में सात विभक्तियाँ हैं । हिन्दी में संज्ञा में प्रत्यय लगाने के पहले मूलरूप में परिवर्तन कर विकृत रूप बना दिया जाता है । ऐसा कन्नड़ में भी किया जाता है । कन्नड में मूल प्रकृति के साथ विभक्ति प्रत्यय लगाया जाता है तो कभी कभी उन दोनों के बीच व, न जैसे वर्णों का आगम होता है । कारक या विभक्ति को हिन्दी में मूल शब्दों से प्रायः अलगाकर लिखा जाता है । मगर, कन्नड में प्रत्यय मूल शब्दों के साथ ही लिखा जाता है । हिन्दी में एक ही कारक चिह्न विभक्तियों के लिए और प्रत्येक कारक के सभी अर्थ एक ही प्रत्यय से सूचित किये जाते हैं, तो कन्नड़ में विभिन्न अर्थ

सूचित करने के लिए अलग अलग प्रत्यय का प्रयोग होता है । आजकल कन्नड में प्रथमा और पंचमी विभक्ति को अस्वीकार कार मात्र पांच ही विभक्तियों को मानने का प्रचलन हो रहा है ।

पुरुष:-

हिन्दी में तीन पुरुष होते हैं (१) उत्तमपुरुष (२) मध्यम पुरुष और (३) अन्य पुरुष । इसी तरह कन्नड में भी तीन पुरुष होते है (१) उत्तम पुरुष (२) मध्यम पुरुष और (३) अन्य पुरुष

काल: अर्थ

हिन्दी में विभिन्न कालों और अर्थों के द्योतक प्रत्यय क्रिया रूपों के साथ मिलकर काल तथा अर्थ की रचना करते हैं । इसमें काल और अर्थ के प्रत्यय क्रिया के मूल रूप में परिवर्तन लाते हैं । दोनों में भूत, वर्तमान और भविष्यत तीन काल माने गए है । काल, स्थिति और अर्थ के अनुसार हिन्दी में सोलह क्रिया रूप प्रचलित हैं लेकिन कन्नड में ६ रूपों का प्रचलन है । हिन्दी में धातु के बाद आख्यात प्रत्यय लगते हैं जबकि कन्नड के क्रियापदों की विशेषता है कालार्थ सूचक विकरण । इसमें क्रियापदों में भी संज्ञा की ही तरह तीन अव्यव होते हैं :- धातु कालार्थ सूचक विकरण -पुरुष प्रत्यय । मूल सर्वनाम ही आख्यात प्रत्ययों में परिवर्तित हो जाते हैं । यह कन्नड की अपनी विशेषता है । कन्नड में प्राय: भूत और भविष्यत काल को ही प्रमुख माना जाता । यहाँ वर्तमान और भविष्यत में कोई अंतर नहीं माना जाता । कन्नड में भूत, वर्तमान तथा भविष्यत काल में उत्तम तथा मध्यम पुरुष क्रियारूपों में स्त्रीलिंग या पुल्लिग में कोई अंतर नही होता । अन्य पुरुष

बहुवचन में भी कोई अंतर नहीं है । अन्य पुरुष एकवचन में लिंग के कारण अंतर होता है । कन्नड में तीनों कालों के अंत में लगनेवाले सार्वनामिक अंश के आधार पर क्रिया के पुरुष व वचन का पता लगता है। हिन्दी में क्रिया के निषेध का अर्थ के लिए 'न', 'नहीं' या 'मत' आदि क्रिया विशेषणों को जोडा जाता है । लेकिन कन्नड में क्रिया में प्रत्यय जोड़कर निषेध का बोध कराया जाता है :-

जैसे - तिन्नु - खा, तिन्न- नहीं खाता, बा-आ,. बार-नहीं आता

वाच्य

हिन्दी में कर्तृवाच्य के साथ कर्मवाच्य तथा भाववाच्य का भी प्रयोग होता है । लेकिन कन्नड में सिर्फ कर्तृ और कर्मवाच्य का ही प्रयोग होता है ।

शब्द रचना

हिन्दी और कन्नड के शब्द समूह संस्कृत से प्रभावित होने के कारण दोनों में समानताओं का पाया जाना स्वाभाविक ही है । इसी तरह अरबी, फारसी तथा अंग्रेज़ी शब्द दोनों में समान रूप में प्राप्त हो सकते हैं । शब्दों के भेद में हिन्दी विकारी और अविकारी रूप में बंटकर संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबंध सूचक, समुच्चय बोधक और विस्मयाबोधक के रूप में प्रचलित है । जबकि कन्नड में सीधे-सीधे संस्कृत के नियमों के अनुसार शब्दों के वर्गीकरण को करने की परंपरा जारी है । संस्कृत के आधार पर हिन्दी और कन्नड में शब्दों के तीन भेद (संज्ञा) नाम, क्रिया तथा अव्यय को ही स्वीकार किया गया है । कन्नड में नाम शब्द का प्रयोग विस्तृत अर्थ में किया जाता है जिसमें सर्वनाम,

गुणवाचक तथा संख्यावाचक विशेषण भी गिने जाते हैं । नाम पदों का एक भेद नाम वाचक है जो हिन्दी के संज्ञा का समानार्थ है । कन्नड के नामपदों को दो भागों में विभाजित किया जाता है । (१) सहज नाम (२) साधित नाम । साधित नामों के अन्तर्गत समास, कृदंत नाम तथा तद्धित नाम आते हैं । कन्नड के अपने सर्वनाम है । इसमें संबंधार्थक सर्वनामों का अभाव है । हिन्दी की तरह कन्नड में भी अधिकार, बडप्पन आदि जताने के लिए उत्तमपुरुष एकवचन के बदले बहुवचन का प्रयोग होता है - जैसे - नमगे ई विचारवु चेन्नागि गोत्तु ।(हम इस बात को अच्छी तरह मानते हैं) । उत्तम पुरुष सर्वनाम का प्रयोग दोनों में समान रूप से होता है । मध्यमपुरुष सर्वनाम के प्रयोग में दोनों में थोडी बहुत भिन्नता है । हिन्दी में "तू" अल्पार्थक और अतिशय प्रेमद्योतक समझा जाता है । सामान्यतया क्षुद्र, निकृष्ट व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त किया जाता है । परन्तु कन्नड में "नीनु" समकक्ष लोगों के लिए प्रयोग होता है । अर्थात कन्नड में जहाँ एकवचन का प्रयोग होता है वहाँ हिन्दी में बहुवचन का प्रयोग होता है । सामान्य और विशेष सभी तरह के आदर के लिए हिन्दी में "आप" का प्रयोग होता है । यद्यपि "तुम" बहुवचन रूप है, फिर भी बहुत्वबोध के लिए तुम लोग का प्रयोग होता है । कन्नड में "नीवु" बडों के लिए "नीवुगळु" बहुत्वबोध में प्रयोग किया जाता है । हिन्दी में आज्ञार्थ को छोडकर बाकी क्रियाओं से (ने नियम वाले वाक्य छोडकर) कर्ता के लिंग की पहचान होती है । कन्नड में उत्तम तथा मध्यम पुरुष के क्रियारूपों से कर्ता के लिंग का बोध नहीं होता । अन्यपुरुष सर्वनामरूप में भी हिन्दी और कन्नड में अंतर है । प्राणिवाचक-अप्राणिवाचक , स्त्रीलिंग-पुल्लिंग के लिए हिन्दी में एक ही रूप है, पर कन्नड में अलग-अलग रूप हैं । निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग हिन्दी में तीनों पुरुषों में होता है पर कन्नड में केवल अन्यपुरुष

में ही । संख्यावाचक, निर्देशवाचक तथा समूहवाचक के नाम से कन्नड में सर्वनामों के तीन और भेद किए जाते हैं । हिन्दी में संख्यावाचक विशेषण ही सर्वनाम का काम करते हैं । लेकिन कन्नड में इसके अलग रूप हैं । हिन्दी में यह, वह, ये, वे आदि अन्य पुरुष सर्वनाम से निर्देशवाचक का कार्य चलाया जाता है, पर कन्नड में अन्य पुरुष से बने हुए अलग रूप निर्देशवाचक के है । जैसे - यह-इदु, यह-अदु, ये-इवु, वे-अवु ।

सब के अर्थ में एल्लरु प्राणिवाचक तथा एल्लवु अप्राणिवाचक कन्नड में समूहवाचक सर्वनाम माने जाते हैं । परन्तु 'सब' हिन्दी में विशेषण के अन्तर्गत आता है ।

हिन्दी में आठ कारक है तो कन्नड में सात विभक्तियाँ हैं । हिन्दी तथा कन्नड दोनों भाषाओं के विभक्ति प्रत्यय कारक-चिन्ह, स्वतंत्र शब्दों के घिसे रूप माने जाते हैं । हिन्दी में वे मूल शब्द से बहुधा (सर्वनामों को छोडकर) अलगाकर लिखे जाते हैं । कन्नड में यह बात नहीं है । कन्नड में प्रत्यय मूल शब्दों के साथ ही लिखे जाते हैं । जहाँ हिन्दी में एक ही - कारक चिन्ह कई विभक्तियों के लिए तथा प्रत्येक कारक के सभी अर्थ एक ही प्रत्यय से सूचित किए जाते हैं, तो कन्नड में विभिन्न अर्थ सूचित करने के लिए विभिन्न प्रत्यय हैं ।

हिन्दी में विध्यर्थ को छोडकर शेष सभी प्रकार की क्रियाएँ कर्ता या कर्म के लिंग-भेद तथा पुरुष भेद के अनुसार परिवर्तित होती है । कन्नड में एक ही शब्द क्रियापद तथा नामपद का कार्य कर सकता है अर्थात कहा जाता है कि कन्नड में

क्रियापद का अस्तित्व है । सकर्मक और अकर्मक धातुओं का स्वरूप हिन्दी और कन्नड दोनों में है । व्युत्पादन (Derivation) समासीकरण (compounding) तथा पुनरुक्ति (Reduplication) की प्रक्रिया सही शब्दों की रचना होती है जोकि दोनों भाषाओं में जारी है । इसलिए दोनों में कुछ समानताओं और विभिन्नताओं का पाया जाना स्वाभाविक ही है ।

वाक्य रचना

हिन्दी में सरल, मिश्र और सयुक्त वाक्यों की रचनाएँ होती है । हिन्दी और कन्नड दोनों के वाक्यों में कर्ता आरभ मे कर्म अंत में होता है । दोनों के वाक्यो की अभिव्यक्ति लिखित और मौखिक होती है जिसमें शुद्ध उच्चारण, भावाभिव्यक्ति, समुचित गति, बलाघात, अनुतान और हावभाव सहित विचारों में क्रमबद्धता की आवश्यकता होती है ।

हिन्दी और कन्नड की स्वनिम व्यवस्था

हिन्दी की ध्वनि व्यवस्था

हिन्दी के निम्नलिखित स्वर है :-

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः ।

ऋ स्वर का मूल उच्चारण अब भुलाया जा चुका है । हिन्दी भाषी प्रदेशों में इसे "रि" और हिन्दीतर प्रदेशों में इसे "रु" के रूप में उच्चरित किया जाता है । संस्कृत के तत्सम शब्दों में इसका प्रयोग होता है । अं और अः नासिक्य और कंठ्य अर्ध व्यंजन ध्वनियाँ है, जिनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से न होकर स्वरों के साथ होता है । अनुस्वार नासिक्य व्यंजन ध्वनि है और विसर्ग कंठ्य अघोष संघर्षी

ध्वनि है । क्योंकि ऋ, अं और अः की मात्राएँ व्यंजन वर्णों में लगती है अतः इन्हें स्वरों में ही गिना जाता है । उच्चारण की दृष्टि से हिन्दी में १० स्वर है । यथा - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ओ, औ । मात्रा की दृष्टि से २ प्रकार के स्वर होते है - ह्रस्व और दीर्घ ।

ह्रस्व स्वर - अ, इ, उ दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ

इनमें ऐ(अइ) और ओ(अउ) संध्यक्षर माने जाते हैं । हिन्दी में इनका दीर्घ स्वर के रूप में उच्चारण करते है मगर संस्कृत में इनको संयुक्त स्वरों के रूप में उच्चरित किया जाता है ।

जिह्वा की स्थिति तथा उसके भाग के अनुसार स्वरों का चार्ट इस प्रकार बनाया जा सकता है -

जिह्वा की स्थिति	जिह्वा के भाग		
	अग्र	मध्य	पश्च
संवृत	ई/इ		ऊ/उ
अर्ध संवृत	ए/ऐ	अ	ओ(ऑ)
विवृत		आ	

अनुनासिक स्वर

हिन्दी के सभी स्वरों को अनुनासिक और निरनुनासिक रूप मे विभक्त किया जा सकता है । स्वर के उच्चारण में जब कोमल तालु कुछ नीचे झुककर हवा के कुछ अंश को नाक और मुख दोनों से बाहर निकलने को बाध्य करते हैं, तो वह ध्वनि अनुनासिक ध्वनि कहलाते हैं । जैसे - कहा - कहाँ ।

हिन्दी भाषा के व्यंजन

हिन्दी के समस्त व्यंजन ध्वनियों को उच्चारण स्थान के अनुसार निम्नलिखित रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है -

	उच्चारण स्थान आधारित नाम
क, ख, ग, घ, ङ	- कण्ठ्य
च, छ, ज, झ, ञ	- तालव्य
ट, ठ, ड, ढ, ण	- मूर्धन्य
त, थ, द, ध, न	- दंत्य
प, फ, ब, भ, म	- ओष्ठ्य
य, र, ल, व	- अंतस्थ
श, ष, स, ह	- उष्म
क्ष, त्र, ज्ञ	- संयुक्त व्यंजन
ड़, ढ़	- उक्षिप्त व्यंजन
क़, ख़, ग़, ज़, फ़	- ग्रही व्यंजन

हिन्दी और कन्नड़ की ध्वनि व्यवस्था

स्वर (ಸ್ವರಗಳು) :-

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
ಅ	ಆ	ಇ	ಈ	ಉ	ಊ
ऋ	ऋू*	ए	ए-ए*	ऐ	
ಋ	ಋೂ	ಎ	ಏ	ಐ	
ओ	ओ-ो	औ	अं	अः	
ಒ	ಓ	ಔ	ಅಂ	ಅಃ	

इन स्वरों में जो * चिन्ह दिया है वह कन्नड वर्णमाला में पाए जाते हैं, लेकिन हिन्दी में आमतौर पर उपयोग नहीं होते ।

ऋ (ಋ) वर्ण कन्नड में 'रु'जैसे उच्चारण करते हैं । (हिन्दी में 'रि') । कन्नड में भी इस अक्षर का प्रयोग बहुत सीमित है ।

इन स्वरों में रेखांकित किए हुए अक्षर हिन्दी वर्णमाला में नहीं है । ऐ (ಐ) वर्ण कन्नड में (आई) जैसे उच्चारण करते हैं । जैसे अंग्रेज़ी में i(आई) का प्रयोग होता है ।

ओ(ಒ) ओ-ो(ಓ) ए(ಎ) ए-ए(ಏ)

इन दो वर्णों के स्थान पर हिन्दी में एक वर्ण प्रयोग होते हैं ।

ॠ(ಋೠ) रु, रू के बीच का शब्द है । यह दीर्घ मूर्धन्य स्वर है । जैसे ऊपर बताया गया है, कन्नड में भी इसका प्रयोग बहुत सीमित है ।

व्यंजन (ವ್ಯಂಜನಗಳು)

क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ
ಕ	ಖ	ಗ	ಘ	ಙ	ಚ	ಛ	ಜ	ಝ
ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	
ಞ	ಟ	ಠ	ಡ	ಢ	ಣ	ತ	ಥ	
द	ध	न	प	फ	ब	भ	म	
ದ	ಧ	ನ	ಪ	ಫ	ಬ	ಭ	ಮ	
य	र	ल	व	श	ष	स		
ಯ	ರ	ಲ	ವ	ಶ	ಷ	ಸ		
ह	ळ	क्ष						
ಹ	ಳ	ಕ್ಷ						

इन वर्णों में ङ(ಙ) ञ (ಞ) ಱ (ೞ) हिन्दी मेंकम प्रयोग होते हैं ।

ञ(ಞ) हिन्दी वर्णमाला में होने पर भी, कम शब्दों में आते हैं । कन्नड में भी इसका प्रयोग बहुत कम है ।

ಱ(ೞ) यह वर्ण हिन्दी में प्रयोग नहीं होता । लेकिन कन्नड में इसका प्रयोग बहुत है ।

हिन्दी का 'सरल' शब्द कन्नड में 'सरळा' होता है, जहाँ 'ल' के स्थान पर 'ಱ'का प्रयोग किया जाता है ।

कन्नड में 'प' और 'ह' के मेल से हिन्दी के 'फ' वर्ण का उच्चारण होता है । जैसे अंग्रेज़ी में Pha (ಫ)

कन्नड़ में शब्दों के सभी वर्णों का पूर्ण उच्चारण होता है । ಹುಡುಗ (हुडुग) का उच्चारण 'हुडुग्' न होकर 'हुडुगा' (अकारान्त) ही होता है । इसी तरह ಅವನಿಂದ (अवनिन्द) शब्द का उच्चारण 'अवनिन्द्' न होकर 'व' और 'द' का उच्चारण भी अकारान्त ही होता है । 'हल्' अर्थात स्वर-रहित व्यंजनों को सूचित करने के लिए सस्कृत की तरह कन्नड में अलग चिन्ह है, जैसे 'अवाक'(ಅವಾಕ್) कन्नड़ शब्दों का उच्चारण बहुत कुछ सस्कृत शब्दों के जैसे ही हैं ।

अवलु (ಅವಳು) वह (स्त्रीलिंग)		मगलु (ಮಗಳು)	बेटी, पुत्री
मरलु (ಮರಳು) रेत		होगलु (ಹೊಗಳು)	तारीफ
मुल्लु (ಮುಳ್ಳು) कॉटा		मले (ಮಳೆ)	बरसात
कोले*(ಕೊಳೆ) गन्दगी			

--इन शब्दों के आखिर अक्षरों का उच्चारण 'ल' के स्थान पर 'ಱ' होता है ।

*'कोलो' (ಕೊಲೆ) - इसके आखिर अक्षर का उच्चारण 'ल' ही है । इस शब्द का अर्थ है 'खून करना' ।

कोले (ಕೊಳೆ) इसका आखिर अक्षर का उच्चारण 'ळ' है । इस शब्द का अर्थ है 'गन्दगी' ।

इसलिए इन दोनों शब्दों का ठीक-ठाक उच्चारण और अर्थ का भेद जानना बहुत जरूरी है ।

उच्चारण स्थान के अनुसार वर्णों का वर्गीकरण

ಉಚ್ಚಾರಣೆಗೆ ಅನುಸಾರ ವರ್ಣಗಳ ವರ್ಗೀಕರಣ

स्वर (ಸ್ವರಗಳು)

वर्ण ವರ್ಣ	कण्ठ ಕಂಠವ್ಯ	तालू ತಾಳವ್ಯ	ओठ ಓಷ್ಠ್ಯ	मूर्धा ಮೂರ್ಧನ್ಯ	दन्त ದಂತವ್ಯ	कण्ठ तालू ಕಂಠ ತಾಳವ್ಯ	कण्ठ ओठ ಕಂಠ ಓಷ್ಠ್ಯ
ह्रस्व	अ	इ	उ	ऋ	ऌ*	ए	ओ
ಹ್ರಸ್ವ	ಅ	ಇ	ಉ	ಋ	ಌ	ಎ	ಒ
दीर्घ	आ	ई	ऊ	ॠ*	ॡ*	ए-ए*	ओ-ओ*
ದೀರ್ಘ	ಆ	ಈ	ಊ	ಋೂ	ಌೂ	ಏ	ಓ
						ऐ	औ
						ಐ	ಔ

वर्ण ವರ್ಣ	कण्ठ ಕಂಠವ್ಯ	तालू ತಾಳವ್ಯ	ओठ ಓಷ್ಠವ್ಯ	मूर्धा ಮೂರ್ಧನ್ಯ	दन्त ದಂತವ್ಯ	कण्ठ तालू ಕಂಠ ತಾಳವ್ಯ	कण्ठ ओठ ಕಂಠ ಓಷ್ಠವ್ಯ
	क	च	प	ट	त		
	ಕ	ಚ	ಪ	ಟ	ತ		
	ख	छ	फ	ठ	थ		
	ಖ	ಛ	ಫ	ಠ	ಥ		
	ग	ज	ब	ड	द		
	ಗ	ಜ	ಬ	ಡ	ದ		
	घ	झ	भ	ढ	ध		
	ಘ	ಝ	ಭ	ಢ	ಧ		
	ङ	ञ	म	ण			
	ಙ	ಞ	ಮ	ಣ			
		य	व	र	न		
		ಯ	ವ	ರ	ನ		
	ह	श		ष	ल		
	ಹ	ಶ		ಷ	ಲ		
				ळ			
				ೞ			

*चिन्ह वाले वर्ण आमतौर पर हिन्दी में प्रयोग नहीं होते ।

तृतीय अध्याय

* कन्नड़ भाषी छात्रों की हिन्दी पढ़ने में होनेवाली त्रुटियाँ
* स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ
* स्वर ध्वनियों को पढ़ने में होनेवाली उच्चारणगत त्रुटियाँ
* दीर्घीकरण
* ह्रस्वीकरण
* स्वर-व्यत्यय और संध्यक्षर
* स्वर अप्रयोग
* संकीर्ण दोष
* व्यंजन ध्वनियों को पढ़ने में होनेवाली उच्चारणगत त्रुटियाँ
* अल्प प्राण-महाप्राण तथा सघोष-अघोष
* मूर्धन्य - दंत्य
* उष्म ध्वनियाँ
* उत्क्षिप्त - लुंठित
* `ह' का प्रयोग
* व्यंजन गुच्छ
* संकीर्ण दोष
* अनुनासिक ध्वनियों को पढ़ने में होनेवाली त्रुटियाँ
* अनुनासिक - निरनुनासिक
* अनुनासिक - नासिक्य

तृतीय अध्याय

कन्नड़ भाषी छात्रों की हिन्दी पढ़ने में होनेवाली त्रुटियाँ

भाषा की महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक विशेषता उसकी उच्चरण शीलता है; अर्थात भाषा मौखिक रूप से उच्चरित होती है । खासकर हिन्दी भाषा की एक अद्वितीय विशेषता है कि यह जैसे उच्चरित होती है. वैसे ही लिखी भी जाती है । इसलिए मौखिक उच्चारण की शुद्धता से उस भाषा के लिखने, पढने और-सुनने सहित समझने में भी सुविधा होती है । इसमें किसी भी प्रकार के भ्रम, भूल, गलती और त्रुटियों से ज्ञानार्जन की प्रक्रिया बाधित होती है । इसके उच्चारण की त्रुटियों के लिए सामान्य तौर पर अन्य बोलियों और भाषाओं के प्रभाव, वाक् अवयव दोष और श्रव्यदोष तथा लिपि चिन्हों एवं ध्वनियों के भ्रम से होनेवाले दोष को जिम्मेदार ठहराया जाता है ।

लेकिन, विदेशी भाषा-भाषियों या अहिन्दी भाषा-भाषियों द्वारा हिन्दी सीखने के क्रम में इन दोषों या त्रुटियों के अतिरिक्त भी कुछ व्यावहारिक त्रुटियाँ सामने आती है जिसके कारण उनके पढने और सुनने में कुछ त्रुटियाँ हो जाती है । प्रस्तुत अध्ययन के अध्येता ने कन्नड भाषी आठवीं कक्षा में पढनेवाले मैसूर के चार विद्यालयों के लगभग १०० छात्रों की त्रुटियों को जानने की कोशिश की है, जिसमें उनके परिवेश, मानसिकता, सामाजिक और आर्थिक सरोकार सहित भाषा शिक्षण की स्थिति को भी परखकर उनके पढने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों को पहचानने की कोशिश भी शामिल है । सामान्यतः कन्नड भाषा-भाषी आठवीं कक्षा के छात्र हिन्दी भाषा की ध्वनि व्यवस्था से पूर्णतः अनभिज्ञ होते हैं या लापरवाही

के कारण शुद्ध रूप से अपने अध्ययन के दरम्यान इसको नही सीख पाते हैं । जिसका परिणाम होता है कि ये हिन्दी पढने और सुनने में त्रुटियाँ करते हैं । सामान्य व्यवहार में अधिकांशतः अपनी मातृभाषा का प्रयोग करने के कारण हिन्दी और कन्नड भाषा की कुछ सामान्य ध्वनियों के उच्चारण में ये छात्र त्रुटियाँ करते है । ये त्रुटियाँ भ्रम, भूल और लापरवाही के कारण ज्यादा होती है । इसके विपरीत आठवीं कक्षा में पढनेवाले छात्र जो हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढते हैं, वे कम त्रुटियाँ करते हैं । कन्नड भाषी आठवीं कक्षा के छात्रों द्वारा की गई उच्चारण की त्रुटियों को पहचान कर निम्नलिखित शीर्षकों में वर्गीकृत करने की कोशिश की गई है ।

(१) स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ:

१०० सौ छात्रों में ५० छात्र जिनकी मातृभाषा कन्नड थी उन्होंने दिए गए उच्चारण परीक्षण तालिका के शब्दसूची पत्र को पढने में काफी समय लगाया । लगभग ४० छात्रों ने पूरी सूची पत्र को पढने में प्रत्येक छात्र लगभग २० मिनट के दर से पठन कार्य संपन्न किया । १० छात्रों ने प्रत्येक छात्र लगभग १५ मिनट के दर से शब्दसूची पत्र का पाठ किया । इसके विपरीत जिनकी मातृभाषा हिन्दी थी, उन छात्रों में लगभग ४५ छात्रों ने उच्चारण परीक्षण शब्द-सूची पत्र को प्रत्येक छात्र १० मिनट के दर से पठनकार्य किया और उनमें कन्नड भाषी छात्रों की अपेक्षा त्रुटियाँ भी कम हुई । तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों के मौन पाठ में भी सर्वेक्षण के दरम्यान हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में लेकर पढनेवाले छात्रों से अधिक त्रुटियाँ हुई । उदाहरणार्थ - ५० कन्नड भाषा-भाषी छात्रों में से ३० छात्रों ने कमल का उच्चारण कमलअ या कमलआ या कमलऊ किया । इसी

तरह ३५ छात्रों ने नयन को नयनअ या नयनू और लेखक को लेखकअ या लेखकऊ उच्चरित किया । ५० में से ४६ छात्रों ने इनाम को इनामअ या इनामू या ईनामअ और ३८ छात्रों ने कविता को कवीता तथा ३२ छात्रों ने प्रति को प्रती के रूप में उच्चरित किया । इसके विपरीत हिन्दी प्रथम भाषा लेकर पढनेवाले ५० छात्रों में से ४६ ने हिन्दी के इन स्वरों से बननेवाले शब्दों में कोई त्रुटियाँ नही की।

स्वर ध्वनियों को पढ़ने में होनेवाली उच्चारणगत त्रुटियाँ:-

कन्नड़ भाषी आठवीं कक्षा के छात्र स्वर ध्वनियों के उच्चारण में कई तरह की त्रुटियाँ करते हैं । इन त्रुटियों में कुछ विशेष प्रकार की त्रुटियाँ भी देखने को मिलती है । इनके स्वर संबधी त्रुटियों का इन्ही आधार पर वर्गीकरण किया गया है :-

दीर्घीकरण

तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी सीखते समय कन्नड भाषी आठवीं कक्षा के छात्र स्वरों के उच्चारण में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं । उच्चारण परीक्षण तालिका के आधार पर इन छात्रों के परीक्षण से लिए गए नमूने से यह पता चलता है कि वे शब्द के प्रारंभ और मध्य में कुछ स्वरों का उच्चारण ठीक करते हैं तो कहीं-कहीं ये शब्द के प्रारंभ, मध्य और अंत सभी जगहों पर स्वरों के उच्चारण में त्रुटियाँ करते हैं । उच्चारण परीक्षण के लिए तैयार किए गए शब्द-सूचीपत्र के आधार पर पाया गया कि ये हिन्दी स्वरों के उच्चारण में दीर्घीकरण का ज्यादा प्रयोग करते हैं । वे "अ" के स्थान पर "आ", इ के स्थान पर "ई", तथा "उ" के स्थान पर "ऊ" का उच्चारण करते पाए गए हैं ।

उदाहरणार्थः- ५० में ४२ कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने इनाम को ईनाम, कोहिमा को कोहीमा और कवि को कवी के रूप में उच्चरित किया । ३४ छात्रों ने उसका को ऊसका, बहुत को बहूत और दयालु को दयालू की तरह उच्चरित किया । अ के उच्चारण में ये शब्द के आदि और मध्य में कम त्रुटियाँ करते हैं मगर शब्द के अंत में प्रायः ये अधिक त्रुटियाँ करते हैं । सामान्यतः हिन्दी के शब्दों के अंत में "अ" स्वर का उच्चारण होता ही नहीं है । मगर, कन्नड में सभी वर्णों का पूर्ण उच्चारण होता है, इसलिए हिन्दी के शब्दों के अंत में 'अ' का भी वे पूर्ण उच्चारण करते हैं जिससे ये त्रुटियाँ उनसे हो जाती है ।

ह्रस्व स्वर का दीर्घ स्वर के रूप में उच्चारण करने की त्रुटियाँ ये जाने-अनजाने अपनी मातृभाषा के प्रभाव, हिन्दी के प्रति लगाव तथा सही शिक्षण और अभ्यास की कमी के कारण करते हैं । क्योंकि हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढनेवाले छात्रों में हिन्दी के स्वरों के उच्चारण में त्रुटियाँ कम पायी गयी । हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में लेकर पढनेवाले ५० छात्रों में से ४८ छात्रों ने अब, बादल, रत्न, इनाम, कोहिमा, कवि, उसका, बहुत और दयालु जैसे शब्दों के उच्चारण में कोई त्रुटियाँ नहीं की । हिन्दी के स्वरों के दीर्घीकरण की त्रुटियों को इस सारणी द्वारा दर्शाया गया है :-

सारणी -१

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्याँ
			आदि	मध्य	अंत	
			अब	बादल	रत्न	
दीर्घीकरण	अ>आ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं	नही	नहीं	४८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	४२
	इ>ई	प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	इनाम	कोहिमा	कवि	
			नहीं	नहीं	नहीं	४२
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३८
	उ>ऊ	प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	उसका	बहुत	दयालु	
			नहीं	नहीं	नही	४२
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३४
				कुल त्रुटियाँ	=	११४

ह्रस्वीकरण

उच्चारण परीक्षण के दरम्यान कन्नड भाषी छात्र दीर्घ स्वरों को ह्रस्व स्वर के रूप में भी उच्चरित करते पाये गए हैं । ये आ, ई, ऊ के स्थान पर क्रमशः अ, इ और उ का उच्चारण करते पाए गए । आ के स्थान पर अ का उच्चारण ये प्रायः शब्दों के आदि और मध्य में ज्यादा करते हैं । कभी-कभी वे शब्दों के अंत में भी ऐसी त्रुटियाँ करते पाए गए । ५० में से २६ छात्रों ने आप को अप, समान को समन तथा अपना को अपन उच्चरित किया । इसी तरह ५० में २८ छात्रों ने ईशु को इशु, जमीन को जमिन और धरती को धरति के रूप में उच्चरित किया । ऊन को उन, खजूर को खजुर और लडाकू को लडाकु के रूप में उच्चरित वाले छात्रों की संख्या ५० में से २४ थी । कन्नड़ भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों की अपेक्षा हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में लेकर पढ़नेवाले छात्रों में ये त्रुटियाँ बहुत ही कम पायी गई । हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में लेकर पढ़नेवाले ५० छात्रों में से ४६ छात्रों ने आप, समान तथा अपना को सही-सही उच्चरित किया । ईशु, जमीन और धरती को उच्चरित करनेवाले छात्रों की संख्या भी ४२ रही और ऊन, खजूर और लडाकू को सही-सही उच्चरित करनेवाले छात्रों की संख्या भी ५० में से ४८ थी ।

कन्नड भाषी छात्रों के हिन्दी स्वरों के उच्चारण में ह्रस्वीकरण से संबंधित त्रुटियों को इस सारणी में भी दर्शाया गया है ।

सारणी -२

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्यों
ह्रस्वीकरण	आ>अ		आदि	मध्य	अंत	
			आप	समान	अपना	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	२६
	ई>इ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर	इशु	ज़मीन	धरती	
		पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४२
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	२८
	ऊ>उ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर	ऊन	खजूर	लड़ाकू	
		पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	२४
					कुल त्रुटियाँ =	७८

स्वर व्यत्यय और संध्यक्षर

कन्नड भाषी छात्र स्वर व्यत्यय भी करते पाए गए । यह प्रवृत्ति उनमे शब्दो के आदि, मध्य और अंत कहीं भी देखने को मिल गया । उदाहरणार्थ:- ५० में से ३६ कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने ओर को और, कठोर को कठोर ओर देखो को देखो के रूप में उच्चरित किया । इसके अतिरिक्त ऐ का उच्चारण वे आइ की तरह करते पाए गए । इसलिए ५० में से ३० छात्रों ने ऐसा को आइसा, विषैला को विषआइला और बरबै को बरबाई उच्चरित किया । ये त्रुटियाँ कन्नड भाषी छात्र अपनी मातृभाषा के प्रभाव के कारण करते हैं । क्योंकि ऐ वर्ण का कन्नड भाषा में उच्चारण आई जैसा होता है । कन्नड में ए, एं दो होते है और इसमें एक ह्रस्व तथा दुसरा दीर्घ होता है । इसलिए वे एक को ऐक, अकेली को अकैली और लड़के को लडके जैसा उच्चारण करते हैं । उच्चारण परीक्षण तालिका के आधार पर ५० में से २७ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने एक, अकेली और लड़के के उच्चारण में ए के दीर्घ स्वर का प्रयोग किया । तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले ५० में से ३५ ने भइया का भेया तथा प्रथम भाषा के रुप में हिन्दी पढनेवाले ५० में से सभी ने भइया को भइया ही उच्चरित किया । इसी तरह ओ भी कन्नड में दो होते हैं जिसमें एक ह्रस्व और दुसरा दीर्घ होता है । स्वरों के निश्चित मात्रा की जानकारी न होने तथा भ्रम की वजह से ये कन्नड भाषी ५० में से ३० तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र औरत को ओरत, सरौता को सरोता तथा चसौत को चसोत उच्चरित करते पाए गए । मगर हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में लेकर पढनेवालों में स्वर व्यंजन की ये त्रुटियाँ काफी कम पायी गई । क्योंकि ५० में से ४९ छात्रों ने ओर, कठोर और देखो को सही रूप में उच्चरित किया । ५० में से ४८ छात्रों ने ऐसा, विषैला और बरबै को सही उच्चरित किया । इसी तरह ५० में ५० ने एक अकेली और लड़के का सही उच्चारण किया तथा ५० में से ४८ ने सरौता, औरत और चसौत का उच्चारण सही रूप में किया । कन्नड भाषी छात्रों के स्वर व्यत्यय और संध्यक्षर संबंधी त्रुटियों को निम्नलिखित सारणी द्वारा भी दर्शाया गया है ।

सारणी -३

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषेक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
स्वर व्यत्यय/ सध्यक्षर	ओ>औ		आदि	मध्य	अत	
			ओर	कठोर	देखो	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४९
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३६
स्वर व्यत्यय	ऐ>आइ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर	ऐसा	विषैला	बरतै	
		पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर				
		पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३०
सध्यक्षर	इ>ऐ	पथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर	एक	अकेली	लड़के	
		पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर				
		पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	२७
सध्यक्षर	औ>ओ		औरत	सरौता	चसौत	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर				
		पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर				
		पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३०
सध्यक्षर	अई>ए		x	भइया>भया	x	
		प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	नहीं	हाँ	नहीं	३५
						कुल त्रुटियाँ =५५८

स्वर अप्रयोग

कन्नड भाषी छात्र अपनी मातृभाषा प्रभाव के कारण अपने कन्नड के ळ( ) जो हिन्दी में नहीं है के कारण हिन्दी शब्दों के आदि, मध्य और अंत कहीं भी त्रुटियाँ करते पाए गए । उदाहरणार्थ ५० में से १५ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने ललक को ळळक, खलल को खळळ और सरल को सरळ के रूप में उच्चरित किया । इसी तरह ५० में २१ ने आइए को आए, खाइए को खाए और जाइए को जाए भी उच्चरित किया । पदबंध के स्तर पर भी ५० में से ८ छात्रों ने ले आया को लेया उच्चरित किया । इसी तरह ५० में से ३५ छात्रों ने भइया को भया उच्चरित किया । कन्नड भाषी छात्रों के हिन्दी उच्चारण में स्वर अप्रयोग संबंधी त्रुटियों को इस सारणी में भी देखा जा सकता है ।

सारणी - ४

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	मात्रिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
स्वर लोप	इ>ए		आदि	मध्य	अंत	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	आइए> आऐ नहीं	नही	नही	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं	हाँ	नहीं	२१
			ललक	खलल	सरल	
स्वर लोप	ल>ळ	प्रथम भाषा के रूप रूप मे हिन्दी पढनेवाले छात्र	नहीं	नही	नही	५०
		तृतीय भाषा के के रूप मे हिन्दी पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	१५
					कुल त्रुटियाँ	= ३६

संकीर्ण दोष

ऊपर बताए गए हिन्दी के स्वर ध्वनियों के उच्चारण की त्रुटियों के अतिरिक्त कन्नड भाषी छात्र कुछ ऐसी त्रुटियाँ भी करते हैं, जो सामान्य तौर पर किसी भी क्रम में नहीं रखा जा सकता । जैसे-अब को अबू, रत्न को रत्नू, कवि को कविऊ, धरती को धरतीऊ, अकेली को अकैली, औरत को औरथ, सरौता को सरुथा, चसौत को चसूतू आदि । यह कन्नड के उकार बहूला भाषा होने के प्रभाव के कारण ही हुआ है क्योंकि प्रथम भाषा के रूप में पढनेवालों में ये त्रुटियाँ नही है ।

व्यंजन ध्वनियों को पढ़ने में होनेवाली उच्चारणगत त्रुटियाँ

आठवीं कक्षा के कन्नड भाषी छात्रों के उच्चारण परीक्षण के आधार पर ज्ञात हुआ कि ये व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में भी अनेक प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं । ये त्रुटियाँ निम्नलिखित हैं :-

अल्पप्राण-महाप्राण तथा सघोष-अघोष

कन्नड भाषी आठवीं कक्षा के छात्रों द्वारा हिन्दी ध्वनियों के उच्चारण में प्राय: अल्पप्राण ध्वनियों की जगह महाप्राण तथा महाप्राण की जगह अल्पप्राण के प्रयोग को देखा गया । वे भ का ब, ध का द, झ का ज, घ का ग, फ का प, त का थ, छ का च और ख का क उच्चारण करते पाए गए । ऐसा वे शब्दों के आदि, मध्य और अंत कहीं भी करते पाये गये । यथा -- ५० कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों में से ४७ ने भवन को बबन, साँभर को साँबर, लाभ को

लाब, धन को दन, विधवा को विदवा, मगध को मगद, झगड़ा को जगडा, झंझट को जंजट, समझ को समज, घतासी को गतासी, सधन को सगन, बाध को बाग, फसल को पसल, सफल को सपल, बरफ को बरप, तबला को थबला, कातर को काथर सात को साथ । छल को चल, बछडा को बचड़ा, छाछ को चाच, खटमल को कटमल, मुखड़ा को मुकड़ा और लाख को लाक उच्चारण किया ।

इसके विपरीत, प्रथम भाषा हिन्दी पढ़नेवाले ५० में से ४९ छात्रों ने इन शब्दों का सही उच्चरित किया ।

महाप्राण-अल्पप्राण और सघोष-अघोष के रूप में होनेवाली उच्चारणगत त्रुटियाँ इस सारणी में भी दर्शाया गया है ।

सारणी -५

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्याँ
महाप्राण अल्पप्राण	भ>ब		आदि भवन	मध्य सॉभर	अंत लाभ	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४९
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढ़नेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	४७
	ध>द	प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	धन नहीं	विधवा नहीं	मगध नहीं	४९

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की सख्याँ
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	४७
	झ>ज	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	झगड़ा झंझट समझ नहीं नही नहीं	४९
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	४७
	घ>ग	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	घतासी सघन बाघ नहीं नहीं नहीं	४९
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	४७
	फ>प	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	फसल सफल बरफ नहीं नही नहीं	४९
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	४७
	त>थ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	तबला कातर सात नहीं नही नहीं	४९
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	४७

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्याँ
	छ>च	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	छल बछड़ा छाछ नहीं नहीं नहीं	४९
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	४७
	ख>क	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	खटमल मुखड़ा लाख नहीं नहीं नहीं	४९
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	४७
			कुल त्रुटियाँ - ३७६	

मूर्धन्य - दंत्य

कन्नड भाषी छात्रों के उच्चारण परीक्षण मे पाया गया कि ये मूर्धन्य ध्वनियों के स्थान पर दंत्य ध्वनियों का प्रयोग भी करते हैं । यथा - ट का त और ढ का ड द तथा ढ का द । सर्वेक्षण के परीक्षण मे ५० मे से ३२ कन्नड-भाषी तृतीय भाषा के रूप मे हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने टमाटर को तमातर, मटर को मतर, खाट को खात और १४ ने टमाटर, मटर, खाट उच्चारण किया । इसी तरह ५० मे से २७ छात्रो ने डमरू को दमरू, खण्डन को खण्दन और घमण्ड को घमणद उच्चरित किया । ठठेरा, बैठना और आठ को ततेरा, बैतना और आत बोलनेवाले की संख्याँ ५० मे से २३ थी । इसी तरह, ढक्कन, ढोता और बुड्ढी बोलनेवाले ५० मे से ३८ कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप मे हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने क्रमशः दक्कन, दोता और बुद्दी उच्चरित किया । जबकि प्रथम भाषा हिन्दी पढनेवाले छात्रो ने टमाटर, मटर, खाट, डमरू, खण्डन, घमण्ड, ठठेरा, बैठना और आठ का उच्चारण ५० मे से ५० ने सही किया । इसे निम्नलिखित सारणी द्वारा भी दर्शाया गया है ।

सारणी - ६

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्याँ
मूर्धन्य-दंत्य	ट>त		आदि	मध्य	अंत	
			टमाटर	मटर	खाट	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३२
	ड>द	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर	डमरू	खण्डन	घमण्ड	
		पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	२७
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर	ठठेरा	बैठना	आठ	
		पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	२३
	ड>द	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर	ढक्कन	ढोता	बुड्ढी	
		पढनेवाले छात्र	नही	नही	नही	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३८
					कुल त्रुटियाँ = १२०	

उष्म ध्वनियाँ

उच्चारण परीक्षण से पता चला कि ५० में से ३८कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र श का उच्चारण दंत्य स करते हैं । यथा उन्होंने शक्कर को सक्कर, मशक को मसक तथा यश को यस उच्चरित किया जबकि प्रथम भाषा हिन्दी पढनेवाले ५० छात्रों में ३८ ने इसे सही उच्चरित किया । निम्नलिखित सारणी में भी उसको दर्शाया गया है ।

सारणी -७

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्याँ
उष्म ध्वनियाँ	श>स		आदि मध्य अंत शक्कर मशक यश	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं नहीं नहीं	४०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	३८
			कुल त्रुटियाँ	= ३८

उत्क्षिप्त-लुंटित

कन्नड भाषी छात्र ड और ढ का उच्चारण रअ भी करते पाये गए । ५० में से १५ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने लडका को लरका, पहाड

को पहार, पढता को परथा तथा बाढ को बार उच्चरित किया । जबकि प्रथम भाषा हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्रों ने ५० में से ३६ ने इन शब्दों का सही उच्चारण किया । इसे इन सारणी से भी दर्शाया गया है । यथा :-

सारणी - ८

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्याँ
			आदि	मध्य	अत	
उक्षिप्त-लुंठित	ड>र	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	x	लडका	पहाड	
			x	नहीं	नहीं	३६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	x	हाँ	हाँ	१५
	ढ>र	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	x	पढता	बाढ	
			x	नही	नहीं	३६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	x	हाँ	हाँ	१५
					कुल त्रुटियाँ= 30	

`ह' का प्रयोग

कन्नड भाषी छात्र परीक्षण के दौरान 'ह' का उच्चारण 'अ' के रूप में करते हुए भी पाये गये । ५० में से २१ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने हल्दी को अल्दी, लहर को लअर और बाह को वाअ उच्चरित किया । जबकि सभी हिन्दी प्रथम भाषा पढनेवालों ने इसे सही उच्चरित किया । इसे नीचे सारणी में भी दर्शाया गया है ।

सारणी - ९

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्याँ
ह का अप्रयोग	ह>अ		आदि मध्य अंत हल्दी लहर वाह	
		प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं नहीं नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप मे हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	२१
			कुल त्रुटियाँ	= 21

व्यंजन गुच्छ

व्यजन गुच्छों के उच्चारण में भी कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र त्रुटियाँ करते हैं । ५० में से ४३ छात्रों ने क्रम को करम, विक्रम को विकरम, शुक्र को शुकर उच्चरित किया । इसी तरह ५० में से ४२ छात्रों ने व्यस्त को विअस्त अव्यय को अवियय, कर्तव्य को करतवय, त्यौहार को त्योआर, मनुष्य

को मनुसय,जुल्म को जुल्मअ और किस्म को किसमअ उच्चरित किया । जबकि हिन्दी प्रथम भाषा लेकर पढनेवाले ५० में से ४६ छात्रों ने इन शब्दों को सही उच्चरित किया । इन्हें नीचे सारणी में भी दर्शाया गया है ।

सारणी - १०

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्याँ
व्यंजन सयोग			आदि क्रम	मध्य विक्रम	अंत शुक्र	
	क+र	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	४३
			व्यस्त	अव्यय	कर्तव्य	
	व+य	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नही	नहीं	नही	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	४२
			ग्लानि	x	बाष्प	
	ग+ल ष+प	प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं	नही	नहीं	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	४२

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्याँ
			त्यौहार x मनुष्य	
	त+य ष+य	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं नहीं	४६
		तृतीय भाषा के रूप मे हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ	४२
			x x जुल्म	
	ल+म	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं नहीं नहीं	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	४२
			x x किस्म	
	स+म	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ	४२
			कुल त्रुटियाँ = 253	

संकीर्ण दोष

कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों में व्यंजन संबधी अन्य त्रुटियाँ भी देखने को मिली जिनका कोई क्रम नहीं था । यथा -कृपा को

किरिपा, सवार को सावार बोलनेवाले ५० में से ११ छात्र मिले । लेकिन हिन्दी प्रथम भाषा लेकर पढनेवाले छात्रों में ये त्रुटियां नहीं मिली ।

अनुनासिक ध्वनियों की उच्चारणगत त्रुटियाँ

उच्चारण परीक्षण में दिए गए शब्द सूची-पत्र से चँद्रबिन्दु और अनुस्वार के प्रयोगवाले शब्दों के उच्चारण करने के क्रम में कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने त्रुटियों की । वे अनुनासिकता का उच्चारण निरनुनासिक के रूप में या नासिक्य ध्वनि के रूप में करते पाये गये ।

अनुनासिक - निरनुनासिक

कन्नड भाषी छात्र अनुनासिकता का उच्चारण निरनुनासिक रूप में शब्दों के तीनों जगह में करते पाये गए । ५० में से ४४ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने आँचल को आचल, पहुँच को पहुच, कहाँ को कहा उच्चरित किया।

अनुनासिक-नासिक्य

इसी तरह अनुनासिकता का उच्चारण वे नासिक्य ध्वनि के रूप में शब्द के सभी जगहों में करते हुए पाये गये । ५० में से ३२ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने चाँद को चानद, छलाँग को छलान्ग और हैं को है उच्चरित किया । लेकिन प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों में ५० में से ३६ ने इसे शुद्ध-शुद्ध उच्चरित किया ।

इसे नीचे की सारणी में भी दर्शाया गया है ।

सारणी - ११

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्याँ
चंद्रबिंदु और अनुस्वार	अनुनासिकता		आदि मध्य अंत	
		आँचल पहुँच कहाँ → प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर		
	निरनुनासिकता	पढनेवाले छात्र	नहीं नहीं नही	३६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	४६
			चाँद छलाँग है	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	नहीं नहीं नही	३६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	३२
			कुल त्रुटियाँ	= 76

चतुर्थ अध्याय

* कन्नड भाषी छात्रों की हिन्दी भाषा को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ
* स्वर, व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ
* स्वर ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ
* दीर्घीकरण
* ह्रस्वीकरण
* स्वर व्यत्यय
* संध्यक्षर ध्वनियाँ और स्वर अप्रयोग
* संकीर्ण दोष
* व्यंजन ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ
* अल्पप्राण - महाप्राण
* अघोष - सघोष
* उष्म ध्वनियाँ
* उत्क्षिप्त - लुंठित
* 'ह' का प्रयोग
* व्यंजन गुच्छ
* संकीर्ण दोष
* अनुनासिक ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ
* अनुनासिक - निरनुनासिक
* अनुनासिक - नासिक्य
* वाक्य, गद्यांश, पद्यांश तथा अन्य भाषिक संरचना विशेष को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ * वाक्य * गद्यांश * पद्यांश * अन्य भाषिक रचनाएँ

चतुर्थ अध्याय

कन्नड भाषी छात्रों की हिन्दी सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ

सामान्यतः सुनने में होनेवाली त्रुटियों के लिए श्रवणेन्द्रियों का समुचित विकास, सुननेवालों के लिए श्रवणीय भाषा की संरचना की जानकारी, ध्यान की एकाग्रता, सुनानेवालों के भाषाई व्यवहार में भाषिक ईकाइयों के शुद्ध उच्चारण और भाषा की संरचनात्मक ईकाइयों और उनकी अर्थ व्यवस्था का समानान्तर प्रयोग में समुचित लय के प्रयोग की अनिवार्यता आदि महत्वपूर्ण जिम्मेवार कारक हैं । अगर किसी भी उम्र या वर्ग के छात्रों/व्यक्तियों के श्रवणेन्द्रियों का समुचित विकास किन्हीं कारणों से नहीं हो पाया हो या उनकी श्रवणेन्द्रियों में कोई खामियाँ आ जाए तो स्वाभाविक है कि सुननेवाले को किसी तरह की ध्वनियों को सुनने में त्रुटियाँ होगी ही । ऐसे छात्र/व्यक्ति विकलांग श्रेणी में आ सकते हैं और बधिरों को एक विशेष प्रकार की शिक्षा पद्धति के माध्यम से ही शिक्षित करने का प्रयास किया जा सकता है । ठीक इसी तरह से अगर सुननेवाले को १० से १५ या २० डी.बी.तक की ध्वनियों को सुनाया जाए तो उनकी श्रवणेन्द्रियाँ सही और समुचित रूप से श्रवणीय ध्वनियों और तथ्यों को सुन सकता है, क्योंकि मनुष्य के श्रवणेन्द्रियों के अनुसार १० से १५ डी.बी. तक की ध्वनियाँ सुनने के लिए उपयुक्त और सही है । ज्यादा कम डी.बी. या ज्यादा अधिक डी.बी.की ध्वनियाँ किसी भी सामान्य छात्र/व्यक्ति के लिए त्रुटियाँ उत्पन्न कर सकती है ।

प्रस्तुत अध्ययन के अध्येता ने सुनने की कुशलता के परीक्षण के लिए जो शब्दसूची-पत्र और गद्यांशों/पद्यांशों पर आधारित सामग्री से रिकार्डेड कैसेट तैयार किया उसे १० से २० डी.बी. के ध्वनि गति से ही छात्रों को सुनाया गया है । जो सामान्य श्रवणेन्द्रियों के अनुकूल है । तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले आठवीं कक्षा के कन्नड भाषा-भाषी छात्रों के सुनने की कुशलता के परीक्षण के दरम्यान अध्येता ने पाया

कि अधिकांशत: कन्नड भाषी छात्र हिन्दी भाषा की संरचना से पूर्णत: वाकिफ नहीं है । चूँकि शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी होने के कारण और मातृभाषा कन्नड होने के कारण उनकी श्रवणेंन्द्रियाँ कन्नड और अंग्रेज़ी के ध्वनिक्रमों को सुनने, समझने, पढने, लिखने और वाचन की अभ्यस्त होती है । इसलिए उनका ध्यान कन्नड और अंग्रेज़ी भाषा कि ध्वनि संरचनाओं की ओर अधिक होता है । इसके विपरीत हिन्दी भाषा को सिर्फ परीक्षा पास करने की भाषा या अल्प प्रयोग करने के कारण महत्वहीन भाषा समझने की मानसिकता के कारण तथा इसके ध्वनि व्यवस्था के प्रति ज्यादा सजग नहीं रहने की प्रवृत्ति के कारण इनके ध्वनियों को सुनने में वे त्रुटियाँ करते हैं । इसके परिणामस्वरूप वे हिन्दी अक्षरों, शब्दों, वाक्यों तथा उनसे संबंधित पद्यांशों/गद्यांशों और अवतरणों को अच्छी तरह नहीं समझ सकते हैं । इसके लिए उनके निजी रुचि, स्वभाव और प्रवृत्ति को जिम्मेदार माना जा सकता है । मगर, वातावरण, परिवेश, संस्कृति, आर्थिक संबद्धता और समुचित शिक्षण व्यवस्था को भी कम जिम्मेवार नहीं समझा जा सकता । क्योंकि अध्येता ने मैसूर के चार विद्यालयों के १०० छात्रों को सर्वेक्षण के लिए नमूने के रूप में ५० कन्नड भाषी और ५० हिन्दी भाषी छात्रों के श्रवण कौशल का परीक्षण किया और उनमें से हिन्दी ध्वनियों के अक्षरों, शब्दों, वाक्यों, गद्यांशों, पद्यांशों और अवतरणों को सुनने में सबसे अधिक त्रुटियाँ वैसे छात्रों में हुई, जिनकी मातृभाषा कन्नड थी । उदाहरण केलिए ५० कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों में से ३० ने हिन्दी के स्वरों, व्यंजनों, अनुनासिकता से संबंधित त्रुटियाँ की । इसके विपरीत ५० छात्र हिन्दी भाषी छात्र थे और प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढनेवाले थे । उन्होंने बहुत ही कम त्रुटियाँ की । ५० में से ७ छात्रों ने हिन्दी के स्वर, व्यंजन और अनुनासिकता से संबंधित ध्वनियों को सुनने में त्रुटियाँ की । अध्येता ने इसके अतिरिक्त उनके श्रवण कौशल परीक्षण के लिए हिन्दी के कुछ महत्वपूर्ण लेखकों/कवियों और रचनाकारों की रचनाओं से

अंशों/अवतरणों पर आधारित कुछ सरल सवालों के उत्तर जानने की कोशिश की । जिससे उनके श्रवण कौशल को सही तरीके से जाँचा जा सके । परिणामस्वरूप ५० में से ५० कन्नड भाषी छात्र इन सवालों का सही और सटीक उत्तर देपाने में असफल रहें । क्योंकि उन्होंने हिन्दी के ध्वनियों को ठीक से नहीं सुना तथा उनसे निकलनेवाले अर्थों को ठीक से नहीं समझ पाए । छात्रों के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश सहित उनके हिन्दी शिक्षण संबंधी रुचि-रुझानों का पता लगाने के लिए उन्हें प्रश्नावली भी वितरित किया गया ताकि उनके सुनने में होनेवाली त्रुटियों की जानकारी का पता हो पाए । ५० में से ५० कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों से प्रश्नावली के आधार पर मिली जानकारी से पता चला कि वर्गाध्यापन के क्रम में उनके शिक्षकों द्वारा हिन्दी के जिन ध्वनियों को सही से उन्हें सुनाने का कार्य संपन्न नहीं हो पाया वहाँ वे त्रुटियाँ स्वाभाविक रूप से करते हैं । ठीक इसके विपरीत शिक्षकों के अध्यापन से उन्हें जितनी शुद्धता प्राप्त हुई उसका वे सही रूप से भाषा अध्ययन में आसानी से प्रयोग करते हैं । अध्येता ने सर्वेक्षण के दरम्यान पाया कि हिन्दी भाषा के प्राय: शिक्षक जो अहिन्दी या कन्नड भाषी थे, जब वे इन कन्नड भाषी छात्रों को हिन्दी पढाते हैं तो वहाँ पर इन शिक्षकों के हिन्दी व्यवहार में हिन्दी के भाषिक इकाइयों के शुद्ध उच्चारण की उन्हें स्वयंमेव समस्याएँ होती है । भाषा की संरचनात्मक इकाइयों और उसके अर्थ व्यवस्था के प्रयोग में प्राय: उनमें भी समुचित लय और मात्रिक उतार-चढाव का अभाव पाया गया । इसलिए ऐसे शिक्षकों द्वारा स्वाभाविक है कि हिन्दी पढाने के क्रम में अक्षरों, शब्दों, वाक्य विन्यासों तथा गद्यांश एवं पद्यांशों का इस्तेमाल किया जाता है तो उसके संप्रेषणीयता मे कुछ न कुछ व्यवधान न होने से छात्रों को भी संप्रेषित भाषा के अनुसार ही त्रुटिपूर्ण भाषिक ध्वनियाँ सुनने को मिलती है जिसे छात्र अपने अध्ययन का हिस्सा समझ उसी के अनुसार अपने भाषिक श्रवण कौशल का अभ्यास के द्वारा विकास

करते हैं । स्वाभाविक है कि एक लंबे समय तक गलत अभ्यास प्रक्रिया से उनकी श्रवणेन्द्रियाँ प्रभावित होती है और उसके सुधार हेतु उन छात्रों को हिन्दी भाषी छात्रों की तरह अधिक और शुद्ध भाषा प्रयोग का परिवेश और वातावरण नहीं प्राप्त होता है । इसी कारणवश वे सुनने में भी त्रुटियाँ करने के आदि हो जाते हैं । जबकि हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढनेवाले छात्रों को अपने परिवार, पडोस और समुदाय का व्यापक परिवेश और वातावरण प्राप्त होता है, जिसके कारण उनके श्रवण कौशल का निश्चित दिशा में विकास होता है और वे सुनने में कम त्रुटियाँ करते हैं ।

ये त्रुटियाँ भ्रम और अज्ञानता के कारण ज्यादा होती है । सामान्यतः: प्राकृतिक ध्वनियों में बादल के गरजने, बिजलियों के कड़कने, बरसात के होने, तूफान के उठने, नदियों एवं झरनों के बहने से लेकर वातावरण और परिवेश के अनुकूल जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों और विभिन्न मनुष्यों के भाषा- बोलियों आदि से उत्पन्न होनेवाली ध्वनियों को सुनने के तुरत बाद कोई भी मनुष्य जिनका इन ध्वनियों से परिचय और अभ्यास है वह तुरंत उसे सुन लेता है तथा उसके बारे में किसी को बताने की क्षमता रखता है कि अमूक ध्वनि अमूक चीज़ की है । मंदिर के घंटे की ध्वनि और स्कूल के घंटियों की ध्वनि के अंतर को कोई भी विद्यार्थी आसानी से बता सकता है यदि उन्हें दोनों के घंटे से उत्पन्न ध्वनियों से साक्षात्कार पहले हो चुका हो । साँप की फूंफकार से उत्पन्न ध्वनियाँ और उसके रेंगने से उत्पन्न होनेवाली सरसराहटवाली ध्वनियों के भेद को कोई भी आसानी से बता और समझ सकता है यदि उसे पूर्व से ही उन ध्वनियों की संरचना की जानकारी हो अन्यथा वह भ्रम कर सकता है और उससे त्रुटियाँ हो सकती है । इसीलिए अपनी मातृभाषा और परिचित तथा ज्ञात भाषा के अतिरिक्त जब कोई भी छात्र या व्यक्ति किसी अन्य अपरिचित और अज्ञात भाषा को सीखने के दरम्यान पढता, सुनता, लिखता और बोलता-समझता है तो सीखे जानेवाली भाषा की ध्वनियों की समुचित जानकारी के

अभाव और अज्ञानतावश वह त्रुटियाँ करने को बाध्य हो जाता है । उदाहरणार्थ कन्नड के 'बात' शब्द की ध्वनियों से हिन्दी भाषी छात्र, 'वक्ता के वक्तव्य' या 'कथन' का अर्थ ग्रहण करेंगे । उसी तरह हिन्दी के 'कागद' और 'लोटा' शब्द से कन्नड भाषी 'चिट्ठी' और 'ग्लास' का अर्थ ग्रहण करेंगे । जबकि हिन्दी में 'कागद' का अर्थ 'पन्ना' और 'लोटा' का अर्थ पानी रखने का बडा और गोल बर्तन होता है । राजस्थान में मृगमरीचिका के भ्रम से जिस तरह जल होने का आभास किसी भी व्यक्ति को होता है ठीक उसी ढंग से दूसरी या अज्ञात भाषा की ध्वनियों को सुनने से कुछ भूल और त्रुटियों का होना स्वाभाविक ही है । ये भूल या त्रुटियाँ अन्य भाषा के शिक्षण में कहीं भी देखने को मिल सकती है ।

मैसूर के आठवी कक्षा के चार विद्यालयों के क्रमशः पचास-पचास कन्नड और हिन्दी भाषी छात्रों के श्रवण कौशल परीक्षण से प्राप्य आँकड़ों के आधार पर यहाँ उनके सुनने में होनेवाली त्रुटियों को इस प्रकार वर्गीकृतकरने का प्रयास किया गया है । यथा:-

स्वर व्यंजन तथा अनुनासिक ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ

सामान्यतः जो त्रुटियाँ ये छात्र पढ़ने में करते हैं लगभग वैसी ही त्रुटियाँ वे सुनने में भी करते हैं, क्योंकि हिन्दी भाषा की अपनी विशेषता है कि इसमें जो उच्चरित किया जाता है, वही लिखा भी जाता है । अर्थात् पढ़ने में यदि वे दीर्घीकरणवाली त्रुटियाँ करते है तो सुनने में भी वे ध्वनियों को दीर्घीकृत रूप में ही सुनने की त्रुटियाँ करते है ।

स्वर ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ

दीर्घीकरण

श्रवण कौशल परीक्षण के लिए शब्द सूची-पत्र में दिए गए स्वरों से संबंधित ध्वनियों के परीक्षण के लिए कन्नड भाषी ५० छात्रों तथा प्रथम भाषा के रूप में पढ़नेवाले ५० छात्रों को बारी-बारी से व्यक्तिगत तौर पर तैयार किए गए रिकार्डेड मॉडल कैसेट से

१० से २० डी.भी वाली ध्वनि गतिक्रम से हिन्दी के स्वरों के लिए निम्नलिखित शब्दों को सुनाया गया । यथा --

अब, बादल, रत्न, इनाम, कोहिमा, कवि. उसका, बहुत, दयालु, एक, अकेली, लड़के, ओर, कठोर तथा देखो ।

पुनः उनसे वही शब्द बोलने के लिए कहा गया, जिसमें ५० में से ३२ कन्नड़ भाषी तृतीय भाषा के रूप में पढ़नेवाले छात्रों ने अब को आब, बादल को बादलअ, रत्न को रत्ना. इनाम को ईनामअ, कोहिमा को कोहीमा, कवि को कवी, उसका को ऊसका, बहुत को बहूतअ, दयालु को दयालू, एक को ऐक, अकेली को अकेली तथा लडके को लडके के रूप में उच्चरित किया । इसके विपरीत हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में लेकर पढ़नेवाले ४१ छात्रों ने ऊपर दिए गए शब्दों को सही रूप में उच्चरित किया । इससे स्पष्ट होता है कि कन्नड़ भाषी छात्रों को सुनने में त्रुटियाँ हुई जिसके परिणामस्वरूप उनकी वागेन्द्रियों के द्वारा ऊपर दिए गए शब्दों का गलत उच्चारण हुआ । जबकि हिन्दी प्रथम भाषा लेकर पढ़नेवाले ४१ छात्रों की श्रवणेन्द्रियों द्वारा उन शब्दों को सही रूप में सुना गया । इसलिए उन छात्रों ने दिए गए शब्दो में स्वरों के उच्चारण को श्रवणेन्द्रियो के सही संकेतानुसार सही रूप में उच्चरित किया । हिन्दी के स्वर ध्वनियों को सुनने में कन्नड़ भाषी छात्र शब्द के आदि, मध्य और अंत किसी भी स्थिति में त्रुटियाँ कर सकते हैं । इसे इस सारणी में भी दर्शाया गया है ।

सारणी -१२

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
दीर्घीकरण	अ>आ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	अब	बादल	रत्न	
		छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४५
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३२
	इ>ई	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	आप	कोहिमा	कवि	
		छात्र	नही	नही	नही	४१
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३२
	उ>ऊ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	उसका	बहुत	दयालु	
		छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४१
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३२

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्या
	ए>ऐ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	एक अकेली लड़के	
		छात्र	नहीं नहीं नहीं	४१
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले		
		छात्र	हाँ हाँ हाँ	३२
	ओ>औ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	ओर कठोर देखो	
		छात्र	नहीं नहीं नहीं	४१
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले		
		छात्र	हाँ हाँ हाँ	३२
			कुल त्रुटियाँ = 160	

ह्रस्वीकरण

श्रवण कौशल परीक्षण से ज्ञात हुआ कि कन्नड भाषी छात्र पढने की तरह सुनने में भी ह्रस्वीकरण से संबधित त्रुटियाँ करते हैं । ५० कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों में से १५ ने आप को अप, समान को समन, अपना को आपन, ऊन को उन, खजूर को खजुर, लड़ाकू को लड़ाकु, ऐसा को एसा, विषैला को विषेला, बरवै को बरवे, औरत को ओरथ, सरौता को सरोथा तथा चसौत को चसोथ के रूप में सुनने की त्रुटियाँ की । जबकि हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में लेकर पढनेवाले ५० में से

४६ छात्रों ने दिए गए शब्दों को सुनने के बाद उसे सही-सही उच्चारित किया । अतः स्पष्ट होता है कि कन्नड़ भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने सुनने में अधिक त्रुटियाँ की तथा हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में लेकर पढ़नेवाले छात्रों ने कम त्रुटियाँ की । इसे इस सारणी में भी दर्शाया गया है । यथा:-

सारणी -१३

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
ह्रस्वीकरण	आ>अ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	आग	समान	अपना	
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४६
			हाँ	हाँ	हाँ	१५
	ऊ>उ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	ऊन	खजूर	लड़ाकू	
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४६
			हाँ	हाँ	हाँ	१५
	ऐ>ए	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	ऐसा	विषैला	बरवै	
			नहीं	नहीं	नहीं	४६

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्या
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	१५
	औ>ओ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	औरत सरौता चसौत नहीं नहीं नहीं	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	हाँ हाँ हाँ	१५
			कुल त्रुटियाँ =	६०

स्वर व्यत्यय

अपनी मातृभाषा के प्रभाव तथा अभ्यास में शुरु से ही त्रुटियों के समावेश हो जाने के कारण ये कन्नड़ भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र ~~असोक~~ औ को औ या ऊ और ओ को ~~अ~~ ऊ तथा इ को ई एवं ए को है के रूप में सुनने की त्रुटियाँ करते है । क्योंकि ५० में से २६ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने क्रमशः ओर, कठोर, देखो, ऐसा, विषैला, बरवै, भईया तथा धरती को सुनने के बाद भी और, कठौर, देखौ, आइसा, विषाइला, बरवाई, भेया और धरती के रूप में उच्चरित किया । जबकि हमेशा प्रयोग एवं हिन्दी से लगाव के कारण उसकी ध्वनियों से संबद्धता और अभ्यास की शुद्धता के कारण हिन्दी प्रथम भाषा लेकर पढ़नेवाले सभी ५० छात्रों में ये स्वर व्यत्यय की त्रुटियाँ नगण्य देखने को मिली । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा:-

65254

सारणी - १४

Regional Institute of Education MYSORE LIBRARY

372.4122
SU955

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्रथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
स्वर व्यत्यय	ओ>औ		ओर	कठोर	देखो	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	२६
	ऐ>आई		ऐसा	विषैला	बरवै	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	२६
	इ>ए		x	भइया> भैया	x	
		प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	x	नहीं	x	50
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	x	हाँ	x	२६

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
	ई>इ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	x	x	घरती नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	x	x	हाँ	२६
					कुल त्रुटियाँ = 104	

संध्यक्षर ध्वनियाँ और स्वर अप्रयोग

कन्नड में सभी स्वरों को पूर्ण रूप से उच्चरित किया जाता है, जिसके कारण ये कन्नड भाषी छात्र स्वाभाविक रूप से शब्दों में स्वरों की ध्वनियों को पूर्ण रूप में सुनने के आदि हो जाते हैं । परिणामत: हिन्दी के संध्यक्षर स्वर ध्वनियों को सुनने में ये त्रुटियाँ करते हैं । इसलिए अध्येता ने श्रवण कौशल परीक्षण के दरम्यान पाया कि ५० में से ५५ कन्नड भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने पैदल, विषैला, बरवै, औरत तथा सरौता को सुनने में त्रुटियाँ की, क्योंकि इन शब्दों को सुनने के बाद भी उन्होंने इसका उच्चारण क्रमश: पेदल, विषेला, बरवे, ओरथ तथा सरोथा ही उच्चरित किया । जबकि हिन्दी प्रथम भाषा लेकर पढनेवाले ५० में से ४६ छात्रों ने इसे सही सुना और सही उच्चरित भी किया । हिन्दी भाषा की ध्वनि संरचनाओं की कम जानकारी, भ्रम और अज्ञानता के कारण ही कन्नड भाषी छात्र कभी कभी शब्दों के तहत आनेवाले मध्य स्वर को ठीक से नहीं सुनने की त्रुटियाँ करते हैं । क्योंकि ५० में से ५८ कन्नड भाषी तृतीय

भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने घुइया और दहेंडी को सुनने के बाद घुंया और देंडी उच्चरित किया । जबकि ५० में से ५० प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने इसे सही सही सुना और सही-सही उच्चरित भी किया । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा:-

सारणी - १५

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्या
			आदि मध्य अंत	
संध्यक्षर	ऐ>ए	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	पैदल विषैला बरयै	
		छात्र	नहीं नहीं नहीं	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले		
		छात्र	हाँ हाँ हाँ	१५
	औ>ओ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	औरत सरौता x	
		छात्र	नहीं नहीं x	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले		
		छात्र	हाँ हाँ x	१५

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्या
स्वर अप्रयोग	स्वर-लोप	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	x धुइया> x धुया दहेंडी>देडी x नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	x हाँ x	18
			कुल त्रुटियाँ = 38	

संकीर्ण दोष

हिन्दी की ध्वनियों को सुनने के क्रम में कन्नड़ भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र भ्रम, अरुचि और अज्ञानता के कारण भी कुछ अन्य प्रकार की त्रुटियाँ करते हैं । जैसे - कवि को कवी, प्रतिष्ठा को प्रतीष्ठा, अब को आबअ, बादल को बादलअ/बादलू तथा रत्न को रत्नू आदि । जबकि हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढ़नेवाले छात्र ऐसी सुनने की त्रुटियाँ नहीं के बराबर ही करते हैं । ऐसा श्रवण कौशल परीक्षण के दरम्यान अध्येता को उनके भाषा प्रयोग व्यवहार से ज्ञात हुआ । ५० में से २१ कन्नड़ भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने इस तरह की सुनने में त्रुटियाँ की जबकि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी लेकर पढ़नेवाले ५० में से ४८ छात्रों ने ऐसी त्रुटियाँ सुनने में नहीं की । क्योंकि कन्नड़ भाषी छात्रों के इन शब्दों के उच्चारण में त्रुटियाँ हुई और प्रथम भाषा लेकर पढ़नेवाले छात्रों में से केवल एक छात्र ने सुनने की त्रुटि की । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा :-

सारणी - १६

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
संकीर्ण दोष	इ>ई	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	x	प्रतिष्ठा	कवि	
		छात्र	x	नहीं	नही	४८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	x	x	हाँ	२१
	अ>अ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	अब	बादल	अब	
		छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	२१
					कुल त्रुटियाँ = 42	

व्यंजन ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ

स्वर ध्वनियों के अतिरिक्त तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले कन्नड भाषी छात्र व्यंजन ध्वनियों को भी सुनने में त्रुटियाँ करते हैं । ये त्रुटियाँ ये शब्दों के आदि, मध्य और अंत कहीं भी कर सकते हैं । व्यंजन ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ निम्नलिखित है:-

अल्पप्राण-महाप्राण

भ्रम, भूल, अज्ञानता और अरुचिवश ये छात्र महाप्राण ध्वनियों को अल्पप्राण ध्वनियों के रूप में सुनने की त्रुटियाँ करते हैं । इसलिए, वे भ, घ, झ तथा घ को क्रमशः ब, द, ज तथा ग के रूप में सुनने की त्रुटियाँ करते हैं । उदाहरणार्थ प्रस्तुत अध्ययन के अध्येता ने तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० और प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० छात्रों को क्रमशः निम्नलिखित महाप्राणवाली ध्वनियों से बने शब्दों को सुनाया ।

भवन, साँभर, लाभ, भात, भाभी, धन, विधवा, मगध, धान, उधार, आधी, झगड़ा, झंझट, समझ, झला, सूझना, घतासी, सधन, बाघ, घात, जघन और घाघरा ।

अध्येता ने उपर्युक्त शब्दों को प्रत्येक छात्रों को बारी-बारी से सुनाकर पुनः इन्हें उच्चरित करने को कहा । परिणामस्वरूप ५० में से ३७ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले कन्नड़ भाषी छात्रों ने भवन को बबन, साँभर को साँबर, लाभ को लाब, भात को बात, भाभी को बाबी, धन को दन, विधवा को विदवा, मगध को मगद, धान को दान, उधार को उदार, आधी को आदी, झगड़ा को जगड़ा, झंझट को जंजट, समझ को समज, झला को जला, सूझना को सूजना, साझ को साज, घतासी को गतासी, सघन को सगन, बाघ को बाग, घात को गात, जघन को जगन तथा घाघरा को गागरा के रूप में उच्चरित किया । इससे स्पष्ट होता है कि उन्होंने महाप्राण व्यंजन ध्वनियो को सुनने में त्रुटियाँ की । इसके विपरीत प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी पढ़नेवाले ५० में से ४८ छात्रों ने इन शब्दों को सुनने में त्रुटियाँ नहीं की । क्योंकि उन्होंने इन्हें ठीक से सुना तथा ठीक ढंग से उच्चरित किया । इसे इस सारणी मे दर्शाया गया है । यथा :-

सारणी - १७

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
अल्पप्राण महाप्राण	भ>ब	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	भात/ भवन	सांभर	लाभ	
		छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३७
	घ>द	प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी पढनेवाले	घन	उघार/ विधवा	मगध/ आधी	
		छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३७
	झ>ज	प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी पढनेवाले	झगडा/ झला	सूझना/ झंझट	समझ	
		छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३७

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति	त्रुटियों की संख्या
	घ>ग	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	घतासी/ सघन/ बाघ घाता/ जघन/ घाघरा नहीं नहीं नहीं हाँ हाँ हाँ	४८ ३७
				कुल त्रुटियाँ = 148

अघोष - सघोष

इसी तरह की त्रुटियाँ कन्नड़ भाषी छात्र अघोष-सघोष ध्वनियों को सुनने में भी करते हैं, क्योंकि अध्येता ने छात्रों को पतला, कपड़ा, पाप, वचन, अवसर, मानव, पल, पीता तथा कापी शब्द बारी बारी से सुनाकर उन्हें पुनः उच्चरित करने को कहा । जिसमें ५० में से ४४ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने पतला को फतला, कपड़ा को खपड़ा, पाप को फाफ, वचन को बचन, अवसर को अबसर, मानव को मानब, पल को फल, पीत को फीता और कापी को काफी उच्चरित किया । अतः स्पष्ट है कि इन शब्दों में निहित अघोष ध्वनियों को उन छात्रों ने सघोष रूप में सुनने की त्रुटियाँ की । इसलिए उनके उच्चारण में भी त्रुटियाँ हुई । जबकि हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढ़नेवाले ५० में से ४६ छात्रों ने ऊपर दिए गए शब्दों में अघोष को सघोष के रूप में सुनने की त्रुटियाँ नहीं की । इसलिए उन्होंने सही -सही उच्चारण प्रस्तुत किया । इसे इस सारणी में भी देखा जा सकता है । यथा :-

सारणी - १८

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
अघोष-सघोष	क>ख	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	कपड़ा/ कापी	X	X	
		छात्र	नहीं	X	X	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	X	X	४४
	प>फ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	पाप/ पतला/ पल/पीता	X	X	
		छात्र	नही	X	X	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	X	X	४४
	व>ब	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	वचन	अगसर	मानव	
		छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४६
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	४४
					कुल त्रुटियाँ = 132	

ऊष्म ध्वनियाँ

भ्रम तथा हिन्दी की ऊष्म ध्वनियों के उच्चारण प्रक्रिया की अज्ञानता के कारण ये छात्र श का स सुनने की त्रुटियाँ शब्दों के आदि, मध्य और अंत कहीं भी करते हैं । उदाहरणार्थ :- तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले ५० में से २९ छात्रों ने शक्कर, मशक, यश तथा शुक्र शब्दों को सुनने के बाद भी सक्कर, मसक, यस और सुक्र उच्चरित किया, क्योंकि उन्होंने भ्रमवश श को स के रूप मे सुनने की त्रुटियाँ की । जबकि ५० में से ३८ प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने ऊपर दिए गए शब्दों को सही-सही रूप में सुना तथा सही-सही उच्चरित भी किया । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा :-

सारणी - १९

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
उष्मध्वनियाँ	श>स	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	यश/ शक्कर	मशक	शुक्र	३८
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	२९
			हाँ	हाँ	हाँ	
						कुल त्रुटियाँ = 29

उत्क्षिप्त-लुँठित

अध्येता ने श्रवण कौशल परीक्षण के दरम्यान पाया कि ये छात्र ड को ढ के रूप में सुनने की त्रुटियाँ करते हैं । इसलिए तो तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों को जब चढ़ना, बूढ़ा, पढ़ाई, बाढ, सड़, धरपकड और कपड़ा जैसे शब्दों को सुनाया गया और उन्हें पुनः उच्चरित करने के लिए कहा गया तो तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० में से ३७ छात्रों ने चढ़ना को चड़ना, बूढ़ा को बूडा, पढ़ाई को पड़ाई, बाढ को बाड़, सड को सढ, धरपकड़ को धरपकढ तथा कपड़ा को कपढ़ा के रूप में सुनने की त्रुटियाँ की । क्योंकि उन्होंने इन शब्दों को इसी रूप में उच्चरित किया । इसके विपरीत हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढनेवाले ५० छात्रों में से ४७ ने इसे सही सुना और सही उच्चरित भी किया । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा:-

सारणी - २०

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
उत्क्षिप्त-लुंठित	ड>ढ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	लड़का	सड़/ धरपकड/ कपडा	
			X	नहीं	नही	४७
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	हाँ	हाँ	३७

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
	ढ>ढ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	चढना	बाढ/ बूढा	४७
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	हाँ	हाँ	३७
					कुल त्रुटियाँ= 74	

'ह' का प्रयोग

अध्ययन के दरम्यान परीक्षण से अध्येता को ज्ञात हुआ कि ये छात्र शब्दों के प्रारंभ, मध्य और अंत में 'ह' के उच्चारण को 'अ' की तरह सुनने की त्रुटियाँ करते हैं । क्योंकि तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले ५० में से ४२ छात्रों ने अध्येता द्वारा रिकार्डेड कैसेट से हल्दी, लहर, वाह, वही, कहा, कहीं, नहीं, रही, कहाँ तथा रहो शब्दों को सुनकर पुनः उन्हें निम्नलिखित ढंग से उच्चरित किया । यथा - अल्दी, लअर, वाअ, वयी. कआ, कयी, नयी, रयी, कआ तथा रओ । इससे स्पष्ट होता है कि उन्होंने शब्दों के प्रारंभ, मध्य और अंत में 'ह' के उच्चारण को सुनने में त्रुटियाँ की । जबकि ५० में ५० हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढनेवाले छात्रों ने इन शब्दों को सही-सही सुना और सही-सही उच्चरित किया । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा:-

सारणी - २१

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
ह का अप्रयोग।	ह्>अ	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	हल्दी	लहर	वहीं/वाह/ नहीं/कहा/ कहीं/कहाँ	
			नहीं	नहीं	नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	४२
					कुल त्रुटियाँ = 42	

व्यंजनगुच्छ

कन्नड भाषी छात्र अपनी मातृभाषा के प्रभाव के कारण सभी स्वरों और व्यंजनों को पूर्ण रूप से उच्चरित करते हैं । इसलिए, हिन्दी के व्यंजनगुच्छों के उच्चारण को सुनने में भी ये त्रुटियाँ करते हैं । श्रवण कौशल परीक्षण के दरम्यान तैयार किए गए मॉडल कैसेट से निम्नलिखित शब्दों को प्रत्येक छात्रों को सुनाया गया । यथा:-

क्रम, विक्रम, शुक्र, व्यस्त, अव्यय, कर्तव्य, ग्लानि, वाष्प, त्यौहार, मनुष्य, जुल्म और किस्म । पुनः बारी बारी से सबों से इसका उच्चारण करने के लिए कहा गया । तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले ५० में से ३६ छात्रों ने क्रम को करम, विक्रम को विकरम, शुक्र को शुकर, व्यस्त को विअस्त, अव्यय को अवियय, कर्तव्य को करतव्या, ग्लानि को गलानि, वाष्प को वाषपअ, त्यौहार को तिहौआर, मनुष्य को मनुसय उच्चरित

किया और प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले ५० में से ४३ छात्रों ने इन शब्दों को सही उच्चरित किया । चूँकि तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों से इन शब्दों को सुनने में त्रुटियाँ हुई । इसलिए उन्होंने उच्चारण में त्रुटियाँ की और प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले अधिकांश छात्रों ने सुनने में कोई त्रुटियाँ नहीं की । इसलिए उन्होंने उच्चारण में भी त्रुटियाँ नही की । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा :-

सारणी - २२

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
व्यंजन गुच्छ	क+र	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	क्रम	विक्रम	शुक्र	
		छात्र	नहीं	नही	नही	४३
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३६
	व+य	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले	व्यस्त	अव्यय	कर्तव्य	
		छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	४३
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले				
		छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	३६

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	मातृभाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
	ग+ल	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले	ग्लानि	X	X	
		छात्र	नहीं	X	X	43
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले				
		छात्र	हाँ	X	X	36
	ष+प	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले	X	X	बाष्प	
		छात्र	X	X	नहीं	४३
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले				
		छात्र	X	X	हाँ	३६
	त+य	प्रथम भाषा के	त्यौहार	X	X	
		रूप में हिन्दी पढ़नेवाले	नहीं	X	X	४३
		छात्र				
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले				
		छात्र	हाँ	X	X	३६
	ष+य	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	X	X	मनुष्य	
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले	X	X	नहीं	४३
		छात्र	X	X	हाँ	३६

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	मात्रिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
	ल+म	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	X	जुल्म	
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	X	नहीं	४३
			X	X	हाँ	३६
	स+म	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	X	किस्म	
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	X	नहीं	४३
			X	X	नहीं	३६
					कुल त्रुटियाँ = 288	

संकीर्ण दोष

ये छात्र कुछ अन्य प्रकार की त्रुटियाँ भी करते है, जैसे - द को त सुन लेते है तथा व को ब एवं रि को रु सुन लेते हैं । उदाहरणार्थ - तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले ५० में २९ छात्रों ने खाद, हल्दी, सवार, कृपा को सुनने के बाद भी खात, हल्ती, सबार और क्रृपा के रूप में उच्चरित किया । उसी तरह प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले ५० छात्रों में से किसी ने भी इन्हें सुनने में त्रुटियाँ नहीं की । इसलिए उन्होंने इन्हें सही उच्चरित किया । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा:-

सारणी - २३

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
संकीर्ण दोष	द>त	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	X	खाद/हल्दी/ संसद/परिषद नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	X	हाँ	२९
	द>ब	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	सवार	X	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	X	नहीं	X	२९
	रि>रु	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	कृपा	X	X	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	नहीं	X	X	२९
			हाँ	X	X	
					कुल त्रुटियाँ = 87	

अनुनासिक ध्वनियों को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ

कन्नड़ भाषी छात्र प्राय हिन्दी शब्दों के आदि, मध्य और अंत की स्थितियों में अनुनासिक ध्वनियों को सुनने में त्रुटियाँ करते पाये गये । उदाहरणार्थ - तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० छात्रों को हैं, में, हमें, नहीं, पहुँच, सुनाया गया और पुन: उन्हें उच्चरित करने के लिए कहा गया । जिसमें से ४७ छात्रों ने मे, हमे,नही,पहुच उच्चरित किया । जबकि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० में से ५० छात्रों ने इन शब्दों में अनुनासिक ध्वनियों को सही से सुना और इन्हें सही से उच्चरित किया । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा:-

सारणी - २४

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
अनुनासिक	अनुसार	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	हैं/में	हमें/ नहीं/पहुँच	X	
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	नहीं	नहीं	X	५०
			हाँ	हाँ	X	४७
					कुल त्रुटियाँ =	47

अनुनासिक - निरनुनासिक

श्रवण कौशल परीक्षण के दौरान पाया गया कि ये छात्र अनुनासिक ध्वनियों को

निरनुनासिक रूप में सुनने की त्रुटियाँ करते हैं । ऐसी त्रुटियाँ वे शब्दों के आदि, मध्य और अंत, कहीं भी करते हैं । उदाहरणार्थ - तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० में से ४७ छात्रों ने अँगीठी, महँगा, आँचल, छलाँग, कहाँ, इंगुवा, घुइंया, ईंगुर, परछाईं, उँगली, पहुँच, उँघना, खडाऊँ, रेंगना, दहेंडी, चलें, ऐंठना, हैं, घोंसला, खरोंच, हों, औंधा, घरौंधा और भौं को सुनने के बाद पुनः उच्चारण के लिए कहने पर अगीठी, महगा, आचल, छलाग, कहा, इगुवा, घुइया, ईगुर, परछाई, उगली, पहुच, उघना, खडाऊ, रेगना, दहेडी, चले, ऐठना, है, घोसला, खरोच, हो, औधा, घरौधा और भौ उच्चरित किया । जबकि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने ५० में से सबों ने इन्हें सही सुना और सही उच्चरित भी किया । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा:-

सारणी - २५

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
अनुनासिक	चंद्र-बिंदु	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	अँगीठी/आँचल उँगली/उँघना	महँगा/ छलाँग/ पहुँचा	कहाँ/ खड़ाऊँ	
निरनुनासिक		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	नहीं	नहीं	नहीं	५०
			हाँ	हाँ	हाँ	४७

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियों की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
	अनुसार	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	इंगुवा/ईंगुर/ रेंगना/ऐंठना/ हैं/घोंसला/हों/ औंधा/भौं नहीं	घुइंया/ दहेंडी/ खरोंच/ घरौंधा नहीं	परछाई/ वलें नहीं	५०
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्र	हाँ	हाँ	हाँ	४७
						कुल त्रुटियाँ = 94

अनुनासिक - नासिक्य

अनुनासिक ध्वनियों को भ्रम और भूलवश ये छात्र कभी-कभी नासिक्य ध्वनियों के रूप में भी सुनने की त्रुटियाँ करते हैं । उदाहरणार्थ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले ५० छात्रों में से ३६ छात्रों ने आँचल को आनचल, छलांग को छलान्ग, औंधा को औन्धा, घरौंदा को घरौन्दा के रूप में सुनने की त्रुटियाँ की । क्योंकि उन्होंने इसे सुनने के बाद पुनः त्रुटीपूर्ण उच्चारण किया । जबकि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों मे ५० में से ५० ने इन्हें सही सुना और सही उच्चरित भी किया । इसे इस सारणी में दर्शाया गया है । यथा:-

सारणी - २६

त्रुटियों की प्रवृत्ति	त्रुटियों के प्रकार	भाषिक प्राथमिकता	त्रुटियो की स्थिति			त्रुटियों की संख्या
			आदि	मध्य	अंत	
अनुनासिक-नासिक्य	चंद्रबिंदु	प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	आंचल	छलांग	X	५०
			औंधा	घरौंदा	X	
			नहीं	नहीं	X	
		तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र	हाँ	हाँ	X	36
					कुल त्रुटियाँ = 36	

वाक्य, गद्यांश, पद्यांश तथा अन्य भाषिक संरचना विशेष को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ

भाषा के चार प्रमुख कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) में से सुनना एक प्रमुख कौशल है । भाषा अध्ययन के क्रम मे सुनने का मतलब सिर्फ कुछ ध्वनियों को सुनना ही नहीं होता । बल्कि, सुनी हुई ध्वनियो पर सोच-समझकर अपना मंतव्य निर्धारित करके उसके अनुसार व्यवहार करने की प्रक्रिया मिलकर ही सुनने की प्रक्रिया को पूरी करती है । इस स्थिति में कुछ अक्षरो, शब्दो, शब्द युग्मो को ही सुनने की आवश्यकता नहीं होती । बल्कि विभिन्न तरह के वाक्यों, गद्यांशों, पद्यांशों तथा अन्य भाषिक संरचनाओ को भी व्यावहारिक जीवन में सुनना पड़ता है । इसलिए, सुनने में इससे संबंधित होनेवाली त्रुटियों की भी पहचान अध्ययन के लिए आवश्यक है । कन्नड़ भाषी छात्रों में

वाक्यों, गद्यांशों, पद्यांशों तथा अन्य भाषिक संरचनाओं को सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ निम्नलिखित हैं ।

वाक्य

कोई भी वाक्य निरर्थक नहीं होता । उसमें किसी न किसी प्रकार का संदेश, अर्थ और उद्देश्य छिपा होता है, जिसको सुनकर और समझकर श्रोता या अन्य कोई भी व्यक्ति लाभान्वित होता है । किसी भी भाषा को समझने के लिए उसके वाक्य की संरचनाओं का ज्ञान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है । खासकर द्वितीय, तृतीय या अन्य भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों को सुननेवाली भाषा की वाक्य संरचनाओं का ज्ञान रखना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है । वाक्यगत संरचनाओं के ज्ञान के अभाव में तथा अपनी मातृभाषा के प्रभाव के कारण कभी-कभी छात्र श्रवणीय भाषा को सुनने में त्रुटियाँ करते हैं । श्रवण कौशल परीक्षण के लिए तैयार किए गए रिकार्डेड मॉडल कैसेट द्वारा तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० कन्नड भाषी छात्रों को अध्येता ने निम्नलिखित वाक्यों को बारी-बारी से सुनाया । यथा –

गाय दूध देती है । हमने कई लड़के देखे । मेरे पिताजी किसान है । पके फल खाओ । वह अच्छी तरह नही देखता । मैने कुत्ते को देखा । शिक्षित होने से इज्जत होती है ।

उपर्युक्त वाक्यों को सुनाने के बाद पुनः उनसे इन वाक्यों को सुनाने का आग्रह किया गया । फलस्वरूप ५० में २७ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने सुनने में त्रुटियाँ की । क्योंकि उन्होंने निम्नलिखित ढ़ग से वाक्यों को उच्चरित किया ।

यथा:- गाय दूध देता है । मैंने कई लड़के देखा । मेरा पिताजी किसान है । फल पक्का खाओ । वह अच्छा तरह देखता नही । मैंने कुत्ता देखा । शिक्षितन्न होने से इज्जत होता है ।

जबकि ५० में से ५० प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने उपर्युक्त वाक्यों को सही तरह से सुना । इसलिए सही- सही उच्चरित किया ।

गद्यांश

गद्यांशों को सुनकर भी सही ढंग से समझने में ये छात्र त्रुटियाँ करते हैं, क्योंकि ५० में से ३८ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने कहानी, नाटक और निबंध के सरल अंशों को सुनने के बाद भी अध्येता द्वारा पूछे गए उनसे संबंधित सामान्य प्रश्नों का भी सही उत्तर देने में असमर्थ और असफल साबित हुए । उदाहरणार्थ - रिकार्डेड मॉडल कैसेट को सुनाकर उनसे निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूछा गया ।

शुक्राचार्य किस वंश के थे ? आत्रेय लोग किसका सहारा लेते थे ? वेन की निषाद संतान को ब्रह्मावर्त से दूर रहने के लिए किसने भेजा था ? महात्माजी ने हमारे लिए क्या किया ? उनकी मृत्यु कैसे हुई ? क्या महात्माजी विश्वशान्ति और विश्वबन्धुत्व का अपना सपना पूरा कर सके ? सौभाग्य, पराधीनता, प्रतिष्ठा, विश्वबन्धुत्व तथा मानवता का अर्थ बतावें ? मीर और मिर्जा के बीच तकरार किसलिए थी ? हार जीत किससे होती है ? मिर्जा मीर को मुहरा कहाँ रख देने के लिए कहता है ?

ऊपर दिए गए प्रश्नों का ५० में से ३८ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने त्रुटिपूर्ण उत्तर दिए । जबकि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों में ५० में से ३२ ने सही उत्तर दिए ।

पद्यांश

ये छात्र पद्यांशों को सुनने में भी त्रुटियाँ करते हैं । क्योंकि ५० में से ३६ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने रिकार्डेड कैसेट के पद्यांश में से पूछे गए तीन प्रश्नों का त्रुटिपूर्ण उत्तर दिए । उन्हें पद्यांश सुनाकर पूछा गया था कि इसमें कवि ने वीणा को दीन क्यों कहा है ? कवि कहाँ और किस परिस्थिति में गाने की बात कर रहा

है ? तथा वीणा में झंकार क्यों नहीं है ?

इन प्रश्नों को हिन्दी प्रथाम भाषा के रूप में पढ़नेवाले छात्रों में ५० में से ३८ ने सही उत्तर दिए ।

अन्य भाषिक संरचना

प्रयोग के बतौर अध्येता ने मौखिक रूप से सभी छात्रों से बातचीत भी की और उन बातचीत से संबंधित तथ्यों को छात्रों ने सही-सही सुना की नहीं, को जानने के लिए उन्हें भी उस बातचीत के संदर्भ में कुछ कहने के लिए आग्रह किया । मगर ५० में से ३६ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्र, अध्येता से हिन्दी में बातचीत करने में काफी हिचकिचाये तथा १४ ने जो बातचीत में हिस्सा लिया, वे अध्येता के बातचीत के संदर्भ से या तो पूरा हटकर बात किए या उन्होंने जो बातचीत की उसमें काफी त्रुटियाँ थी । इसके विपरीत प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों में अध्येता से संदर्भानुसार बातचीत करनेवाले छात्रों की संख्या ५० में से ४५ थी । मात्र ५ छात्रों ने अध्येता के संदर्भानुसार बातचीत करने में अनिच्छा जाहिर की या बातचीत करने में त्रुटियाँ की ।

पंचम अध्याय

* कन्नड़ भाषी छात्रों के हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों के कारण और उसके समाधान के लिए सुझाव ।

* आठवीं कक्षा के कन्नड़ भाषी छात्रों को हिन्दी पढ़ने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों के कारण ।

* कन्नड़ भाषी हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों में हिन्दी पढ़ने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों के समाधान के लिए सुझाव ।

पंचम अध्याय

कन्नड़ भाषी छात्रों के हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों के कारण और उसके समाधान के लिए सुझाव:-

प्रस्तुत अध्ययन के सर्वेक्षण और विवेचन से स्पष्ट है कि कन्नड़ भाषी आठवीं कक्षा के छात्र हिन्दी भाषा को तृतीय भाषा के रूप में लेकर जब हिन्दी सीखते हैं तो उन्हें इसको पढने और सुनने में कई स्तरों पर अनेक तरह की त्रुटियों का सामना करना पडता है । इसी के साथ यह भी ज्ञात हुआ कि कन्नड़ या अन्य भाषा-भाषी छात्र जो प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी सीखते हैं उन्हें तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी सीखनेवाले कन्नडभाषी छात्रों की अपेक्षा कम त्रुटियों का सामना करना पड़ता है ।

भारत में भाषिक प्रयोग में त्रुटियाँ करना आम बात है क्योंकि यह वैयक्तिक अभिरुचि, ज्ञान, साक्षरता, प्रतिभा और परिस्थितियों पर भी निर्भर करता है । एक अशिक्षित व्यक्ति को भी किसी भी भाषा को सही, शुद्ध और समुचित रूप में प्रयोग करते हुए देखा जा सकता है और इसके विपरीत कोई शिक्षित व्यक्ति भी अपने भाषिक प्रयोग में त्रुटियाँ करते हुए नजर आ सकते हैं । उदाहरणार्थ भारत के ऐतिहासिक और पर्यटन स्थलों पर बहुत ऐसे अशिक्षित व्यवसायी, कारीगर, कामगार और अन्य व्यक्ति देखने को मिल जाएँगे जो सुविधानुसार अपने कार्य-व्यापार और अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप लाभप्रद किसी भी भारतीय भाषा को बहुत ही शुद्ध, सही और समुचित रूप में प्रयोग करते है । इसके विपरीत शिक्षित समुदायों में से सरकारी और गैरसरकारी प्रतिष्ठानों से सम्बद्ध कई ऐसे व्यक्ति बहुत आसानी से मिल जाएंगे जो भाषिक प्रयोग में त्रुटियाँ करते हैं । ऐसी त्रुटियाँ सामान्यत: कई कारणों से होती है

जिसमें भूल, भ्रम और चूक का ही ज्यादा योगदान होता है । भाषा प्रयोग में त्रुटियों का होना स्वाभाविक घटना है । हाँ, हो सकता है कि व्यक्ति-विशेष की त्रुटियाँ बहुत ही महत्वपूर्ण न समझी जाए और क्षम्य मान लिया जाय । लेकिन, शिक्षण संस्थानों, शिक्षण प्रक्रियाओं, शिक्षण सामग्रियों, शिक्षण सिद्धांतों, व्यवहार और क्रियाकलापों में शिक्षकों तथा सीखनेवालों और विद्यार्थियों द्वारा त्रुटियाँ करना एवं उसे जारी रखना पूरी शिक्षण व्यवस्था को ही त्रुटिपूर्ण बना सकती है । जिससे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक सभी व्यवस्थाएँ ही त्रुटियों की शिकार हो सकती है। अतः शिक्षण से संबंधित त्रुटियों को जानकर उसे सुधारने की अनिवार्य आवश्यकता है। सामान्यतः जब किसी भी शिक्षा संस्था से संबद्ध विद्यार्थी भाषा शिक्षण के क्रम में त्रुटियाँ करते हैं तो उसे सामान्य समझ कर ध्यान नहीं दिया जाता है या कम दिया जाता है । ऐसा करना कदापि उचित नहीं कहा जा सकता क्योंकि भाषा सीखने के क्रम में सामान्य त्रुटियों को जार्ज (१९७२) ने भी भाषा का अवाँछनीय रूप कहा है । अवाँछनीय रूप से उनका तात्पर्य ऐसे रूपों से है जिसे पाठ्यक्रम निर्माता या शिक्षक पसंद नहीं करते ।

कोडर और रिचर्डस ने दक्षता (competence) औक क्रिया(performance) में भेद बताते हुए कहा है कि भाषिक क्रिया (language performance) की त्रुटियाँ अव्यवस्थित होती है क्योंकि ये मात्र भूले है जबकि भाषिकदक्षता की त्रुटियों से भाषा और अध्येता की दक्षता या कुशलता के बारे में जानकारी भी मिलती है इससे अध्येता की कुशलता की खामियो को दूर कर उसे बढाने का उपाय किया जा सकता है और भाषा प्रयोग की शुद्धता की धारा को मजबूत किया जा सकता है । हालांकि डुले और बर्ट (१९७४) तथा बर्ट और किपार्स्की ने त्रुटियों को गूफ(Goof) कहकर उसके सामान्यीकरण करने के पक्ष में है और सामान्य तौर पर इन त्रुटियों के लिए छात्रों या

अध्येताओं को दोषी कहना उचित नहीं मानते । डूले और बर्ट तो यहाँ तक कहते हैं कि बिना गूफिंग के कोई भी छात्र या अध्येता सीख ही नहीं सकता ।

क्लार्क (१९७५) का भी मानना है कि ये त्रुटियाँ अवाँछनीय रूप नही है, अतः इनके लिए छात्रों या अध्येताओं को दंडित नहीं किया जाना चाहिए । कुल मिलाकर त्रुटियों के बारे में पारंपरिक मान्यता है कि ये छात्रों या अध्येताओं के जड़ता और बुरे शिक्षण का परिणाम है । जो कुछ भी हो त्रुटियाँ भाषिक प्रयोग की धारा को तोड़ती है और भाषा के अंदर अव्यवस्था तथा अराजकता उत्पन्न करती है । इसलिए इन त्रुटियों को दूर करने का उपाय समुचित रूप में किया जाना समय की मांग है । खासकर प्रथम भाषा को सीखने में त्रुटियाँ कम होती है और अन्य या द्वितीय भाषा को सीखने में त्रुटियाँ प्रथम भाषा को सीखने में होनेवाली त्रुटियों से अधिक होती है ।

प्रस्तुत अध्ययन में भी यह तथ्य उभर कर सामने आया है । अन्य भाषा को सीखने के क्रम में त्रुटियाँ ज्यादातर गलत सीखने के कारण ही होती है । कुक (१९६९)) ने भी कहा है कि प्रथम भाषा सीखने के क्रम में होनेवाली त्रुटियों का अर्थ है कि सीखनेवाले ने वयस्क क्षमता प्राप्त नहीं की है जबकि दूसरी भाषा सीखने के क्रम में होनेवाली त्रुटियों का अर्थ है कि इन त्रुटियों को ही गलती से सीख लिया गया है । सामान्य तौर पर प्रथम भाषा से अध्येता या छात्र पूर्व से परिचित होते हैं और अधिकांशतः प्रथम भाषा के रूप में मातृभाषा को ही सीखने का प्रयास किया जाता है । फ्रीस और लाडो की मान्यता थी कि अध्येता अपनी भाषा और संस्कृति के रूप और अर्थ को विदेशी भाषा पर स्थानान्तरित करने की प्रवृति दिखाता है । अतः जाहिर सी बात है कि अन्य या तृतीय भाषा को सीखने के क्रम में अध्येता या छात्र अपनी मातृभाषा से प्रभावित होकर उसकी संरचनाओं के अनुकूल अन्य भाषा को भी पढ़े, लिखे, बोले और सुने । प्रस्तुत अध्ययन में भी कन्नड भाषी छात्रों द्वारा मातृभाषा के

प्रभाव स्वरूप अन्य भाषा के रूप में हिन्दी सीखने की प्रक्रिया के दरम्यान उसके पढ़ने और सुनने में त्रुटियाँ सामने आई है ।

आठवीं कक्षा के कन्नड़ भाषी छात्रों को हिन्दी पढ़ने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों के कारण :-

आठवींकक्षा के कन्नड़ भाषी छात्रों को हिन्दी पढ़ने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों के कारणों में मुख्य निम्नलिखित हैं :-

मातृभाषा का प्रभाव

कन्नड भाषी छात्रों की अपनी मातृभाषा कन्नड होने के कारण वे जब भी हिन्दी के स्वरों, व्यंजनों, अनुनासिकों से संबद्ध शब्द, वाक्य या गद्यांशों एवं पद्यांशों को पढ़ते-सुनते हैं तो उसके पढ़ने और सुनने में उनकी मातृभाषा की ध्वनियों, सुरों, लयों और अर्थों का प्रभाव पड़ जाता है जिससे हिन्दी की ध्वनियों को पढ़ने और सुनने में वे त्रुटियाँ करते हैं । उदाहरणार्थ हिन्दी में संयुक्त ध्वनियों, स्वरों या व्यंजनों की ध्वनियों को पढ़ने के रूप में आधी मात्रा का प्रयोग किया जाता है । जबकि कन्नड में सभी स्वरों और व्यंजनों का उच्चारण स्वतंत्र रूप में होता है । इसलिए वे अब को अबअ की तरह उच्चरित करते हैं और अब को हिन्दी ध्वनि व्यवस्था की तरह सही रूप में सुनाने पर भी कन्नड प्रभाव के कारण वे अबअ ही सुनते हैं ।

उसी तरह कन्नड में दो ए, ऍ और दो ओ, ऑ होते हैं तथा दोनों के उच्चारण में भेद होता है । इस तरह से एक, अकेली और कठोर एवं ओर को कन्नड भाषी छात्र पढ़ने और सुनने में त्रुटियाँ करते हैं । हिन्दी के क्ष, त्र, ज्ञ वर्ण कन्नड में नही होते, इसलिए इसमें भी पढ़ने-सुनने में वे त्रुटियाँ करते हैं । संयुक्ताक्षरों के लिए हिन्दी में जैसे क्रम, कृपा तथा पर्व जैसे शब्दों में प्रयुक्त ्र, ृ, र्व का प्रयोग होता है । कन्नड में स्वर रहित व्यंजन को बताने के लिए हलन्त का हिन्दी के तरह प्रयोग उसे लगाकर

तो करते हैं लेकिन अन्य ऊपरलिखित चिह्नों का प्रयोग नहीं करते हैं । फलस्वरूप इनसे बननेवाली और उच्चरित ध्वनियों को वे पढ़ने-सुनने में त्रुटियाँ करते हैं । कन्नड में व्व का प्रयोग होता है जो हिन्दी में नहीं होता । इसके कारण कभी-कभी छात्र उच्चारण और श्रवण संबंधी त्रुटियाँ करते हैं ।

कन्नड और हिन्दी में ध्वनि, शब्द, वाक्य और अन्य स्वरों में कुछ समानताएँ एवं विषमताएँ भी है जिसके कारण भी कन्नड भाषी छात्र त्रुटियाँ करते हैं । कन्नड उकार बहुला भाषा है। इसके उकार बहुलाभाषा होने के कारण हिन्दी में भी उकारता का प्रयोग करना कन्नड भाषी छात्रों की पढ़ने और सुनने में होनेवाली त्रुटियाँ का मुख्य कारण है । स्वरों में जहाँ हिन्दी में केवल ह्रस्व "ऋ" है कन्नड में उसके अलावा उसकी दीर्घ ध्वनि ೠ(ॠ) भी है । इसी तरह ए तथा ओ के ह्रस्व रूप ಎ(ए), (ओ) भी कन्नड में है । लृ-ॡ की दोनों ध्वनियाँ कन्नड में मिल जाएगी लेकिन हिन्दी में ये ध्वनियाँ नहीं है । श, ष तथा विसर्ग का प्रयोग कन्नड में नहीं मिलता । साथ ही चन्द्र बिंदु का भी कन्नड में प्रयोग नहीं होता । इसके अतिरिक्त अ हिन्दी में पदान्त में अनुच्चरित रहता है पर कन्नड में इसका पूर्ण उच्चारण होता है । ऐ और ओ का उच्चारण हिन्दी में अय और अव होता है लेकिन कन्नड में इसे सही ढंग से उच्चरित किया जाता है । कन्नड के अपने ध्वनिगत एवं भाषिक संरचनाओं के कारण कन्नड भाषी छात्र हिन्दी पढ़ने-सुनने में त्रुटियाँ करते है । फर्ग्यूसन, जार्ज, जेम्स, सेलिंकर, रिचर्डस तथा टेलर आदि भी मानते हैं कि द्वितीय भाषा सीखने में मातृभाषा के प्रभाव के कारण ही त्रुटियाँ होती है । अतः मातृभाषा का प्रभाव कन्नड भाषी छात्रों के हिन्दी पढ़ने और सुनने की त्रुटियों के कारणों में से महत्वपूर्ण कारण है ।

वातावरण और परिवेश की कमी

भाषिक कुशलता के लिए उसके अनुकूल वातावरण और परिवेश की भी

अनिवार्य आवश्यकता है । निश्चित वातावरण और परिवेश के अभाव में विशेष तौर पर शिक्षण संस्थान, शिक्षण सामग्री और शिक्षक द्वारा भी किसी भाषा को सीखने का साधन क्यों न प्राप्त हो तो भी वैयक्तिक प्रयोग, अभ्यास और संप्रेषण में समुचित कुशलता प्राप्त नहीं होती । क्योंकि भाषा प्रवीणता उसके व्यवहार, अभ्यास और संप्रेषणीयता पर निर्भर करती है । जिस किसी भाषा का जितना ही अधिक व्यवहार अपने दैनिक-जीवन में होगा उससे भाषिक संरचनाओं के तहत सही-सही पढ़ने-सुनने का उतना ही अभ्यास होगा । फलस्वरूप उसके भाषिक ज्ञान में वृद्धि होगी और व्यक्ति विशेष के संप्रेषणशक्ति में भी विकास होगा ।

कर्नाटक का मैसूर जिला जो भारत का धूर दक्षिणप्रदेश हैं । यहाँ कन्नड, तेलुगु, मलयालम और तमिल भाषा-भाषी जनसंख्या की बहुतायत है । उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी का भी प्रयोग यहाँ देखने को मिलेगा । मगर भारत में अंग्रेज़ी माध्यम के प्रति अभिभावकों, छात्रों और जनसमुदाय के आकर्षण और लगाव के परिणामस्वरूप मध्यवर्गीय आर्थिक स्थितिवाले लोग अपने घरों और पास-पड़ोस में भी अंग्रेज़ी का तथाकथित व्यवहार करते ज्यादा मिल जाएंगे । चूँकि कन्नड यहाँ की मुख्य भाषा है और सरकारी, गैर-सरकारी कार्यालयों, संस्थानों सहित अधिकांश सार्वजनिक जगहों पर इसका ही प्रयोग होता है । इसलिए इस जिले में पढनेवाले छात्रों को अन्य भाषा के रूप में अंग्रेज़ी या पड़ोसी राज्यों की भाषाओं के ज्ञान में तो प्रवीणता किसी न किसी हद तक आ सकती है । मगर हिन्दी का प्रयोग मात्र क्लासरूम, हिन्दी सिनेमा और हिन्दी गानों के साथ थोड़े-मोड़े व्यापारिक क्रियाकलापों तक ही सीमित है । अगर निश्चित तौर पर यहाँ पढनेवाले छात्रों को हिन्दी को वर्गाध्यापन के दरम्यान पढाया और सुनाया भी जाए तो उसका परिणाम सिर्फ उनके परीक्षाओं के परिणाम से सम्बद्ध होता है । वे जिन विधियों, तथ्यों और तौर-तरीकों को वर्गाध्यापन के अभ्यास

द्वारा सीखने की कोशिश करते है, पुनः अपने वर्ग से बाहर अपने घर, पास-पड़ोस और मित्रमंडली के बीच उसके प्रयोग का वातावरण और परिवेश नहीं पाते । अध्येता ने ५० कन्नड़ भाषी छात्रों से प्रश्नावली वितरित कर तथा साक्षात्कार के द्वारा उनके भाषिक वातावरण और परिवेश के बारे में सूचना इकट्ठा किया । जिसमें से लगभग ५० में से ५० कन्नड़ भाषी छात्रों को हिन्दी के प्रयोग और अभ्यास का स्वाभाविक वातावरण और परिवेश उपलब्ध नहीं था । थोड़ा-बहुत घर, पड़ोस, मित्रमंडली और सार्वजनिक जगहों पर खेल, शिक्षा और मनोरंजन के क्रियाकलापों के दौरान ही उन्हें हिन्दी के प्रयोग का वातावरण और परिवेश प्राप्त हुआ । इसीलिए उनके पढने और सुनने में ज्यादा त्रुटियाँ हुई । ठीक इसके विपरीच ५० वैसे छात्र जिनकी मातृभाषा हिन्दी या अन्य कोई भारतीय भाषा थी और जिन्होंने हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढना शुरु किया है उन्हें कन्नड भाषी छात्रों की अपेक्षा हिन्दी प्रयोग हेतु वातावरण और परिवेश ज्यादा उपलब्ध है। उनके घरों, पास-पडोस और मित्रमंडली के बीच हिन्दी भाषा के प्रयोग का वातावरण और परिवेश उपलब्ध है । वे वर्गाध्यापन के बाद शिक्षा, खेल, मनोरंजन जैसे कार्यों में अंग्रेजी और हिन्दी का ज्यादा प्रयोग करते पाए गए । अतः वातावरण और परिवेश के अभाव के कारण ही कन्नड भाषी छात्रों को पढने और सुनने में ज्यादा त्रुटियाँ हुई जो बिल्कुल ही स्वाभाविक है ।

हिन्दी भाषा की ध्वनि संरचनाओं की जानकारी की कमी

हालाकि हिन्दी और कन्नड में काफी समानताएँ हैं । दोनों भाषा जैसे उच्चरित होती है वैसे ही बोली भी जाती है । दोनों में विभिन्नताएँ भी है जिसे द्वितीय अध्याय में संक्षिप्त में बताया गया है । कन्नड भाषी छात्रों को अन्य भाषा के रूप मे हिन्दी को पढने और सुनने में जो त्रुटियाँ होती है, उसके लिए उनमें हिन्दी की ध्वनि संरचनाओं

की शुद्ध, सही और समुचित जानकारी का अभाव होना भी एक महत्वपूर्ण कारण है । सामान्य तौर पर भाषा शिक्षण का कार्य भारतीय विद्यालयों में विज्ञान शिक्षण से कम महत्वपूर्ण समझा जाता है । हमारे समाज की मानसिकता भी भाषा शिक्षण, भाषाशिक्षकों एवं भाषा के विद्यालयों के प्रति बहुत संकुचित है । विद्यालयों में भी भाषा शिक्षण के लिए आम तौर पर सप्ताह में कम घंटे का वितरण होता है और प्राय: अंतिम घंटे को भाषा शिक्षण के लिए निर्धारित कर दिया जाता है । भाषा प्रयोगशाला की व्यवस्था तो विद्यालयों में बिरले ही देखने को प्राप्त हो सकता है । सामान्यत: मानकर चला जाता है कि बारहखडी सीखने के बाद व्याकरणिक तथ्यों को जैसे-तैसे पढाकर साहित्यिक रचनाओं के सहारे अध्येता या विद्यार्थी प्रस्तावित भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लेंगे । भाषिक उच्चारणों को मात्र सैद्धांतिक तौर पर रटाकर या बताकर परीक्षा के दृष्टिकोण से प्रश्नोत्तर पढा दिया जाता है । भाषा में छात्र किसी क्लास में कितनी कुशलता हासिल की इसका निर्धारण उसके पढने, सुनने, लिखने-बोलने और समझने पर आधारित कुछ प्रश्नोत्तर के मापदड पर से कर लिया जाता है । जिससे किसी छात्र विशेष की कुशलता और अकुशलता पर समुचित ध्यान नहीं जा पाता । जब किसी भी भाषा शिक्षण के लिए ऐसी ही पद्धति से शिक्षण के विकास बिन्दुओं को निर्धारित करने का प्रयास जारी हो तो वहाँ पर द्वितीय, तृतीय और अन्य भाषा शिक्षण के प्रति क्या स्थिति हो सकती है, इसका अनुमान लगाया जा सकता है ।

खासकर अहिन्दी भाषी प्रांतों में जहाँ हिन्दी तृतीय या अन्य भाषा के रूप में पढाया जा रहा हो तो वहाँ हिन्दी शिक्षण के प्रति उदासीनता और भी अधिक देखने को मिल सकता है । प्रस्तुत अध्ययन के अध्येता ने मैसूर के विद्यालयों के प्रथम भाषा और तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले करीब सौ छात्रों के पढने और सुनने की कुशलता के परीक्षण तथा उनको पढानेवाले शिक्षकों से हुए वार्तालाप और उनके

अध्यापन तथा उनको वितरित किए गए प्रश्नावली के आधार पर पाया कि उनमें से अधिकांश की मातृभाषा कन्नड और हिन्दी है तथा हिन्दी बोलने, पढ़ने, लिखने और समझने के क्रम में उनपर भी कन्नड का प्रभाव स्पष्टतः दिखाई देता है । हिन्दी के भाषिक संरचनाओं की जानकारी की कमी छात्रों में उनके हिन्दी के प्रति अलगाव, अरुचि और दोषपूर्ण शिक्षण पद्धति तथा अकुशल शिक्षकों के कारण ही होती है । जिस तरह से वे हिन्दी के निश्चित स्वरों, व्यंजनों और अनुनासिकता का अप्रयोग या गलत प्रयोग करते हैं । यह अप्रयोग और गलत प्रयोग ही उनके भाषा ज्ञानार्जन की प्रक्रिया को प्रभावित करती है और परिणामस्वरूप उनको इसे पढ़ने और सुनने में त्रुटियाँ होती है ।

अतः हिन्दी की भाषिक संरचनाओं के ज्ञान की कमी को भी कन्नड भाषी छात्रों के हिन्दी के पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों का कारण माना जा सकता है । क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन के अध्येता ने प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों के सामाजिक, आर्थिक सरोकार तथा उसके रुचि और अभ्यास के तौर तरीकों को जानने की कोशिश की, जिसमें से ३६ छात्रों की रोचकता हिन्दी के प्रति अधिक थी । इसलिए वे इसे जानने के लिए क्लास रूम के अतिरिक्त घरों में भी अभ्यास करते थे और सामाजिक एवं आर्थिक सरोकार से भी कहीं न कहीं वे हिन्दी से जुड़े हुए थे । इसलिए उनमें त्रुटियाँ कम हुई ।

स्वाभाविक रुचि और लगाव का अभाव

प्रस्तुत अध्ययन के अध्येता ने मैसूर के चार विद्यालयों के पचास प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवालों और ५० तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवालों छात्रों के हिन्दी के प्रति स्वाभाविक रुचि और लगाव का पता लगाने के लिए नमूने के प्रश्नावली

पर आधारित निम्नलिखित प्रश्न पूछे :-

१. हिन्दी पढ़ने के बाद आपके विचारों में किन उद्देश्यों की पूर्ति होती है ?

२. हिन्दी पढ़ने में आपकी रुचि है ?

३. यदि हाँ तो इस रुचि का कारण क्या है ?

४. कक्षा के अन्य विषयों के साथ हिन्दी पढ़ने मे आप क्या अनुभव करते हैं ?

उपर्युक्त प्रश्नों के आलोक में ४० प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले विद्यार्थियों ने निम्नलिखित उत्तर दिए :-

प्रश्न (१) के जवाब में उन ४० विद्यार्थियों ने प्रश्नावली में दिए गए इन सभी उत्तरों पर सही का निशान लाए ।

उदाहरणार्थ -

लोगों के साथ हिन्दी में बातचीत कर सकते हैं

हिन्दी में पत्र व्यवहार कर सकते हैं

हिन्दी सीखकर हम हिन्दी प्रदेशों के साथ संपर्क स्थापित कर सकते है ।

हिन्दी सीखकर हममें राष्ट्रीय भावना उत्पन्न होगी ।

केन्द्रीय सेवाओं में जाने का अवसर मिलेगा ।

हिन्दी अध्यापक बन सकेंगे ।

हिन्दी प्रदेशों में जाकर पढ़ने में सुविधा होगी ।

हिन्दी से हमारे ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि होगी ।

हिन्दी साहित्य और संस्कृति का ज्ञान होगा ।

प्रश्न दो के जवाब में दिए गए विकल्पों में से ४० विद्यार्थियों ने हाँ, नहीं और कह नहीं सकता की जगह केवल 'हाँ' के आगे सही का निशान लगाए ।

प्रश्न तीन के लिए रुचि के कारणों में उन ४० छात्रों ने निम्नलिखित विकल्पों पर सही

का चिह्न लगाया ।

१. हिन्दी अखिल भारतीय संस्कृति की भाषा है ।

२. हिन्दी ज्ञान-विज्ञान की भाषा है

३. हिन्दी और कन्नड़ भाषा में संबंध है ।

४. बुद्धि के विकास के लिए हिन्दी आवश्यक है ।

५. हिन्दी कहानी पढने में आनंद आता है ।

६. हिन्दी नौकरी दिलाती है ।

७. हिन्दी एक सरल और मधुर भाषा है ।

५० में से १० प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने हिन्दी पढने में रुचि है की जगह 'नहीं' पर चिह्न लगायाऔर इसके प्रमुख कारणों में दिए गए सभी विकल्पों को चिन्हित कर दिया ।

प्रश्न ४ में प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले ४० छात्रों ने कक्षा के अन्य विषयों के साथ-साथ हिन्दी पढने में अपने अनुभव के बारे में दिए गए निम्नलिखित विकल्पों पर सही चिह्न लगाए ।

१. हिन्दी भी एक महत्वपूर्ण विषय है, इसे पढने में लाभ ही होता है ।

२. X

3. X

4. हिन्दी से दूसरे विषयों पर कोई पूरा प्रभाव नहीं पडता ।

५. अन्य भाषा पढने में हिन्दी से कुछ सहयोग मिलता है ।

६. हिन्दी से हमारे सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है ।

६. सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए अधिक से अधिक भाषाओं की जानकारी प्राय: लाभदायक होता है ।

८. राष्ट्रीयता और भावात्मक एकता के लिए हिन्दी भाषा का ज्ञान आवश्यक होना चाहिए ।

इसके ठीक विपरीत ५० में से ४७ कन्नड मातृभाषावाले छात्र जो हिन्दी को तृतीय भाषा के रूप में लेकर पढनेवाले छात्र थे, उन्होंने हिन्दी पढने के बाद आपके विचारों में किन उद्देश्यों की प्रति होती है वाले प्रश्न के लिए दिए हुए विकल्प वाले उत्तरों में से निम्नलिखित में सही का चिह्न लगाए । यथा:-

१. लोगों के साथ हिन्दी में बातचीत कर सकते हैं

२. हिन्दी में पत्र-व्यवहार कर सकते हैं

३. X

4. X

5. X

6. X

7. X

8. X

9. X

हिन्दी पढने में आपकी रुचि है वाले प्रश्न के उत्तर के लिए दिए गए विकल्पों में से ४ ने 'हाँ' पर ३६ ने 'नही' और १० ने 'कह नही सकता' पर सही के चिह्न लगाए । रुचि के प्रति 'नही' पर सही चिह्न लगानेवाले छात्रों ने इसका प्रमुख कारण क्या है के विकल्प वाले उत्तरों में से निम्नलिखित पर सही का चिह्न लगाए :-

1. x

2. x

3. x

4. x

5. हिन्दी कहानी पढने में आनंद आता है ।

6. x

7. x

कक्षा के अन्य विषयों के साथ साथ हिन्दी पढने में आप क्या अनुभव करते हैं प्रश्न के उत्तर में दिए गए विकल्पों में से ३६ ने निम्नलिखित पर सही के निशान लगाए ।

१. x

2. हिन्दी न होती तो दूसरे विषय अच्छी तरह पढ़े जा सकते ।

३. हिन्दी एक महत्वपूर्ण भाषा नहीं है, इसे पढ़ना समय बर्बाद करना है ।

४. x

5. x

6. x

7. x

8. x

ऊपर उधृत प्रश्नोत्तर से पता चलता है कि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों को हिन्दी पढने के प्रति रुचि और लगाव तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले कन्नड भाषी छात्रों की अपेक्षा अधिक है और तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले कन्नड भाषी छात्र हिन्दी शिक्षण के प्रति कम प्रतिबद्ध है । इसीलिए इसमें प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों की अपेक्षा हिन्दी को पढने और सुनने में ज्यादा त्रुटियाँ है । अतः कन्नड भाषी छात्रों के हिन्दी पढने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों के लिए उसके हिन्दी के प्रति रुचि और लगाव की कमी को भी महत्वपूर्ण कारण माना जा सकता है ।

ध्यान की एकाग्रता की कमी

वैसे किसी भी तरह के ज्ञान के लिए ध्यान की एकाग्रता की कमी नुकसानदेह होता है । क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति ध्यान की एकाग्रता से ही संभव है । ध्यान की एकाग्रता न होने से भूल, भ्रम, गलती, चूक और त्रुटियों के होने की ज्यादा संभावना होती है । ध्यान की एकाग्रता भी वैयक्तिक प्रयास, अभिरुचि, प्रतिभा और कर्मठता से संबद्ध होता है । किसी भी अध्येता या छात्र के लिए अध्ययन और ज्ञानार्जन की प्रक्रिया में ध्यान की एकाग्रता का होना अत्यंत आवश्यक है ।

भाषा शिक्षण भी वागेन्द्रियों की सजगता और उसके सही प्रयोग पर निर्भर करता है । थोड़े से भूल, भ्रम और अज्ञानवश अध्येता त्रुटियाँ कर सकते हैं । आठवीं कक्षा के कन्नड भाषी ५० छात्र, जिन्होंने हिन्दी तृतीय भाषा के रूप में पढना शुरु किया है, के हिन्दी पढने और सुनने की कुशलता के लिए उन्हे पढने हेतु तैयार किए गए शब्द-सूची-पत्र तथा सुनाने हेतु तैयार किए गए मॉडेल कैसेट को पढने और सुनने के लिए जब दिया गया तो उन्होंने प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों की अपेक्षा हिन्दी सामग्री को पढने में प्रत्येक छात्र २० से लेकर २५ मिनट तक का समय लगाया और अधिक त्रुटियाँ भी की । जबकि प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने प्रत्येक छात्र १० से १५ मिनट तक का समय लगाया और त्रुटियाँ भी कम की । तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने उक्त सामग्री को पढने मे बहुत व्यवधानों का सामना किया और लगातार उनके ध्यान मे भी अवरोध उपस्थित हुआ । जबकि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने बहुत ही कम व्यवधानों का सामना किया और लगातार उन्होंने सही, संतुलित तथा शुद्ध रूप में उच्चारणक्रम को जारी रखा । श्रवण कौशल परीक्षण के दरम्यान भी रिकार्डेड कैसेट को सुनने मे कन्नड भाषी छात्र, जो हिन्दी तृतीय भाषा के रूप मे पढ रहे थे, में सही, संतुलित और

समुचित ध्यानाकर्षण का अभाव रहा । इसलिए वे सुनने की बारंबारता की मांग भी करते पाये गए । जबकि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने रिकार्डेड कैसेट को सुनने में अपने ध्यान को सही, संतुलित और समुचित रूप में लगाया तथा पुनः-पुनः कैसेट सुनाने की मांग तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों की अपेक्षा कम की । दोनों के बीच में पाए गए त्रुटियों की कमी और अधिकता के आधार पर अध्येता ने यह पाया कि कन्नड भाषी छात्रों के हिन्दी पढ़ने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों के लिए ध्यान की एकाग्रता की कमी भी एक महत्वपूर्ण कारण है ।

सही और शुद्ध उच्चारण अभ्यास की कमी

भाषिक कुशलता के लिए भाषा शिक्षण के प्रारंभिक अवस्था से ही सही और शुद्ध उच्चारण के अभ्यास की आवश्यकता होती है । खासकर अन्यभाषा या तृतीय भाषा सीखने के क्रम में तो समुचित, सही और लगातार अभ्यास करने की अनिवार्य आवश्यकता है । सीखने के लिए निर्धारित भाषा के सिर्फ व्याकरणिक सिद्धांतों और कुछेक नियमों तथा प्रयोगों को जान लेने से भाषा प्रयोग में तो कुछ सफलता मिल सकती है । मगर भाषिक कुशलता प्राप्त नहीं हो सकती । परिणामस्वरूप उस भाषा के व्यवहार में त्रुटियों का होना अवश्यभावी ही है । मैसूर के आठवीं कक्षा के छात्रों के पढ़ने और सुनने की कुशलता के परीक्षण से प्राप्त परिणामों के आधार पर अध्येता को ज्ञात हुआ कि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी सीखनेवाले छात्रों की पठन और श्रवण की कुशलता तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी सीखनेवाले कन्नड भाषी छात्रों की अपेक्षा अधिक है । पढ़नेऔर सुनने में त्रुटियाँ करनेवाले छात्रों को जो प्रश्नावली वितरित किया गया, जिसमें शिक्षकों द्वारा वर्गाध्यापन के दौरान हिन्दी की ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों और अवतरणों के उच्चारण अभ्यास कराने का प्रश्न पूछा गया था । उसके जवाब में लगभग त्रुटियाँ करनेवाले छात्रों ने स्वीकार किया कि वे न केवल वर्गाध्यापन के

दौरान बल्कि स्वअध्ययन के दौरान भी हिन्दी पढने और सुनने का अभ्यास प्रायः नही किया करते । जबकि त्रुटियाँ नहीं करनेवाले छात्रों ने स्वीकार किया कि वे शिक्षकों द्वारा वर्गाध्यापन के दौरान सही और शुद्ध उच्चारण का नियमतः पूरी लगन से तो अभ्यास करते ही है, इसके अतिरिक्त भी अपने स्वअध्याय के दौरान वे सही और शुद्ध उच्चारण का बराबर अभ्यास करते हैं । सही और शुद्ध अभ्यास की प्रक्रिया भाषा प्रयोग की कुशलता को बढ़ाता है और इसके अभाव में कोई भी अध्येता या छात्र भाषिक त्रुटियाँ करने को बाध्य होते है तथा इन्हीं त्रुटियों को अपने आगे के भाषिक अध्ययन और प्रयोग मे जाने-अनजाने दुहराने को बाध्य होते हैं । खासकर अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा के अध्ययन में होनेवाली त्रुटियों के लिए यह सही और शुद्ध अभ्यास की कमी एक जिम्मेवार कारणों में से एक कारण है । अध्येता ने छात्रों एवं शिक्षकों को वितरित किए गए प्रश्नावली, मौखिक साक्षात्कार तथा वर्गाध्यापन निरीक्षण के कार्यों से पता लगाया कि सामान्यतः हिन्दी पढानेवाले इन छात्रों के शिक्षकों की मातृभाषा भी कन्नड थी और उनके पढने और सुनने की कुशलता में भी कुछ त्रुटियाँ देखने को मिली जो अध्यापन के द्वारा छात्रों की त्रुटियों के लिए भी जिम्मेवार हो जाता है । शुरू से हिन्दी भाषा के उच्चारण का शुद्ध और सही अभ्यास करने और कराने से भाषिक प्रयोग में कुशलता और शुद्धता को प्राप्त करना संभव है । छात्रों को दिए गए प्रश्नावली में सही और शुद्ध उच्चारण अभ्यास को जानने के लिए निम्नलिखित प्रश्नों को पूछा गया । यथा -

हिन्दी शिक्षक के द्वारा पाठ्यक्रम की रचनाओं को पढकर सुनाने और समझाने के बाद भी पढने और सुनने में समस्या होती है ? ५० में से ३१ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने 'हाँ', ७ ने 'नही' और १२ ने 'कह नही सकता' जवाब दिए ।

'आपको पाठ्यक्रम में दी गई रचनाओं को पढने और सुनने में समस्या होती है' के

जवाब में ५० में से ४२ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने 'हाँ' और ८ ने 'नहीं' कहा ।

आपके शिक्षक आपको शब्दों के शुद्ध उच्चारण का वर्ग में अभ्यास कराते हैं वाले प्रश्न के जवाब में ५० में से २६ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने 'नहीं', २० ने 'हाँ' और ४ ने कुछ नहीं कहा । इसके विपरीत प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवालों ने भी ५० में से ३७ ने हिन्दी शिक्षक के द्वारा पाठ्यक्रम की रचनाओं को पढकर सुनाने और समझाने के बाद पढने और सुनने में कोई समस्या नही होने की बात कही । ५० में से ४० ने पाठ्यक्रम में दी गई रचनाओं को पढने और सुनने में समस्या नहीं होने की बात को स्वीकारा । शिक्षक द्वारा शब्दों के शुद्ध उच्चारण का वर्ग में अभ्यास कराने की बात को हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढनेवाले ५० मे से २८ छात्रों ने 'नहीं' कहा । इसे अध्येता को ज्ञात हुआ कि हिन्दी शिक्षक वर्गाध्यापन के दरम्यान छात्रों को पढने और सुनने का शुद्ध और सही उच्चारण और श्रवण अभ्यास नही करा पाते । जिससे कन्नड भाषी छात्र जो अन्य या तृतीय भाषा के रूप मे हिन्दी पढते हैं उसके भाषिक कुशलता का ह्रास होता है और भाषिक प्रयोग में त्रुटियाँ होती है । इन्हे अभ्यास के लिए उचित वातावरण और परिवेश भी प्राप्त नही होता । जबकि हिन्दी प्रथम भाषा लेकर पढनेवाले छात्रों को शिक्षकों के वर्गाध्यापन के दौरान अभ्यास नहीं कराने के बावजूद भी अपने वातावरण और परिवेश से उनके उच्चारण की शुद्धता का अभ्यास स्वाभाविक रूप से होते रहता है । इसलिए वे पढने और सुनने में कन्नड भाषी छात्र, जो हिन्दी तृतीय या अन्य भाषा के रूप में पढते हैं, की अपेक्षा त्रुटियाँ कम करते हैं ।

हिन्दी भाषा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण

हिन्दी भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी और भारत में सबसे

अधिक जनसंख्या द्वारा अधिकाधिक जगहों में प्रयोग की जानेवाली और बोली जानेवाली भाषा है । राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों से इसे भारत के अंदर सभी राज्यों और भारत के बाहर विदेशों में भी किसी न किसी रूप में पढा और पढाया जाता है । लेकिन, आज दुर्भाग्य से भारत में अंग्रेज़ी को न केवल हिन्दी से बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं से भी श्रेष्ठ मानने का प्रचलन जारी है । अंग्रेज़ी के प्रयोग को लेकर कहीं भी शिकायत करने के पीछे कोई ठोस वजह नहीं है और ना ही भारतीय समाजिक सोच ही इस ओर कुछ करने की स्थिति में है । लेकिन, अंग्रेज़ी के अंधभक्ति की परंपरा में भारतीय राजभाषा और राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी हिन्दी के प्रति दुर्भावना रखना और व्यक्त करना तो बिल्कुल अनुचित है ।

हिन्दी के प्रति संकुचित दृष्टिकोण तो पूरे भारतवर्ष में सुविधाभोगी, आर्थिक रूप से अतिसंपन्न, पूँजीपति, अधिकारीवर्गों और व्यापारीवर्गों में भी देखा जा सकता है, जहाँ जाने-अनजाने वे हिन्दी को कम अहमियत देते हुए मिल सकते हैं । लेकिन, अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों में हिन्दी के प्रति जो संकुचित दृष्टिकोण है वह अज्ञानता, मजबूरी और जागरूकता की कमी की भावना के कारण है । अज्ञान और मजबूरीवश ही अहिन्दी भाषी समुदाय और समाज में हिन्दी के प्रति आकर्षण की कमी या उसके सम्मान की कमी की बात देखी जा सकती है । मात्र किसी भाषा से अलगाव होना या उसका सम्मान नहीं करना कोई बहुत बड़ी घटना नहीं है । मगर, जो भाषा भारत की राजभाषा हो और राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी हो, तो उसके प्रति सम्मान कम होना या उससेअलगाव होना सचमुच में बहुत बड़ी घटना है और इसे कदापि उचित नहीं माना जा सकता। राष्ट्रभाषा तो राष्ट्र के लिए अनिवार्य होता है, जिससे किसी राष्ट्र की राष्ट्रीयता, एकता, समानता, संप्रभुता और पूरी व्यवस्था ही संरक्षित हो सकती है । मगर, जाने-अनजाने या मजबूरीवश अगर कोई अपनी राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी भाषा

के लिए अपना गलत दृष्टिकोण बनाता है या उनके विकास और समृद्धि के लिए नही सोच पाता है तो ऐसे सोच को बदलने की जरूरत है । उदाहरण के लिए अपने वातावरण और परिवेश से प्राप्त मान्यताओं के प्रभाव, अज्ञानता और मज़बूरीवश ही अध्येता ने पाया कि ५० में से ३३ कन्नड़ भाषी छात्र जो हिन्दी तृतीय भाषा के रूप में पढ रहे थे, ने यह पूछे जाने पर कि हिन्दी पढ़ने के बाद आपके विचारों में किन उद्देश्यों की पूर्ति होती है के जवाब में निम्नलिखित विकल्पों पर सही का निशान लगाए :-

१. लोगों के साथ हिन्दी में बातचीत कर सकते हैं ।

२. हिन्दी में पत्र व्यवहार कर सकते हैं ।

३. हिन्दी सीखकर हम हिन्दी प्रदेशों के साथ संपर्क स्थापित कर सकते हैं ।

६. हिन्दी अध्यापक बन सकेंगे ।

७. हिन्दी प्रदेशों में जाकर पढने में सुविधा होगी ।

लेकिन हिन्दी प्रथम भाषा के रूप मे पढ़नेवाले छात्रों में से ५० में से ४८ छात्रों ने निम्नलिखित विकल्पों पर सही का निशान लगाए :-

४. हिन्दी सीखकर हममें राष्ट्रीय भावना उत्पन्न होगी ।

५. केन्द्रीय सेवाओं में जाने का अवसर मिलेगा ।

६. हिन्दी अध्यापक बन सकेंगे ।

८. हिन्दी से हमारे ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि होगी ।

९. हिन्दी साहित्य और संस्कृति का ज्ञान होगा ।

हिन्दी पढ़ने की रुचि को जानने के लिए पूछे गए प्रश्नों के जवाब में तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० छात्रों में से ३६ ने 'नहीं' कहा और १४ ने 'कह नहीं सकता' कहा । इसके विपरीत प्रथम भाषा के रूप में पढ़नेवाले छात्रों मे से ४९ ने 'हाँ'

कहा और १ ने 'नहीं' कहा ।

'नहीं' कहनेवाले तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने इसके प्रमुख कारण के लिए निम्नलिखित विकल्पों पर सही का निशान लगाए :-

१. रटना पढता है ।

२. पढने-लिखने से ज्ञान-विज्ञान की आवश्यकता पूर्ति नही होती ।

३. शब्दार्थ या व्याकरण के नियम याद नही कर पाते ।

४. हिन्दी की कोई उपयोगिता नहीं है ।

५. हिन्दी पढने के लिए किसी तरह का प्रोत्साहन नही मिलता ।

६. हिन्दी एक कठिन भाषा है ।

८. पाठ्य-पुस्तकें कठिन है ।

कक्षा के अन्य विषयों के साथ साथ हिन्दी पढने में आप क्या अनुभव करते है के जवाब में ५० में से ४६ तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने निम्नलिखित जवाब दिए ।

२. हिन्दी न होती तो दूसरे विषय अच्छी तरह पढे जा सकते हैं ।

३. हिन्दी एक महत्वपूर्ण भाषा नही है, इसे पढना समय बर्बाद करना है ।

ठीक इसके विपरीत प्रथम भाषा के रूप में पढनेवाले छात्रों ने निम्नलिखित जवाब दिए-

१ हिन्दी भी एक महत्वपूर्ण विषय है, इसे पढने में लाभ ही होता है ।

४ हिन्दी से दूसरे विषयों पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पडता ।

५. अन्य भाषा पढने में हिन्दी से कुछ सहयोग मिलता है ।

६ हिन्दी से हमारे सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है ।

७. सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए अधिक से अधिक भाषाओं की जानकारी प्राय. लाभदायक है ।

८. राष्ट्रीयता और भावात्मक एकता के लिए हिन्दी भाषा का ज्ञान आश्यक होना चाहिए ।

अतः उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले कन्नड भाषी छात्रों में हिन्दी के प्रति सही और समुचित दृष्टिकोण का अभाव है और यह अभाव उनकी अज्ञानता, अरुचि और जागरुकता की कमी की वजह से है । इसलिए वे हिन्दी पढने और सुनने में त्रुटियाँ भी अधिक करते पाये गये । ठीक इसके विपरीत प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों में तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों की अपेक्षा हिन्दी के प्रति जागरुकता अधिक पाया गया और उनकी रुचि भी हिन्दी को जानने और पढने-सुनने में अधिक थी । इसलिए हिन्दी का उनको ज्ञान भी ठीक-ठाक था और उन्होंने त्रुटियाँ भी कम की ।

अज्ञानता, भ्रम, भूल और चूक

त्रुटि विश्लेषण के क्रम में यह तथ्य उभरकर सामने आया कि किसी भी प्रकार की त्रुटियाँ अध्येता या छात्र सबंधित तथ्यों के सत्य को नही जानने की वजह से करते हैं और अगर सबंधित तथ्यों के सत्य से मिलता-जुलता सत्य भी उसके सामने हो तो वहाँ पर उनसे भ्रम हो सकता है । जिससे त्रुटियाँ हो जाती है । अज्ञानता और भ्रम अगर न भी हो तो संबंधित तथ्यों के सत्य को परिस्थिति वश वे भूल जाते है जो प्रायः संपर्क और अभ्यास की कमी के कारण होता है । और अगर जानने के बाद भी प्रतिभा संपन्न अध्येता या छात्र सबंधित तथ्यों के सभी सत्यों को आत्मसात करने के बाद भी कुछ सत्यों को प्रयोग के दरम्यान उपयोग करना छोड़ देते हैं, जिसे चूक कहा जाता है, वह त्रुटियों का कारण हो जाता है । त्रुटि विश्लेषण के लगभग विद्वानों की मान्यता है कि भ्रम, भूल और चूक से होनेवाली त्रुटियाँ वाँछनीय होती है । मगर सही, शुद्ध और समुचित ज्ञान के लिए किसी भी प्रकार की त्रुटियों को अवाँछनीय ही मानना

चाहिए । अध्ययन के दरम्यान अध्येता ने पाया कि ५० में से अधिकांश तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने हिन्दी पढ़ने और सुनने मे त्रुटियाँ की और प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों में अधिकांश ने त्रुटियाँ नहीं की । तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों में अज्ञानता, भ्रम, भूल और चूक की स्तिथि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों की अपेक्षा अधिक थी । अत: त्रुटियों के लिए अज्ञानता, भ्रम, भूल और चूक को भी प्रमुख कारण माना जाना चाहिए ।

कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी

विद्यालयी शिक्षा में कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है । शिक्षकों की कुशलता से भी छात्रों की कुशलता का विकास होता है । अगर किसी भी विद्यालय के किसी भी विषय के शिक्षक अपने अध्यापन कला में कुशल होंगे तो छात्रों के ऊपर उनका प्रभाव पड़ता है और छात्रों के अध्ययन पर भी प्रभाव पड़ता है । इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए भारत में शिक्षक-शिक्षा तथा शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों का कार्यक्रम जारी है । शिक्षक-शिक्षा के माध्यम से सबधित विषयों में कुशल शिक्षक तैयार किए जाने की योजना है । शिक्षक-शिक्षा में प्रशिक्षित शिक्षकों की कुशलता सामान्यत: अप्रशिक्षित शिक्षकों से अधिक और प्रभावपूर्ण होती है । अपवाद स्वरूप भी अप्रशिक्षित शिक्षक अधिक कुशल और प्रभावी हो सकते हैं । सही रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी से ही कहीं भी अध्ययन और अध्यापन के कार्यों में त्रुटियाँ होने की संभावना होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में मैसूर के विद्यालयों में हिन्दी पढ़ानेवाले शिक्षकों से बातचीत, प्रश्नावली और वर्गाध्यापन निरीक्षण द्वारा अध्येता ने यह पाया कि हिन्दी के समुचित ज्ञान और प्रभावपूर्ण एवं कुशल अध्यापन शैलियों की कमी उनमें भी थी । उनमें भी त्रुटियाँ पायी गयी । अध्यापकों के लिए वितरित प्रश्नावली और छात्रों के लिए वितरित

प्रश्नावली के जवाब में अध्यापकों ने भी हिन्दी से संबंधित कुछ प्रश्नों के उत्तर को देने में लापरवाही की एवं अरुचि और असमर्थता जतायी । छात्रों ने भी अपने शिक्षकों के द्वारा सही और शुद्ध रूप से उच्चारण विधियों को अध्यापन में प्रयोग नहीं करने की बात को स्वीकारा । इसे पता चला कि अगर कुशल और प्रशिक्षित हिन्दी शिक्षकों की संख्या इन कन्नड भाषी हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों के सामने अधिक हो तो किसी भी प्रकार की त्रुटियों के होने में कमी होना संभव है ।

सही शिक्षण पद्धति का अभाव

सही, कुशल और प्रशिक्षित शिक्षकों के होते हुए भी अगर छात्रों में संबंधित विषयों के व्यवहार और प्रयोग में त्रुटियाँ अधिक हो तो शायद सही शिक्षण पद्धति को भी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है । हिन्दी शिक्षण और पठन-पाठन का कार्य पूरे भारतवर्ष में ही समुचित रूप में संभव नहीं हो पा रहा है । इस स्थिति में अहिन्दी प्रांतों में अगर सही शिक्षण पद्धति का अभाव हो तो कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं है । अध्येता ने छात्रों से शिक्षण पद्धति से संबंधित तथ्यों को जानने के लिए निम्नलिखित सवाल किए -

१. कक्षा में आपके शिक्षक पाठ्यक्रम में दी गई रचनाओं को पढकर सुनाते और समझाते हैं ?

२. हिन्दी शिक्षक के द्वारा पाठ्यक्रम की रचनाओं को पढकर सुनाने और समझाने के बाद भी पढने और सुनने में समस्या होती है ?

३. आपके शिक्षक आपको शब्दों के शुद्ध उच्चारण का वर्ग में अभ्यास कराते है ?

पूरे १०० छात्रों में से ७८ छात्रों ने 'नहीं', १२ ने 'हाँ' और १२ ने कुछ जवाब ही नहीं दिया ।

इससे साबित होता है कि सही शिक्षण पद्धति के अभाव के कारण ही तृतीय भाषा के

रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों ने हिन्दी पढने-सुनने में त्रुटियाँ की । इसके साथ प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले कुछ छात्रों ने भी त्रुटियाँ की लेकिन उनकी संख्या तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों की अपेक्षा कम थी । क्योंकि प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों को उसके वातावरण और परिवेश से हिन्दी के प्रति रुचि, लगाव, आकर्षण तथा व्यवहार प्रयोग की कुशलता प्राप्त हुई होगी । इसलिए उनमें कम त्रुटियाँ हुई । त्रुटि विश्लेषणकर्ताओं और विद्वानों में से कोडर(१९७४) ने दोषपूर्ण शिक्षण को और शिक्षक छात्रों के बीच अच्छे संबंध के न होने को ही त्रुटि के लिए महत्वपूर्ण कारण बताया है । इसके अतिरिक्त डिपेक्ट्रो (१९७१) ने कमज़ोर स्मरण शक्ति को भी त्रुटियों के लिए जिम्मेवार ठहराया है । इसलिए सही शिक्षण पद्धति के अभाव को कन्नड भाषी हिन्दी पढनेवाले छात्रों की त्रुटियों के लिए जिम्मेवार कारणों में से एक कारण ठहराया जा सकता है।

कन्नड भाषी हिन्दी पढनेवाले छात्रों में हिन्दी पढने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों के समाधान के लिए सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए आठवीं कक्षा के कन्नड भाषी छात्रों की हिन्दी पढने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों के समाधान से संबंधित कुछ व्यावहारिक सुझाव देना उपयुक्त ही होगा । अतः यहाँ कुछ व्यावहारिक सुझाव दिए जा रहे हैं, जो निम्नलिखित है -

छात्रों के लिए

प्रथम, द्वितीय, तृतीय या अन्य भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले आठवीं कक्षा के खासकर कन्नड भाषी सभी छात्रों को हिन्दी पढने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों से बचने के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देने की आवश्यकता है-

१. हिन्दी के सभी वर्णों एवं चिन्हों की ध्वनियों का सही, शुद्ध और समुचित अभ्यास करना चाहिए । यह अभ्यास तब- तक करना चाहिए जब-तक कि सभी ध्वनियों के सही उच्चारण की आदत न पड़ जाए ।

२. उच्चारण सुधार का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए ।

३. सभी ध्वनियों के बीच के अंतर को समझना चाहिए ।

४. सभी स्वतंत्र ध्वनि को शब्दों, शब्द-युग्मों, वाक्यों, वाक्यांशों और रचनाओं में प्रयोग कर उच्चारण अभ्यास करना चाहिए ।

५.खासकर कन्नड भाषी छात्रों को ए, ऐ, ओ, औ और अनुस्वार तथा चँद्रबिंदु के उपयोग और प्रयोग पर ध्यान देना चाहिए ।

६.क्ष, त्र, ज्ञ और संध्यक्षरों के लिए हिन्दी में प्रयुक्त चिन्हों से संबंधित प्रयोग पर आधारित ध्वनियों पर ध्यान देना चाहिए ।

७. स्वरों-व्यंजनों एवं अनुनासिकता के मिश्रण से उच्चरित ध्वनियों की मात्रा, लय, सुर और तान पर भी ध्यान देना चाहिए ।

८. उच्चारण और श्रवण अभ्यास के लिए हिन्दी प्रयोग एव उपयोग के वातावरण और परिवेश के पास जाने की कोशिश करनी चाहिए या उचित वातावरण और परिवेश बनाने का प्रयास करना चाहिए ।

९. कन्नड भाषी छात्रों को अपनी मातृभाषा और हिन्दी के वर्णों के बीच पाये जानेवाली ध्वनिगत समानता को भी जानने की कोशिश करनी चाहिए ।

१०. सीखे जानेवाली भाषा हिन्दी के प्रति स्वाभाविक रुचि और लगाव बढ़ाने के लिए हिन्दी के मौखिक प्रयोग पर अधिक ध्यान देना चाहिए । इसके लिए हिन्दी वक्ताओं /वक्तव्यों, सिनेमा, गीतों, कहानियों और कविताओं आदि को अधिकाधिक पढ़ने और सुनने की कोशिश करनी चाहिए ।

११. पढ़ने और सुनने के दरम्यान ध्यान को ध्वनियों पर केन्द्रित करना चाहिए ।

१२. किसी कठिनाइयों, अशुद्धियों या त्रुटियों के कारणों के लिए उपयुक्त हिन्दी शिक्षकों और ज्ञाताओं से संपर्क करना चाहिए तथा उनके निर्देशानुसार प्रयोग या व्यवहार को सीखना चाहिए ।

१३. हिन्दी के जानकार व्यक्तियों और शिक्षकों से संपर्क कर अपने पढ़ने के मौन अभ्यास का परीक्षण करवाना चाहिए तथा सस्वर पाठ को संभवतः जानकार व्यक्ति या शिक्षक को सुनाना चाहिए । यदि सभव हो तो अपने सस्वर पाठ के रिकार्डेड अशों को पुनः सुनकर और जानकार व्यक्ति या शिक्षकों को सुनाकर अपने पठन एवं श्रवण कौशल की जाँच करनी चाहिए ।

१४. रेडियो, दूरदर्शन और अन्य श्रव्य माध्यमों से हिन्दी में उच्चरित ध्वनियों के सही उच्चारण को सुनना चाहिए तथा उसके अनुकूल अपने उच्चारण कौशल को बढाना चाहिए ।

शिक्षकों के लिए सुझाव

१ पढाने और सुनाने के क्रम में शिक्षकों को मानक और शुद्ध भाषा का प्रयोग करना चाहिए ।

२ छात्रों के पढने और सुनने में शुद्धता और अशुद्धता पर ध्यान देकर उसके समाधान हेतु समुचित प्रयास करना चाहिए ।

३ पढाने और सुनाने की प्रक्रिया द्वारा उन्हें छात्रों के चिंतन के विकास हेतु समुचित अभ्यास पर ध्यान देना चाहिए ।

४. पढाने और सुनाने के क्रम में उन्हें सही शिक्षण प्रविधियों का प्रयोग करना चाहिए ।

५. उन्हें सैद्धांतिक और प्रयोगात्मक दोनों विधियों से भाषा का ज्ञान छात्रों को कराना

चाहिए ।

६. यदि संभव हो तो अन्य भाषा या तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों को हिन्दी पढ़ाने और सुनाने के क्रम में कन्नड और हिन्दी के भाषिक संरचनाओं के तुलनात्मक प्रस्तुति पर ध्यान देना चाहिए ।

७. छात्रों में हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए किसी भी उपयोगी माध्यमों का सहारा लेना चाहिए एवं हिन्दी के प्रति स्वयं की भी रुचि को बढ़ाना चाहिए ।

८. पढ़ाने और सुनाने में प्रभावमयता, सरलता, सहजता, शुद्धता, सटीकता और आदर्श का प्रयोग करना चाहिए ।

९. छात्रों को हिन्दी पढ़ने और सुनने के लिए समुचित अभ्यास और प्रयोग हेतु समुचित वातावरण और परिवेश के बारे में जानकारी देना चाहिए ।

१०. हिन्दी की ध्वनि संरचनाओं की समुचित जानकारी रखना चाहिए और उन्हें छात्रों को भी बताना चाहिए ।

११. हिन्दी की उपयोगिता, महत्व और अनिवार्यता को समझना और छात्रों के इसके बारे में बताना उनका अहम दायित्व होता है । इसलिए उन्हें छात्रों के हिन्दी पढ़ने और सुनने में स्वाभाविक लगाव को उत्पन्न करने के लिए इसकी उपयोगिता और अनिवार्यता पर ध्यान देना चाहिए ।

१२. छात्रों को पढ़ाने और सुनाने के दरम्यान उनके ध्यान की एकाग्रता को कायम करने का प्रयास करना चाहिए ।

१३. छात्रों के अज्ञानता और भ्रम को दूर करने तथा उनसे होनेवाले भूल-चूक और गलतियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए ।

१४. नवाचार द्वारा अपने शिक्षण कुशलता को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए ।

१५. हमेशा सही शिक्षण पद्धति का प्रयोग करना चाहिए ।

पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए

१. पाठ्यक्रम निर्माताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि अन्य भाषा या तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ने-सुननेवाले छात्रों को आठवीं कक्षा तक व्याकरण और साहित्य के साथ प्रायोगिक सामग्रियों का विकास करे और संभवतः प्रायोगिक परीक्षा अलग से संचालित कराने के लिए सर्व सहमति बनाने का प्रयास करें ।

२. पाठ्यक्रम में सिर्फ महत्वपूर्ण रचनाकारों की रचनाओं को ही शामिल करने की सीमा से नहीं बंधकर बल्कि आवश्यकतानुसार छात्रों में पढ़ने और सुनने की समुचित कुशलता के लिए हिन्दी विद्वानों द्वारा समुचित रचना तैयार करवाकर उसे पाठ्यक्रम में डालना चाहिए ।

३. हिन्दी की सरलता, व्यावसायिकता, आवश्यकता, प्रासंगिकता और महत्वपूर्णता की जानकारी देनेवाली रचानाओं का पाठ्यक्रम में अधिक से अधिक समावेश करने का प्रयास करना चाहिए ।

४. पाठ्यक्रम बनाते समय छात्रों के सामाजिक, भाषिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक और शैक्षणिक वातावरण, परिवेश तथा परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए ।

५. पाठ्यक्रम की सरलता, सुबोधता, सहजता, शुद्धता, सटीकता, उपयोगिता और स्वाभाविक ग्राह्यता पर भी ध्यान देना चाहिए ।

६. हिन्दी में पढ़ने और सुनने में होनेवाली सभी तरह की त्रुटियों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम को तैयार करना चाहिए ताकि अध्ययनकर्ता हिन्दी पढ़ने-सुनने में त्रुटियों से बच सके ।

पाठ्य-पुस्तक तथा शिक्षण सामग्री निर्माताओं के लिए

१. पाठ्य-पुस्तक तथा शिक्षण सामग्री निर्माताओं को उच्चारण एवं श्रवण आधारित

शिक्षण सामग्री बनाना चाहिए ।

२. उन्हे पाठ्य-पुस्तकों एवं शिक्षण सामग्रियों में उच्चारण अभ्यास, श्रवण अभ्यास, वार्तालाप अभ्यास तथा कुशलता परीक्षण अभ्यासों के समावेश पर ध्यान देना चाहिए ।

३. उन्हें अध्यापक निर्देशिकाओं को बनाने में भी नवीनतम तकनीकों और नवाचारों पर ध्यान देना चाहिए ।

४. उन्हे विविध भाषाई प्रयोग की अनिवार्यता और कुशलता हेतु मार्ग निर्देशन का समावेश पाठ्य-पुस्तकों तथा शिक्षण सामग्रियों में करना चाहिए ।

५. उन्हें भाषाई त्रुटियों के सुधारात्मक तथ्यों का पाठ्य-पुस्तकों एवं शिक्षण सामग्रियों में वर्णन, विवेचन और निर्देशन करना चाहिए ।

शोधकर्ताओं के लिए

प्रस्तुत अध्ययन सीमित रूप में मैसूर के चार विद्यालयों के एक सौ छात्रों के उनके हिन्दी पढ़ने और सुनने की कुशलता में होनेवाली त्रुटियों की पहचान से संबंधित है । अत: किसी भी शोधकर्ता या अध्येता को इस संपूर्ण मैसूर, कर्नाटक या कन्नड भाषा-भाषी जनसंख्या के विस्तृत आधार फलक पर रखकर नवीन शोध करने का प्रयास करना चाहिए । इसके अतिरिक्त कन्नड भाषी छात्रों के हिन्दी लिखने और बोलने में होनेवाली त्रुटियों की पहचान पर भी कार्य करने का प्रयास करना चाहिए । चूँकि यह अध्ययन अल्पावधि शोध परियोजना के तहत स्वीकृत किया गया इसलिए इसे मात्र पॉयलट अध्ययन माना जाना चाहिए और इस विषय पर विस्तृत अध्ययन, अन्वेषण तथा शोध करने का प्रयास करना चाहिए ।

उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की शाखा क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,मैसूर द्वारा अल्पावधि शोध परियोजना के तहत स्वीकृत किए जाने के फलस्वरूप ही संभव हो पाया । इसमें मैसूर के चार विद्यालयों में आठवीं कक्षा में पढ़नेवाले एक सौ छात्रों के हिन्दी पढ़ने और सुनने की त्रुटियों के नमूनों से उनमें होनेवाली त्रुटियों के कारणों को ढूँढने की कोशिश है । सर्वेक्षण के लिए एक सौ छात्रों में से पचास छात्रों की मातृभाषा हिन्दी-कन्नड़ और अन्य भारतीय भाषाएँ थी, जो हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में पढ़ रहे थे ।

प्रस्तुत अध्ययन के अध्येता ने इन सभी छात्रों से व्यक्तिगत तौर पर समुचित ढंग से मैसूर विश्वविद्यालय के हिन्दी के प्रवक्ताओं के सहयोग और सहमति से स्वीकृत पठन कुशलता में होनेवाली त्रुटियों के परीक्षण के लिए उच्चारण परीक्षण तालिका और श्रवण कुशलता में होनेवाली त्रुटियों के पहचान के लिए श्रवण परीक्षण तालिका द्वारा उनसे हिन्दी पढ़ने और सुनने में होनेवाली त्रुटियों को पहचानने की कोशिश की है । विशेषकर श्रवण परीक्षण तालिका में उच्चारण परीक्षण तालिका में प्रयुक्त हुए शब्द-सूची पत्र का उपयोग कर छात्रों को सुनाने के लिए एक मॉडल रिकार्डेड कैसेट तैयार किया गया तथा कुछ शब्दों , वाक्यों, गद्यांशों एवं पद्यांश के आधार पर एक अन्य मॉडल रिकार्डेड कैसेट भी तैयार किया गया जिससे छात्रों के श्रवण कुशलता में होनेवाली त्रुटियों को पहचाना गया । उच्चारण एवं श्रवण परीक्षण के आधार पर उन छात्रों में होनोवाली त्रुटियों को वर्गीकृत कर अलग अलग सूची तैयार किया गया । परीक्षण के परिणामस्वरूप उन छात्रों में हिन्दी पढ़ने और सुनने में हिन्दी के स्वरों, व्यंजनों, अनुनासिकता से संबद्ध शब्दों, वाक्यों, गद्यांशों एवं

पद्यांश से संबंधित त्रुटियों की प्रवृति, उसके प्रकार, उसकी स्थिति और उसकी संख्याँ को भी यथासंभव दर्शाने का प्रयास किया गया । परिणामस्वरूप प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० छात्रों ने पढ़ने में ७७ त्रुटियाँ की । जबकि तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० छात्रों ने ९२० त्रुटियाँ की । इसी तरह प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले ५० छात्रों ने सुनने में ५७ त्रुटियाँ की और तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों ने सुनने में ६८७ त्रुटियाँ की । इन सभी प्रकार की त्रुटियों की स्थिति, प्रवृति और संख्याँ के लिए अध्येता ने ऊपर बताये गये उपकरणों के अतिरिक्त वितरित किए गए प्रश्नावलियों एवं छात्रों व हिन्दी शिक्षकों से मौखिक वार्तालाप से प्राप्त उत्तरों का भी सहारा लिया तथा इसी के आधार पर उनकी त्रुटियों के प्रमुख कारणों को जानने की कोशिश भी की । जिसमें से निम्नलिखित कारणों को महत्वपूर्ण कारण माना गया । मातृभाषा का प्रभाव, वातावरण और परिवेश की कमी, हिन्दी भाषा के ध्वनि संरचनाओं की जानकारी की कमी, स्वाभाविक रुचि और लगाव, ध्यान की एकाग्रता की कमी, सही और शुद्ध उच्चारण अभ्यास की कमी, हिन्दी भाषा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण, अज्ञानता, भ्रम, भूल और चूक, कुशल एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, सही शिक्षण पद्धति का अभाव । अध्येता ने इन त्रुटियों के निदान हेतु कुछ सुझाव भी देने की कोशिश की है । कुल मिलाकर इस अध्ययन से जाहिर होता है कि त्रुटियो की पहचान करना अध्ययन-अध्यापन के लिए अनिवार्य कार्य है और मैसूर के आठवीं कक्षा के कन्नड़ भाषी तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों में हिन्दी पढ़ने की त्रुटियाँ सुनने की त्रुटियों की अपेक्षा अधिक है । इसके साथ यह भी स्पष्ट होता है कि तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढनेवाले छात्रों में प्रथम भाषा के रूप मे हिन्दी पढ़नेवाले छात्रों की अपेक्षा हिन्दी पढ़ने और सुनने

में अधिक त्रुटियाँ होती है ।

अतः यह माना जा सकता है कि मैसूर के आठवीं कक्षा के कन्नड़ भाषी छात्रों में हिन्दी पढ़ने एवं सुनने की त्रुटियाँ है और इसके समाधान हेतु समुचित प्रयास करने की अनिवार्य आवश्यकता है । प्रस्तुत अध्ययन को एक पॉयलट अध्ययन माना जाना चाहिए और अगर कन्नड़ भाषी छात्रों में हिन्दी पढ़ने और सुनने की त्रुटियों के समाधान की प्रक्रिया के लिए मात्र संकेत देने में भी समर्थ और सक्षम हो पाये तो शायद इसी में इसकी सफलता है । यह हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन और प्रचार-प्रसार के मार्ग को प्रशस्त करे एवं उसे आगे बढ़ाये अध्येता की यही कामना है ।

परिशिष्ट

परिचय और प्रश्नावली

(छात्रों के लिए)

(१) छात्र/छात्राएँ

क. नाम :-

ख. उम्र :-

ग. मातृभाषा :-

घ. कक्षा -:

(२) विद्यालय

क. नाम :-

ख. पिता का नाम :-

ग. पिता का व्यवसाय :-

घ. माँ का व्यवसाय :-

ङ. विद्यालय में हिन्दी प्रथम भाषा/द्वितीय भाषा/
तृतीय भाषा है :-

च. इससे पहले आपने विद्यालय की अर्धवार्षिक/वार्षिक परीक्षा
में हिन्दी में कितना अंक प्राप्त किया है ?

छ. कक्षा में आपके शिक्षक पाठ्यक्रम में दी गई रचनाओं को
पढकर सुनाते और समझाते है ?

झ. हिन्दी शिक्षक के द्वारा पाठ्यक्रम की रचनाओं को पढकर
सुनाने और समझाने के बाद भी पढने और सुनने में समस्या
होती है ?

ञ आपको पाठ्यक्रम में दी गई रचनाओं को पढने और सुनने में समस्या होती है ?

त आपके शिक्षक आपको शब्दों के शुद्ध उच्चारण का वर्ग में अभ्यास कराते हैं ?

थ आप विद्यालय के भीतर घर और बाजार तथा अन्य स्थानों पर हिन्दी का व्यवहार करते है ?

द हिन्दी की पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो दूरदर्शन प्रोग्राम, सिनेमा तथा संगीत में हिन्दीवाले प्रोग्राम को देखते, सुनते और पढते हो ?

(३) यहाँ प्रश्नों के अनेक उत्तर दिए गये हैं । केवल सही उत्तर पर (सही) का निशान लगाइए ।

क हिन्दी पढने के बाद आपके विचारों मे किन उद्देश्यों की पूर्ति होती है ।

१ लोगो के साथ हिन्दी मे बात-चीत कर सकते है ( )

२ हिन्दी में पत्र व्यवहार कर सकते है । ( )

३ हिन्दी सीखकर हम हिन्दी प्रदेशो के साथ सम्पर्क स्थापित कर सकते है ।( )

४ हिन्दी सीखकर हममें राष्ट्रीय भावना उतपन्न होगी ( )

५ केन्द्रीय सेवाओं में जाने का अवसर मिलेगा ( )

६ हिन्दी अध्यापक बन सकेंगे ।( )

७ हिन्दी प्रदेशों में जाकर पढने में सुविधा झा होगी ।( )

८ हिन्दी से हमारे ज्ञान-विज्ञान में वृद्धि होगी । ( )

९ हिन्दी साहित्य और सस्कृति का ज्ञान होगा ।( )

१० अन्य .....

ख. हिन्दी पढ़ने में आपकी रुचि है ?

१. हाँ ( )

२. नहीं ( )

३. कह नहीं सकता ।( )

ग. यदि हाँ तो इस रुचि का प्रमुख कारण क्या है ?

१. हिन्दी अखिल भारतीय संस्कृति की भाषा है । ( )

२. हिन्दी ज्ञान-विज्ञान की भाषा है ।( )

३. हिन्दी और कन्नड़ भाषा में सम्बंध है । ( )

४. बुद्धि के विकास के लिए हिन्दी आवश्यक है । ( )

५. हिन्दी कहानी पढ़ने में आनंद आता है । ( )

६. हिन्दी नौकरी दिलाती है । ( )

७. हिन्दी एक सरल और मधुर भाषा है । ( )

८. अन्य .....

घ. यदि नहीं तो इसका प्रमुख कारण क्या है ?

१. रटना पढ़ता है । ( )

२. पढ़ने-लिखने से ज्ञान-विज्ञान की आवश्यकता की पूर्ति नही होती ।( )

३. शब्दार्थ या व्याकरण के नियम याद नहीं कर पाते । ( )

४. हिन्दी की कोई उपयोगिता नही है । ( )

५. हिन्दी पढ़ने के लिए किसी तरह का प्रोत्साहन नही मिलता ।( )

६. हिन्दी एक कठिन भाषा है । ( )

७. कोई कारण नही बता सकता । ( )

८. पाठ्य-पुस्तकें कठिन है । ( )

९. अन्य .....

च. कक्षा के अन्य विषयों के साथ-साथ हिन्दी पढ़ने में आप क्या अनुभव करते हैं?

१. हिन्दी भी एक महत्वपूर्ण विषय है, इसे पढ़ने में लाभ ही होता है ।( )

२. हिन्दी न होती तो दूसरे विषय अच्छी तरह पढ़े जा सकते हैं । ( )

३. हिन्दी एक महत्वपूर्ण भाषा नहीं है, इसे पढना समय बरबाद करना है ।( )

४. हिन्दी से दूसरे विषयों पर कोई बुरा प्रभाव नही पडता । ( )

५. अन्य भाषा पढ़ने में हिन्दी से कुछ सहयोग मिलता है ।( )

६. हिन्दी से हमारे सामान्य ज्ञान में वृद्धि होती है । ( )

७. सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए अधिक से अधिक भाषाओं की जानकारी प्राय: लाभदायक है । ( )

८. राष्ट्रीय और भावात्मक एकता के लिए हिन्दी भाषा का ज्ञान आवश्यक होना चाहिए । ( )

छ. आपके पडोस या मुहल्ले में कन्नड के अलावा अन्य किस भाषा के बोलनेवाले लोग रहते है ?

१. कन्नड ( )

२. हिन्दी ( )

३. अंग्रेज़ी ( )

४. तमिल ( )

५. तेलुगु ( )

६. मलयालम ( )

७. उर्दू ( )

८ अन्य ( )

ज. आप स्वयं अपनी मातृभाषा के अलावा और कौन-कौन सी भाषा जानते हैं ? उस भाषा से संबंधित विभिन्न योग्यताओं को बताइये ।

		समझ सकता हूँ	बोल सकता हूँ	पढ़ सकता हूँ
१.	कन्नड	( )	( )	( )
२.	हिन्दी	( )	( )	( )
३.	अंग्रेज़ी	( )	( )	( )
४.	तमिल	( )	( )	( )
५	तेलुगु	( )	( )	( )
६	मलयालम	( )	( )	( )
७.	उर्दू	( )	( )	( )
८	अन्य	( )	( )	( )

हस्ताक्षर

(पूरा नाम लिखो)

दिनांक:-

प्रश्नावली

(शिक्षकों के लिए)

परिचय

कृपया अपने और अपने विद्यालय के बारे में आवश्यक जानकारी देने के लिए संबंधित सूचना के आगे कोष्ठक में सही का निशान लगायें और खाली स्थानों में संबंधित सूचना लिखिए:-

1. अध्यापक

क. नाम:- (अगर नाम न लिखना चाहें तो न लिखें):

ख. पुरुष ( )

ग. स्त्री ( )

घ. आयु..... वर्ष

च. मातृभाषा

२. विद्यालय

क. नाम

ख. किस प्रकार का है ?

(१) हाई स्कूल

बालक ( ) बालिका ( ) सह-शिक्षा ( )

(२) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

बालक ( ) बालिका ( ) सह-शिक्षा ( )

(३) बहुद्देशीय माध्यमिक विद्यालय

बालक ( ) बालिका ( ) सह-शिक्षा ( )

ग. माध्यम क्या है ?

(१) कन्नड भाषा ( ) (२) अंग्रेज़ी ( )

(३) तमिल भाषा ( ) (४) तेलुगु भाषा ( )

(५) मलयालम ( ) (६) उर्दू ( )

(७) अन्य भाषा

घ. संचालक कौन है ?

(१) सरकार ( ) (२) निजी ( )

(३) सहायताप्राप्त ( ) (४) जिला परिषद ( )

(५) नगर पालिका ( ) (६) अन्य ( )

(3) (क) हिन्दी के कुछ स्वरों का उच्चारण कन्नड भाषा-भाषी छात्र ठीक से नहीं कर पाते । कन्नड भाषा-भाषी छात्र किन स्वरों के उच्चारण में त्रुटियाँ करते हैं ? कुछ उदाहरण दीजिए ।

स्वर:-

स्वर

अ	( ) १.	-------	--------	------	------
आ	( ) २.	-------	--------	------	------
इ	( ) ३.	-------	--------	------	------
ई	( ) ४.	-------	--------	------	------
उ	( ) ५.	-------	--------	------	------
ऊ	( ) ६.	-------	--------	------	------
ए	( ) ७.	-------	--------	------	------

ऐ ( ) ८. ------- -------- ------ ------

ओ ( ) ९. ------- ---------- ------

औ ( ) १०. ------- ---------- ------

(4) महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में कन्नड़ भाषा-भाषी छात्र कुछ त्रुटियाँ करते हैं । आपके अनुभव के अनुसार कहाँ -कहाँ ऐसी त्रुटियाँ होती है ? कुछ उदाहरण दीजिए ।

व्यंजन

ध्वनियाँ	उच्चारण	त्रुटियों के उदाहरण	
ख	क	-------	-------
घ		-------	-------
छ	च	-------	-------
झ		-------	-------
थ	त	-------	-------
ध		-------	-------
फ		-------	-------
भ		-------	-------
अन्य		-------	-------

(5) ट वर्ग के उच्चारण में कन्नड़ भाषा-भाषी छात्र कुछ त्रुटियाँ करते हैं । अपने अनुभव के आधार पर कुछ उदाहरण दीजिए ।

ध्वनियाँ	उच्चारण	त्रुटियों के उदाहरण	
ट		------	-----
ठ		------	-----
ड		------	-----

ढ ——— ———

ण ——— ———

(6) कन्नड भाषा -भाषी छात्र कुछ सघोष व्यंजनों के भी उच्चारण में त्रुटियाँ करते हैं । अपने अनुभव के आधार पर उदाहरण दीजिए ।

ध्वनियाँ	उच्चारण	त्रुटियों के उदाहरण	
ग		———	———
ज		———	———
द		———	———
व		———	———
अन्य		———	———

(7). हिन्दी को छोड़कर अन्य भाषाओं में अरब - फारसी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं की कुछ ध्वनियाँ नहीं है । इसलिए हिन्दी सीखने में यह समस्या है । आपके छात्रों को किन -किन ध्वनियों को सिखाने में आपको कठिनाई होती है ?

ध्वनियाँ	उच्चारण	त्रुटियों के उदाहरण	
क़		———	———
ख़		———	———
ग़		———	———
ज़		———	———
फ़		———	———
ड़		———	———
ढ़		———	———
आं		———	———
आ		———	———
अन्य		------	--------

उच्चारण परीक्षण-तालिका

एकल ध्वनियों का शब्दों के आदि, मध्य और अंत में परीक्षण

	स्वर ध्वनियाँ		
	आदि	मध्य	अन्त
अ	अब	बादल	रत्न
आ	आप	समान	अपना
इ	इनाम	कोहिमा	कवि
ई	ईशु	जमीन	धरती
उ	उसका	बहुत	दयालु
ऊ	ऊन	खजूर	लडाकू
ए	एक	अकेली	लड़के
ऐ	ऐसा	विषैला	बरवै
ओ	ओर	कठोर	देखो
औ	औरत	सरोता	चसोत
	अनुनासिक ध्वनियाँ		
	आदि	मध्य	अन्त
अँ	अँगीठी	महँगा	--
ऑ	ऑचल	छलाँग	कहाँ
इं	इंगुवा	धुइंया	--
ईं	ईंगुर	--	परछाईं
उँ	उँगली	पहुँच	--

ऊँ	ऊँघना	--	खड़ाऊँ
एँ	रेंगना	दहेंड़ी	चलें
ऐं	ऐंठना	--	हैं
ओं	घोंसला	खरोंच	हों
औं	औंधा	घरौंदा	भौं

व्यंजन ध्वनियाँ

	आदि	मध्य	अन्त
क	कमल	सकट	कटक
ख	खटमल	मुखड़ा	लाख
ग	गमला	मगल	पतग
घ	घतासी	सघन	बाघ
ङ	--	ककङ	भाङ
च	चमड़ा	बचपन	सच
छ	छल	बछड़ा	छाछ
ज	जलेबी	काजल	आज
झ	झगड़ा	झझट	समझ
ञ	--	चञ्चल	--
ट	टमाटर	मटर	खाट
ठ	ठठेरा	बैठना	ओठ
ड	डमरू	खण्डन	घमण्ड
ढ	ढक्कन	--	--
ण	--	प्रणय	प्राण

त	तबला	कातर	सात
थ	थकान	कथनी	साथ
द	दस	बादल	खाद
ध	धन	विधवा	मगध
न	नकल	मानव	मन
प	पतला	कपड़ा	पाप
फ	फसल	सफल	बरफ
ब	बगुला	सबल	करीब
भ	भवन	सांभर	लाभ
म	मगन	कमला	कलम
य	यश	कायर	समय
र	रस	बारह	घर
ल	लहर	कलम	बादल
व	वचन	अवसर	मानव
श	शक्कर	मशक	यश
ष	--	भूषण	पुरुष
स	सरल	असल	दस
ह	हल्दी	लहर	वाह
ड़	--	लड़का	पकड़
ढ़	--	चढ़ना	बाढ़

	संयुक्त वर्ण		
	आदि	मध्य	अन्त
क् + र	क्रम	विक्रम	शुक्र
व् + य	व्यस्त	अव्यय	कर्तव्य
ग् + ल	ग्लानि	--	--
ष् + प	--	--	बाष्प
त + य	त्यौहार	--	--
ष् + य	--	--	मनुष्य
ल् + म	--	--	जुल्म
स् + म	--	--	किस्म

उच्चारण परीक्षण

(शब्द-युग्मों तथा वाक्यों में)

ब/म

बात -- भात -- बाबी -- भाभी

बात कहो और भात पकाओ । वह कब गया जो अभी नही आया ।

द/ध

दान -- धान -- उदार -- उधार आदी -- आधी

कमीज धो दो । मेरेन बहुत उदार है । उसने मुझे उधार दिया । आधी ले लो और आधी रकम मुझे देदो ।

ग/घ

गात -- घात -- जगत -- जघन बाग -- बाघ

गात मेरा है, घात मत लगाओ । आगरा आओ किन्तु घाघरा मत जाओ । मेरे बाग मे एक बाघ है ।

ज/झ

जला -- झला सूजना -- सूझना साज -- साझ

लेंप जलाकर लाओ, मेरी ओर मत झुको । उसका पैर सूजता गया किन्तु उसे सूझता नही । तुम्हारे साज मे मै भी साझ हूँ ।

प/फ

पल - फल पीता - फीता कापी - काफी

एक पल रुको और फल खाओ । फीता दे दो और पानी पी लो । गप मत करो । यह गफ कपडा है ।

त/थ

तल - थल पोती - पोथी सात - साथ

उसका तान सुन्दर है । एक थान कपड़ा दो । माता का माथा गरम है । सात आदमी मेरे साथ आये ।

क/ख

कल - खल - बकरी - बखरी चक - चख

वह कल आया । वह खल नहीं है । बकरी आती है । बखरी में धान है ।

आम चख लो । सोने को कनक भी कहते हैं ।

च/छ

चल - छल मचली - मछली कच्चा - कच्छा

घर चलो, छल मत करो । बस में उसे मचली आ गई । नदी से मछली लाओ । सच बोलो। मुझे कुछ नहीं चाहिए ।

स/श

सब - शव साल - शाल कस - कश

एक दिन सबकी शव-यात्रा होगी । इस साल मेरेन की शादी होगी । कमर कस कर जाओ । सिगरेट का कश खींचो ।

त/ट

तन -टन रतना - रटना बात - बाट

तन पर कपड़े रखो । टन-टन की आवाज सुनो । रतना ने कहा कि हमें रटना नहीं चाहिए, अपना पाठ याद करना चाहिए । मेरी बात मानो, खट-खट मत करो ।

ढ/ड

ढर - डर उदार -निडर दंद - दंड

दस पैसे दो । डरो मत उदार बनो । निडर रहो । चंद मिनट की बात है । रुपये की गड्डी ले लो ।

थ/ठ

थन - ठन पथार -पठार साथ - साठ

गाय के थन से दूध निकालता है । रुपया ठन ठन करता है । धान का पथार उठा लो । पठार पर धान नहीं होता । मेरे साथ आठ आदमी हैं ।

घ/ढ

धर - ढर धाई - ढाई बुद्धि - बुड्ढी

चोरों का धरपकड हो रहा है । पानी के बर्तन से पानी ढरता है । धाई ने मुझे ढाई रुपये दिए । नारोला की बुद्धि अच्छी है । बुड्ढी औरत चली गई ।

र/ड

दौरा - बूढा ढाई - पढाई

मैं बुड्ढा हो गया । बूढा आदमी लाठी लेकर चलता है । मुझे ढाई रुपये दो । पढाई ठीक से करो ।

अ/आ

अब - आब कमल - कमाल कमल -कमला

अब आप मेरे घर कल आइए । सबको एक दिन काल खा जायेगा । कमाल ने एक कमल फूल देखा । कमला ने कहा कि उसे एक कमल फूल चाहिए ।

ए/ऐ

मेल - मैल एक - ऐक्य सबेरा - सवैया हे - है

मेल-मिलाप से रहिए । पानी में मैल है । सबेरा हो गया मुझे एक के बदले सवैया दो । हे भाई ! अचिला कहाँ है ?

ओ/औ

ओर - और खोल - खौल जो - जौ

मेरी ओर देखिए । मेरेन और तेमजेन आ रहे हैं । कमरा खोल दीजिए । पानी खौल रहा है । जो गये सो नहीं आये । जौ की रोटी खाओ ।

आए/आइए

आए - आइए खाए - खाइए खाएगा - खाइएगा

वह आए तो मै जाऊँगा । जब आप मेरे घर आइए तो कृपया अपनी कलम लेते आइए

अनुनासक/निरनुनासिक

सास - साँस वही - वहीं कहा - कहाँ

मेरी सास चल रही है । मेरी साँस चल रही है । वह वही आदमी है जो वही था । उसने कहा कि वह कही नही जाएगा ।

रिकार्डेड मॉडेल कैसेट श्रवण परीक्षण तालिका संख्या -१

अब,	बादल,	रत्न
आप,	समान,	अपना
इनाम,	कोहिमा,	कवि
ईशु,	जमीन,	धरती
उसका,	बहुत,	दयालु
ऊन,	खजूर,	लड़ाकू
एक,	अकेली,	लड़के
ऐसा,	विषैला,	बरवै
ओर,	कठोर,	देखो
औरत,	सरौता,	चसौत
अंगीठी,	महँगा	
आँचल,	छलाँग,	कहाँ
इगुवा,	धुइयां	
ईंगुर,	परछाईं	
उँगली,	पहुँच	
ऊँचना,	खडाऊँ	
रेंगना,	पहेडी,	चले
ऐंठना,	है	
घोंसला,	खरोंच,	हों
औंधा,	घरौंदा,	भौं
कमल,	सकट,	कंटक
खटमल,	मुखड़ा,	लाख
गमला,	मगल,	पतंग
घंटासी,	सघन,	बाध
कंकड़,	भाड़	
चमड़ा,	बचपन,	सच
छल,	बछड़ा,	छाछ
जलेबी,	काजल,	आज
झगड़ा,	झझट,	समझ

चञ्चल

टमाटर,	मटर,	खाट
ठठेरा,	बैठना,	आठ
डमरू,	खण्डन,	घमण्ड
ढक्कन		
प्रणय,	प्राण	
तबला,	कातर,	सात
थकान,	कथनी,	साथ
दस,	बादल,	खाद
धन,	विधवा,	मगध
नकल,	मानव,	मन
पतला,	कपड़ा,	पाप
फसल,	सफल,	बरफ
बगुला,	सबल,	करीब
भवन,	साभर,	लाभ
मगन,	कमला,	कलम
यश,	कायर,	समय
रस,	बारह,	घर
लहर,	कलम,	बादल
वचन,	अवसर,	मानव
शक्कर,	मशक,	पशं
भूषण,	पुरुष	
सरल,	असल,	दस
हल्दी,	लहर,	वाह
लड़का,	पकड़	
चढ़ना,	बाढ़	
क्रम,	विक्रम,	शुक्र
व्यस्त,	अव्यय,	कर्तव्य

ग्लानि

वाष्प

त्यौहार

मनुष्य

जुल्म

किस्म

बात कहो और भात पकाओ । वह कब गया जो अभी नही आया ।

कमीज धो दो । मेरन बहुत उदार है । उसने मुझे दे दो ।

गात मेरा है, घात मत लगाओ । आगरा आओ किन्तु घाघरा मत जाओ । मेरे बाग मे एक बाघ है ।

लैप जलाकर लाओ, मेरी ओर मत झुको । उसका पैर सूजता गया किन्तु उसे सूझता नही ।

तुम्हारे साज मे मैं भी साझ हूँ । एक पल रुको और फल खाओ । फीता दे दो और पानी पी लो । गप मत करो । यह गफ कपड़ा है ।

उसका तान सुन्दर है । एक थान कपड़ा दो । माता का माथा गरम है । सात आदमी मेरे साथ आये ।

वह कल आया । वह खल नही है । बकरी आती है ।

बखरी मे धान है । आम चख लो । सोने को कनक भी कहते हैं ।

घर चलो, छल मत करो । बस मे उसे मचली आ गई । नदी से मछली लाओ । सच बोलो । मुझे कुछ नही चाहिए ।

एक दिन सबकी शव यात्रा होगी । इस साल मेरन की शादी होगी । कमर कस कर जाओ । सिगरेट का कश खीचो ।

तन पर कपड़े रखो । टन-टन की आवाज सुनो ।

रतना ने कहा कि हमे रटना नही चाहिए, अपना पाठ याद करना चाहिए । मेरी बात मानो, खट-खट मत करो ।

दस पैसे दो । डरो मत, उदार बनो । निडर रहो ।

चंद मिनट की बात है । रुपये की गड्डी ले लो ।

गाय के थन से दूध निकालता है । रुपया ठन-ठन करता है । धान का पथार उठा लो । पठार पर धान नहीं होता । मेरे साथ आठ आदमी है ।

चोरो का धरपकड हो रहा है । पानी के बर्तन से पानी ढरता है । दाई ने मुझे ढाई रुपये दिए ।

नारोला की बुद्धि अच्छी है । बुड्ढी औरत चली गई ।

मैं बुड्ढा हो गया । बूढा आदमी लाठी लेकर चलता है । मुझे ढाई रुपये दो । पढाई ठीक से करो ।

अब आप मेरे घर कल आइए । सबको एक दिन काल खा जाएगा । कमाल ने एक

कमल फूल देखा । कमला ने कहा कि उसे एक कमल फूल चाहिए । मेल-मिलाप से रहिए । पानी में मैल है । सबेरा हो गया मुझे एक के बदले सवैया दो । हे भाई ! अचिला कहाँ है ?

मेरी ओर देखिए । मेरेन और तेमजेन आ रहे है । कमरा खोल दीजिए । पानी खौल रहा है । जो गये सो नही आए । जौ की रोटी खाओ ।
वह आए तो मै जाऊँगा । जब आप मेरे घर आइए तो कृपया अपनी कलम लेते आइए । मेरी सास चल रही है । मेरी साँस चल रही है । वह वही आदमी है जो वहीं था । उसने कहाकि वह कही नही जाएगा ।

रिकार्डेड मॉडल कैसेट श्रवण परीक्षण तालिका संख्या - 2

(शुक्राचार्य का प्रवेश)

शुक्राचार्य	:	लेकिन उसने आत्महत्या की नहीं, अत्रि !
गर्ग	:	शुक्राचार्य ! आप आ गये !
शुक्राचार्य	:	आ तो पहले ही गया था, पर कुछ देर आप दोनों की बात सुनता रहा !....
अत्रि	:	छिपकर सुनना भृगुवंशिओं की पूरानी आदत है ।
शुक्राचार्य और	:	मानता हूँ कि हम भृगुवंशी सावधानी का सहारा लेते हैं, आप आत्रेय लोग आवाज़ का !
गर्ग	:	उसने आत्महत्या नहीं की तो गयी कहाँ ?
शुकाचार्य	:	हिमालय में त्रिगर्त के उसी जंगल मे जहाँ अंग गये थे ! अंग ही ने उसे शरण दी । उसे और उसके गर्भ में वेन की सन्तान को !
गर्ग	:	वेन की दोगली सन्तान ! ...आर्यकुल के रक्त का दूषण ! यह आप क्या कह रहे हैं शुक्राचार्य ?
अत्रि	:	कोई सबूत ?
शुक्राचार्य	:	मैंने ही तो उसे वहाँ रातों-रात भेजा था ताकि वेन की निषाद सन्तान ब्रह्मावर्त से दूर ही रहे । ...पर आज सुना ।
गर्ग	:	क्या ?
शुक्राचार्य	:	कि हिमालय में त्रिगर्त से एक वीर योद्धा ब्रह्मावर्त में आया है ।
गर्ग	:	निषाद?
शुक्राचार्य का	:	नहीं, गोरे रंग का आर्य, लेकिन उसके साथ है काले रंग एक निषाद ।
अत्रि	:	किसने कहा यह आपसे ?
शुक्राचार्य	:	सूत और मगध ने ।
गर्ग	:	सूत, मगध और यहाँ ? सरस्वती-तट पर हमारे पीछे आश्रम की देखभाल छोड़कर यहाँ आ गये हैं ?
अत्रि	:	मैं पहले ही जानता था । सूत, मगध से स्तुतियाँ कराइए,

प्रश्न :- शुक्राचार्य किस वंश के थे ?

प्रश्न :- आत्रेय लोग किसका सहारा लेते हैं ?

प्रश्न :- वेन की निषाद संतान को ब्रह्मावर्त से दूर रहने के लिए किसने भेजा था ?

"हमारी धरती ने बापू को जन्म दिया । किन्तु इस धरती का यह सौभाग्य न हुआ कि जो महापुरुष देश की पराधीनता की बेड़ियाँ काटे और देश की प्रतिष्ठा को संसार में ऊँचा ले जाये, वह अपने द्वारा प्रतिष्ठापित स्वतन्त्र राष्ट्र में जीवित रहकर विश्वशांति और विश्वबन्धुत्व का अपना स्वप्न पूरा कर सके । महात्माजी को इससे अच्छी मृत्यु और क्या मिल सकती थी कि मानवता की रक्षा करते हुए उन्होंने अपने प्राण दिये ?"

इन प्रश्नों के उत्तर दें --

(क) महात्माजी ने हमारे लिए क्या किया ? (ख) उनकी मृत्यु कैसे हुई ?
(ग) क्या महात्माजी विश्वशान्ति और विश्वबन्धुत्व का अपना सपना पूरा कर सके ?
(घ) इन शब्दों के अर्थ बताईए ।

१. सौभाग्य	२. पराधीनता	३. प्रतिष्ठा
४. जीवित	५. विश्व बंधुत्व	६. मानवता

मीर साहब का फरजी पिटता था । बोले -- मैंने चाल चली ही कब थी ?

मिर्जा – आप चाल चल चुके हैं । मुहरा वहीं रख दीजिए -- उसी घर में ।

मीर – उसमें क्यों रखूँ ? हाथ से मुहरा छोड़ा कब था ?

मिर्जा – मुहरा आप कयामत तक न छोड़ें, तो क्या चाल ही न होगी ? फरजी पिटते देखा तो धाँधली करने लगे ।

मीर – धाँधली आप करते हैं । हार-जीत तकदीर से होती है । धाँधली करने से कोई नहीं जीतता ।

मिर्जा – तो इस बाजी में आपकी मात हो गयी ।

मीर -- मुझे क्यों मात होने लगी ?

मिर्जा -- तो आप मुहरा उसी घर में रख दीजिए जहाँ पहले रखा था ।

मीर -- वहाँ क्यों रखूँ ? नहीं रखता ।

मिर्जा -- क्यों न रखिएगा ? आपको रखना होगा ।

तकरार बढ़ने लगी । दोनों अपनी-अपनी टेक पर अड़े थे । न यह दबता ।

प्रश्न :- मीर और मिर्जा के बीच तकरार किसलिए थी ?

प्रश्न :- हार-जीत किससे होती है ?

प्रश्न :- मिर्जा मीर को मुहरा कहाँ रख देने के लिए कहता है ?

क्या गाऊँ ?

क्या गाऊँ ? -- माँ ! क्या गाऊँ ?
गूँज रही है जहाँ राग-रागिनियाँ
गाती हैं किन्नरियाँ -- कितनी परियाँ
कितनी पद्मदर्शी कामिनियाँ ।
वहाँ एक यह लेकर वीणा दीन,
तन्त्री क्षीण--नहीं कोई जिसमें झंकार नवीन,
रुद्ध कंठ का राग अधूरा कैसे तुझे सुनाऊँ ?
माँ ? -- क्या गाऊँ ?

प्रश्न :- इसमें कवि ने वीणा को दीन क्यों कहा है ?

प्रश्न :- कवि कहाँ और किस परिस्थिति में गाने की बात कर रहा है ?

प्रश्न :- वीणा मे झंकार क्यों नहीं है ?

अध्ययन के लिए चुने गए विद्यालयों की सूची

* प्रायोगिक बहुदेशीय विद्यालय (डी.एम.एस.) (क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान), मैसूर

* सेंट जॉसेफ हाई स्कूल, जयलक्ष्मीपुरम, मैसूर

* निर्मला हाई स्कूल, ओण्टीकोप्पल, मैसूर

* हार्डविक हाई स्कूल, रामस्वामी सर्कल, मैसूर

Regional ... LIBRARY ... Education